राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-४, अंक-६ लखनऊ मार्च २०१८ विक्रमी सं. २०७४-७५ युगाब्द ५११९-२० पृष्ठ-२८ निःशुल्क

प्रधानमंत्री मोदी ने रखी अबू धाबी-दुबई में मंदिर की आधारशिला

दुबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी अरब देशों की यात्रा के बीच दुबई के ओपेरा हाउस में हुए भारतवंशियों के एक कार्यक्रम में अबू धाबी के पहले हिंदू मंदिर की आधारशिला रखी. उन्होंने इसके मॉडल का लोकार्पण भी किया. इस मंदिर का निर्माण दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर व न्यूजर्सी में निर्माणाधीन मंदिर की तर्ज पर होगा. यह २०२० तक बनकर तैयार हो जायेगा.

मंदिर के लिए अबू धाबी के क्राउन प्रिंस मुहम्मद बिन जायेद अल नहयान ने अबूधाबी-दुबई हाईवे के पास मुफ्त जमीन दी है. पीएम मोदी ने इसके लिये उन्हें १२५ करोड़ भारतीयों की ओर से धन्यवाद दिया. बोचासनवासी श्रीअक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) इस मंदिर का निर्माण करायेगी.

विश्व में इस संस्था के ११०० से ज्यादा मंदिर हैं.

बीएपीएस के प्रवक्ता ने बताया कि यह मंदिर परंपरागत शिलाओं से बना मध्य-पूर्व का पहला मंदिर होगा. यह परंपरागत हिंदू मंदिर होने के साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक परिसर भी होगा.

इस भव्य मंदिर का निर्माण ५५ हजार वर्ग मीटर जमीन पर होगा. भारतीय मंदिरों के खास शिल्पी इसे आकार देंगे. इसके लिए पत्थरों को तराशने का काम यूएई में ही होगा. यह मंदिर सभी धर्मों के लोगों के लिए खुला रहेगा.

पीएम मोदी ने कहा कि यह मंदिर मानवता और समरसता के उत्प्रेरक की भूमिका निभाएगा और भारतीयता की पहचान बनेगा. यह मंदिर न केवल शिल्प की दृष्टि से अद्वितीय होगा, बल्कि विश्वभर के लोगों को 'वसुधैव कुटुंबकम' का संदेश देगा. प्रधानमंत्री मोदी ने अबूधाबी में भारतीय समुदाय को भी संबोधित किया. ■

प्रधानमंत्री मोदी का छात्रों को गुरुमंत्र : सफलता के लिए आत्मविश्वास जरूरी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में छात्रों को परीक्षा के तनाव से मुक्त होने के लिए गुरुमंत्र दिए। उन्होंने स्टेडियम में मौजूद छात्रों के अलावा टीवी के माध्यम से जुड़े छात्रों के सजीव सवालों के भी जवाब दिए। पीएम ने छात्रों को बताया कि कैसे परीक्षा के तनाव को दूर किया जाए, कैसे आत्मविश्वास बढ़ाएं, कैसे पढ़ाई पर एकाग्र हों। उन्होंने अभिभावकों को भी सलाह दी कि वे अपने अधूरे सपनों को अपने बच्चों पर न थोपें।

वैसे तो कार्यक्रम प्रधानमंत्री के छात्रों से मुखातिब होने का था, लेकिन नरेंद्र मोदी ने बड़ी ही चतुराई से २०१९ के चुनावों का भी बिना नाम लिए जिक्र कर लिया। उन्होंने कहा, 'यह कोई प्रधानमंत्री का कार्यक्रम नहीं है। देश के करोड़ों बच्चों का कार्यक्रम है। मुझे विश्वास है कि मुझे एक विद्यार्थी के नाते। आप लोग मेरे एग्जामिनर हैं। देखते हैं आप लोग मुझे १० में से कितना नंबर देते हैं।'

कुछ छात्रों के सवालों के जवाब में प्रधानमंत्री ने आत्मविश्वास की अहमियत को विस्तार से समझाया। प्रधानमंत्री ने कहा, 'मेहनत में कोई कमी नहीं होती। ईमानदारी से मेहनत की होती है..लेकिन आत्मविश्वास नहीं है, तो सारी मेहनत के बावजूद जवाब याद नहीं आता। मैं बचपन में विवेकानंद को पढ़ा करता था। वे

कहते थे 'अहं ब्रह्मास्मि' यानी मैं ही ब्रह्म हूं। वे आत्मविश्वास जगाने के लिए ऐसा कहते थे। वे कहते थे कि तुम ३३ करोड़ देवी-देवताओं की पूजा भले ही करो लेकिन अगर तुम्हारे अंदर आत्मविश्वास नहीं है तो देवी-देवता कुछ नहीं करेंगे।'

पीएम मोदी ने कहा, 'परीक्षा के दिन आप भगवान को याद करते हैं। आम तौर पर विद्यार्थी देवी सरस्वती की पूजा करते हैं, लेकिन परीक्षा से पहले हनुमानजी की पूजा करते हैं। जब मैं छोटा था तो इसका मजाक उड़ाता था कि हनुमानजी की पूजा इसलिए करते हैं कि परीक्षा के दौरान नकल करने पर वे न पकड़े जाएं।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'आत्मविश्वास कोई जड़ी-बूटी नहीं है। आत्मविश्वास लंबे भाषण सुनकर नहीं आता। हमें हर पल कसौटी पर कसने की आदत डालनी चाहिए। आत्मविश्वास हर कदम पर कोशिश करते-करते बढ़ता है। इसलिए हमेशा कोशिश करनी चाहिए। मैं जहां हूं उससे बेहतर करना है, यह भाव होना चाहिए।' ■

परमाणु मिसाइल अग्नि-२ का परीक्षण

बालेश्वर (ओडिशा) : भारत ने २० फरवरी को ओडिशा तट के अब्दुल कलाम द्वीप से परमाणु हथियार ले जाने की क्षमता से युक्त मध्यम दूरी तक मार करने वाली अग्नि-२ मिसाइल का सफल परीक्षण किया. यह मिसाइल २००० किलोमीटर तक मार करने में सक्षम है. इस मध्यम दूरी के मिसाइल की जद में पाकिस्तान और चीन दोनों हैं. रक्षा सूत्रों ने कहा कि एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) से सचल प्रक्षेपक से सुबह साढ़े आठ बजे सतह से सतह पर मार करने वाले इस प्रक्षेपास्त्र का प्रक्षेपण किया गया. लॉन्च कांप्लेक्स-४ से यह प्रक्षेपण किया गया. ■

प्रधानमंत्री मोदी की 'मन की बात' की रोचक बातें

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २५ फरवरी को देश से ४१वीं बार मन की बात की। पीएम ने इस बार भी स्वच्छता पर जोर देने के अलावा विकास से जुड़ी कई बातें कही। पीएम ने कार्यक्रम की शुरुआत में ही देश के कई महान वैज्ञानिकों का जिक्र किया। उन्होंने लोगों को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की बधाई दी।

इस बीच पीएम ने महिला दिवस (८ मार्च) का जिक्र किया और कहा कि नारी का समग्र विकास और उसका सशक्तिकरण ही न्यू इंडिया है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के लिए पीएम ने कहा कि आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी हम सब की जिम्मेदारी। स्वच्छता पर लोगों की ओर से उठाए जा रहे कदमों की तारीफ करते हुए पीएम ने झारखंड की उन १५ लाख महिलाओं का जिक्र किया जिन्होंने एक महीने तक स्वच्छता अभियान चलाया।

गोबरधन योजना के लिए पीएम ने कहा कि मवेशियों के गोबर से बायो गैस और जैविक खाद बनाई जाएगी। पीएम ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि कचरे और गोबर को आय का स्रोत बनाएं।

सेफ्टी के लिए पीएम ने कहा लोगों को अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना होगा, क्योंकि अपनी सुरक्षा ही समाज की सुरक्षा है। पीएम ने सुरक्षा को लेकर भी लोगों के सामने कई पहलू रखे। उन्होंने कहा कि प्रोंतिक आपदाओं से दुर्घटनाएं होती हैं, लेकिन ज्यादातर जिंदगी को खतरे में डालने के लिए लोग खुद जिम्मेदार होते हैं।

आपदा के लिए काम करने वाला एनडीएमए हमेशा प्राकृतिक आपदा से लड़ने के लिए तैयार रहता है। वह लोगों को आपदा से लड़ने के लिए ट्रेनिंग दे रहा है। पीएम ने कहा कि दिव्यांगों के जीवन को सुगम बनाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। ■

पाकिस्तान का नाम आतंकी फंडिंग करने वाले देशों की 'ग्रे लिस्ट' में शामिल

पेरिस। पाकिस्तान को बड़ा झटका देते हुए फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) ने उसे अंतरराष्ट्रीय आतंकी फंडिंग करने वाले देशों की निगरानी सूची (ग्रे लिस्ट) में शामिल करने का फैसला किया है। दुनिया भर में मनी लांड्रिंग की निगरानी करने वाले एफएटीएफ की बैठक में चीन, तुर्की और सऊदी अरब ने पाकिस्तान का बचाव करने की तमाम कोशिश की, लेकिन भारत और अमेरिका के सघन अभियान के सामने उनकी एक न चली। आखिर में चीन ने अपना विरोध वापस ले लिया। इससे पहले पाकिस्तान को २०१५ तक तीन साल के लिए इस सूची में रखा गया था। ■

सरकार ने दी सेना के लिए ७.४० लाख असॉल्ट राइफल खरीद को मंजूरी

नई दिल्ली। घाटी में लगातार बढ़ रही आतंकी घटनाओं के बीच सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। रक्षा मंत्रालय ने एक बड़े फैसले के तहत १५,६३५ करोड़ रुपए के पूंजीगत खरीद प्रस्तावों को मंजूरी दे दी है। इनमें सशस्त्र बलों की शक्ति को और मजबूत करने के लिए ७.४० लाख अस ल्ट राइफलों, ५,७१६ स्नाइपर राइफलों और लाइट मशीन गनों की खरीद शामिल है।

बता दें कि काफी समय से लंबित प्रस्तावों को रक्षा खरीद परिषद (डीएसी) की बैठक में मंजूरी दी गई। डीएसी रक्षा मंत्रालय की निर्णय लेने वाली शीर्ष इकाई है, जम्मू कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान के साथ बढ़ती दुश्मनी तथा लगभग चार हजार किलोमीटर लंबी भारत-चीन सीमा पर कई जगहों पर चीन की बढ़ती आक्रामकता के बीच इन खरीद प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है। ■

राज्यसभा की ५८ सीटों के लिए चुनाव मार्च में

नई दिल्ली। अप्रैल और मई महीने में खाली हो रहीं राज्यसभा की ५८ सीटों के लिए २३ मार्च को चुनाव होने वाले हैं. निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित चुनाव कार्यक्रम के अनुसार संसद के उच्च सदन की १६ राज्यों में खाली हो रहीं ५८ सीटों के लिए निर्वाचन प्रक्रिया पांच मार्च को प्रारम्भ हो जाएगी.

इन सीटों पर चुनाव के लिए २३ मार्च को मतदान कराया जाएगा और उसी दिन मतगणना भी होगी. उल्लेखनीय है कि १३ राज्यों से ५० राज्यसभा सदस्यों का कार्यकाल आगामी दो अप्रैल को, दो राज्यों (ओडिशा और राजस्थान) से छह राज्यसभा सदस्यों का कार्यकाल तीन अप्रैल और झारखंड से दो सदस्यों का कार्यकाल तीन मई को समाप्त हो रहा है.

इनमें उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक १० सदस्यों का कार्यकाल दो अप्रैल को खत्म हो रहा है. इसके अलावा महाराष्ट्र और बिहार से छह-छह, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल से पांच-पांच व गुजरात और कर्नाटक से चार-चार सदस्यों का कार्यकाल इसी दिन पूरा होगा. ■

कार्टून 'हाथ' का 'पाप' -- मनोज कुरील

सुभाषित

सकृज्जल्पन्ति राजानः सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः।
सकृत कन्या प्रदीयते त्रीण्येतानि सकृत्सकृत्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ– राजा एक बार ही बात कहते हैं, विद्वान् व्यक्ति भी एक बार ही कहता है। कन्या वर को एक बार ही प्रदान की जाती है। ये तीन कार्य बार-बार नहीं होते।

पद्यार्थ– राजा ज्ञानी बात को, कहें न बारम्बार।
कन्या भी वर को सुधी, देंय एक ही बार।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

आर्थिक अपराधों का महाजाल

देश के सरकारी बैंक एनपीए अर्थात् बिना आय वाले या खराब ऋणों की समस्या से लम्बे समय से जूझते रहे हैं और उनकी कमाई का एक बड़ा भाग उन ऋणों की भरपाई में जाता रहा है, जिसे प्रोवीजन कहा जाता है। लेकिन आजकल जो खुलासे हो रहे हैं वे अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण हैं। सरकारी बैंकों से व्यापार के नाम पर अरबों-खरबों की राशि पर्याप्त जमानत दिये बिना और उचित लिखा-पढ़ी किये बिना ले लेना और फिर उसको चुकाये बिना देश से बाहर भाग जाना एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिस पर लगाम लगाना अनिवार्य हो गया है। पहले विजय माल्या, फिर नीरव मोदी और मेहुल चौकसी अपने विरुद्ध जाँच होने की भनक लगते ही देश से बाहर चले गये।

यह कहना बेमानी है कि उन्होंने किस सरकार के कार्यकाल में ऋण लिया और किस सरकार के कार्यकाल में भागे। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी बैंक व्यवस्था में सब कुछ ऑनलाइन होने के बाद भी कोई गम्भीर कमी रह गयी है, जिसके कारण बैंकों में ऐसी धोखाधड़ी करना सम्भव हो जाता है। सबसे बड़ी कमी तो यह है कि हमारे बहुत से बैंक अधिकारी, जिनमें बाबुओं और छोटे अधिकारियों से लेकर बड़े-बड़े चेयरमैन और प्रबंध निदेशक स्तर तक के उच्च अधिकारी शामिल हैं, अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार नहीं हैं। चाहे राजनैतिक दबाव में या अनुचित धन पाने के लोभ में वे अरबों-खरबों के ऐसे ऋण स्वीकृत कर देते हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं है। ऐसी प्रवृत्ति से ही आर्थिक धोखाधड़ी को बल मिलता है, क्योंकि व्यापारी जानते हैं कि बैंक अधिकारियों कमीशन देकर कितना भी ऋण लिया जा सकता है, जिसको चुकाने की आवश्यकता नहीं है।

दूसरी बात यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि बैंकों में धोखाधड़ी रोकने के लिए ऑडिटरों और निरीक्षकों का एक पूरा तन्त्र होता है, लेकिन इन बड़े-बड़े घोटालों से स्पष्ट है कि या तो वह तन्त्र नाकारा है या उसके द्वारा दिये गये संकेतों को उच्च अधिकारियों द्वारा जानबूझकर उपेक्षित कर दिया जाता है। ये दोनों की बातें बहुत दुर्भाग्यपूर्ण हैं और किसी भी हालत में सहन नहीं की जा सकतीं।

इन आर्थिक अपराधों के लिए पिछली या वर्तमान सरकारों को कोसने से कोई लाभ नहीं। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन मामलों में पूरी छानबीन की जानी चाहिए और दोषी अधिकारियों और व्यापारियों को कठोर से कठोर दंड देना चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसे अपराधों पर अंकुश लग सके।

यह प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री मोदी ने आर्थिक अपराधियों को किसी भी कीमत पर न छोड़ने और उन्हें दंडित करने की प्रतिबद्धता दोहरायी है। इस प्रतिबद्धता पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि मोदी जी जो कहते हैं वही करते भी हैं, भले ही इसमें समय लग सकता है। यह उल्लेखनीय है कि मोदी जी की जागरूकता और कड़ाई से ऊपरी स्तर के भ्रष्टाचार पर प्रभावी रोक लगी है और अब वर्तमान सरकारों द्वारा किये गये किसी घोटाल के समाचार प्रायः नहीं आते। इससे पहले नित्य ही लाखों करोड़ के घोटालों के समाचार आते रहते थे।

आर्थिक अपराधियों को दंड तो दिया ही जाएगा और दिया जाना चाहिए, लेकिन इन घटनाओं ने सरकारी बैंकों की साख को जो हानि पहुँचायी है, उसकी भरपाई शीघ्र होना सम्भव नहीं है। इसके लिए बैंकरों को भी प्रतिबद्धता दिखानी होगी कि हम किसी भी हालत में आर्थिक अपराध न तो करेंगे और न किसी को करने देंगे। ■

आपके पत्र

सुन्दर पत्रिका में रचनाओं का अच्छा संकलन। सभी रचनाकारों को साधुवाद।
– गंगाराम

पत्रिका की जितनी तारीफ की जाए कम है. समसामयिक विषयों और समस्त विधाओं के समावेश से पत्रिका अनमोल हो गई है. **– लीला तिवानी**

जयविजय का फरवरी २०१८ साहित्य की लगभग सभी विधाओं को समृद्ध कर उत्कृष्ट रचनाओं को साहित्य जगत व पाठकों के समक्ष ला रहा है। यह प्रसन्नता का विषय है। शुभकामनाएं। **– शशांक मिश्र भारती**

हर बार की तरह अनोखा साहित्य सृजन लिए शानदार फरवरी अंक रहा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई! प्रधान सम्पादक को अनवरत साहित्य सृजन के लिए मेरी ओर से मंगल कामनाएँ! **– रमेश कुमार सिंह**

शानदार फरवरी के अंक के लिए हार्दिक बधाई, सभी रचनाकार मित्रों को भी बहुत-बहुत बधाई, **– जय कृष्ण चांडक**

फरवरी १८ के अति सुंदर, साहित्यिक व सुसज्जित अंक का अवलोकन कर मन मुग्ध हो गया। **– महातम मिश्र**

सभी रचनाएँ बहुत सुंदर हैं। रचनाकारों को हार्दिक बधाई। **– शुभा शुक्ला**

इस अंक में गंभीर लेख प्रकाशित हुए हैं। बहुत ही सुंदर अंक। **– मुकेश सिंह**

काफी अच्छी रचनाओं का संग्रह है यह अंक। शीघ्र ही अपनी मौलिक रचना भेजूगा। **– कार्तिकेय त्रिपाठी**

यह अंक बहुत सुन्दर और सहेज कर रखा जाने वाला है। **–राजेश सिन्हा**

रचना प्रकाशन हेतु आभार। **-- शिप्रा खरे, आकांक्षा पांडेय, आशीष कुमार त्रिवेदी, रवि रश्मि अनुभूति, जय प्रकाश भाटिया, प्रीती श्रीवास्तव, भारत दोषी**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! – सम्पादक)

होली में सावधानियाँ

शशांक मिश्र भारती

शरद ऋतु समाप्त हुई, वसंत ऋतु आ गई। यानी कि अब होली आ गयी। चारों ओर का वातावरण सा बन गया कि त्यौहार आया है गले मिलेंगे, पुराने वैर-भाव भुलाएंगे, भाईचारा बनायेंगे तथा सभी के प्रति समान व्यवहार करेंगे।

किन्तु जब होली गलत तरीकों से खेली या मनाई जाती है, मानव समाज की जगह बन्दर छाप कपड़ा फाड़ना जब आरम्भ हो जाता है, अवसरवादी अवसर पाकर दूसरों के घरों में जूते-चप्पल और रंगों से सराबोर कापड़े फाड़कर फेंकने लगते हैं, तो लोगों को कष्ट होता है। परेशानियाँ बढ़ जाती हैं, लड़ाई-झगड़े का माहौल बन जाता है इससे दूसरे त्यौहार भी प्रभावित होते हैं। विभिन्न समुदायों में अपने-अपने पर्वों को लेकर अनावश्यक प्रतिस्पर्धा पैदा होती है प्रशासन का भी काम बढ़ जाता है और कहीं-कहीं झगड़े हो भी जाते हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि होली खेलें लेकिन ऐसे नहीं कि दूसरों को परेशानी हो।

रंग डालें पर ऐसा नहीं जो त्वचा पर बुरा प्रभाव डाले। गन्दे पानी, कीचड़, काले तेल, गोबर आदि को किसी के ऊपर न डालें जिससे रोग पैदा हों। नाचो, गाओ, चैन हर्षोल्लास से होली मनाओ, किन्तु गन्दी हरकतें न करो और न ही किसी को अपशब्द कहो। मिट्टी के तेल में मिले रंग किसी के ऊपर न डालें। इससे शरीर को नुकसान पहुंचता है। ऐसे लोगों को होली खेलने के लिए विवश न करें जो बीमार या अन्य किसी कारण से होली खेलने में असमर्थ हों। रेल, बसों या अन्य वाहनों से यात्रा करने वालों पर रंग न डालें। पता नहीं कौन किस परिस्थिति में कहां जा रहा हो। उसकी क्या आवश्यकता अथवा विवशता हो।

कहीं-कहीं पर काला तेल, कैमिकल और गोबर गुब्बारों में भर-भरकर आने जाने वालों और रेल बसों पर फेंकते हैं, जोकि बहुत गलत है। इससे कई बार लोगों की

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हिन्दी अखबारों की भ्रष्ट भाषा

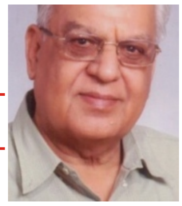

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

सुविख्यात वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने हिन्दी अखबारों में भ्रष्ट भाषा का जो मुद्दा उठाया है वह प्रासंगिक और सटीक है। इसमें दो राय नहीं कि पिछले कई सालों से हिन्दी की अखबारों में भ्रष्ट भाषा का प्रयोग हो रहा है। कई बार हिन्दी की व्याकरणिक संरचना गलत होती है और अब तो उसमें अंग्रेजी शब्दों की भरमार होती है। ऐसा लगता नहीं कि वह हिन्दी है, बल्कि हिंगलिश होती है। वास्तव में हर वर्ग के लोग अखबार पढ़ते हैं। सामान्य पढ़े-लिखे या अशिक्षित मजदूर, किसान, दुकानदार, ड्राइवर आदि से लेकर पढे-लिखे और उच्च-शिक्षित वर्ग सभी इसे पढ़ते और सुनते हैं। इसलिए अखबारों की भाषा के पाठकों की बौद्धिक क्षमता के अनुकूल होने की अपेक्षा रहती है। यह अगर सरल, सर्वग्राह्य, सर्वजन सुलभ एवं सुबोध, प्रयोगधर्मी और लचीली होती है, तो वह एक विशिष्ट रूप लेती है। इसमें प्रचलित शब्दों का विकास स्वयं होता है अथवा ये शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं जो जन-सामान्य की समझ में आ जाते हैं।

अखबारों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, क्रीड़ा, सिनेमा, धारावाहिक आदि सभी विषयों पर समाचार और रिपोर्टिंग होती है। इन्हीं विषयों के अनुरूप संवाददाता भाषा के विविध रूपों का प्रयोग करता है। भाषा के ये रूप न तो वैज्ञानिक होते हैं, न मेडिकल या तकनीकी होते हैं और न ही साहित्यिक होते हैं और न ही आम भाषा होती है। यह भाषा इन सभी के बीच की होती है जो सभी वर्गों के पाठकों के लिए संप्रेषणीय होती है। इस भाषा का प्रभाव-क्षेत्र व्यापक है, इसलिए लोक-व्यवहार में जिस भाषा का प्रयोग होता है उसीका प्रयोग इसमें करने का प्रयास रहता है। इसके वाक्य-विन्यास में व्याकरणिक शुद्धता और मानकता की अपेक्षा रहती है ताकि पाठक को भी भाषा के सही प्रयोग की जानकारी मिल सके। आज कल अखबारों में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें भाषा के भ्रष्ट रूप मिलते हैं। व्याकरणिक अशुद्धता के अतिरिक्त अंग्रेजी के शब्दों का अधिक प्रयोग होने लगा है। मैंने स्वयं संगोष्ठियों, सम्मेलनों और अपने व्याख्यानों और लेखों में कई बार इस बारे में चर्चा की है।

यहाँ नवभारत टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक जागरण जैसे अखबारों की भाषा के कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं-

१. लाइफ इंशोरेंस फर्मों की लिस्टिंग चाहता है रेगुलेटर।
२. बिना हाल मार्किंग के नहीं बिकेगी गोल्ड ज्वेलरी।
३. रीडेवेलपमेंट में एनसीआर के २० रेलवे स्टेशन।
४. एक तुर्किस्तान देश के एक शहर में।
५. फिल्म का बेसिक थॉट यह है कि जिस इंडियन हाई कमिश्नर का किडनैप हो जाता है, वह फिजी के रिच आदमी राम कपूर का दोस्त है, इसलिए राम कपूर इन दोनों की वहाँ हेल्प करता है।
६. फिर लगने शुरू हुए तेज भागते पानी के मीटर।
७. कश्मीर में तैनात जो जवानों का विवरण मिला।

यह बानगी है जिसमें हिन्दी का भ्रष्ट रूप स्पष्ट दिखाई देता है। कहीं हिन्दी नहीं हिंगलिश दिखाई देती है तो कहीं संरचनात्मक अशुद्धि नजर आती है। मैंने इन वाक्यों के सामने अखबारों के नाम जान-बूझकर नहीं लिखे, किंतु उनके प्रमाण मेरे पास हैं। मैंने लगभग एक हजार वाक्य इकट्ठे कर रखे हैं जो मेरी पुस्तकों में उल्लिखित हैं। नवभारत टाइम्स जैसे कुछ अखबारों ने तो हिन्दी के स्वरूप को बिगाड़ने का जैसे बीड़ा उठा रखा है। इससे भाषा का विकास नहीं हो पाता, जो देश और भाषा-भाषी समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकता है और विदेशी भाषाओं को पनपने का मौका मिलता है।

भाषा के शुद्ध स्वरूप और उसके मानक रूप को बनाए रखने और विकसित करने की जिम्मेदारी मुद्रित और इलेक्ट्रोनिक जनसंचार, विशेषकर अखबारों की भी है। वास्तव में जनसंचार और पत्रकारिता के शिक्षण-प्रशिक्षण में भाषा को महत्व नहीं दिया जाता। मैंने लगभग सभी विश्वविद्यालयों या जनसंचार संस्थानों में चल रहे पाठ्यक्रमों को देखा है जिनमें हिन्दी भाषा की व्याकरणिक संरचना, हिन्दी के विविध प्रयोग, हिन्दी के प्रयोजनमूलक पक्षों, मानक देवनागरी लिपि आदि के शिक्षण के लिए एक भी प्रश्नपत्र नहीं है। ऐसा समझा जाता है कि प्रशिक्षार्थी पहले से ही हिन्दी की शिक्षा ले

(शेष पृष्ठ १२ पर)

रोमन लिबास में कराहने को मजबूर हमारी हिन्दी

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

कभी सहिष्णुता को अपना मुद्दा बनाने वाले हमारे तथाकथित हिन्दी सिने कलाकारों ने आज भारतीय हिन्दी सेवियों को उनकी सहनशीलता की सीमाएं तोड़ने पर बाध्य कर दिया है। पिछले कई सप्ताह से हिन्दीसेवी सिनेस्तान डिजिटल प्राइवेट लिमिटेड सिनेस्तान डॉट कॉम द्वारा शुरू की गई सिनेस्तान इंडियाज स्टोरीटेलर्स स्क्रिप्ट प्रतियोगिता में हिन्दी को रोमन लिपि में लिखे जाने की शर्त पर सफाई मांग रहे हैं, परन्तु निर्णायक मण्डल के किसी सदस्य के सिर पर जूं तक नहीं रेंग रही है।

अलबत्ता जूं रेंगेगी भी कैसे, क्योंकि हिन्दी के कारण ही अपने ऐश्वर्य पर अभिमान करने वाले ये रोमनप्रेमी इतने स्वार्थपरक हैं कि वे जानते हैं कि हिन्दी जब संविधान में रहकर अपने ही देश में किसी दण्ड देने की अधिकारिणी नहीं बनाई गई है, तो सफाई देना या न देना कोई मायने नहीं रखता।

प्रतियोगिता में पटकथा भेजने के लिए १६ नियम बनाए गए थे, जिसके अंतिम नियम में पटकथा रोमन लिपि में लिखी होने की बाध्यता थी। इसका सीधा सीधा अर्थ था कि रोमन में लिखी हुई हिंदी पटकथा को ही अनुमति मिलेगी, हिन्दी अपनी देवनागरी लिपि में स्वीकार नहीं की जाएगी। हिन्दी के लेखकों की खस्ता हालत किसी से छिपी नहीं हैं। स्टोरीटेलर्स स्क्रिप्ट प्रतियोगिता वाले आयोजक भी समझते हैं कि नवोदित हिन्दी लेखकों को ठगने का इससे अच्छा मौका और कोई हो ही नहीं सकता। लेखक भी कुछ मजबूरी में और कुछ भाषाई असंवेदनशीलता के चलते अपनी ही हिन्दी को रोमन जामा पहनाने में तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं करते। तुक्का जो लग गया तो सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट को २५ लाख रुपये का पुरस्कार मिल जाएगा, कुछ नहीं तो कुछ सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट सिनेस्तान स्क्रिप्ट बैंक का हिस्सा ही बन जाएंगी, शायद आगे खाता भुनाने का अवसर मिल जाए। इस सबमें कहां हिन्दी और कहां देवनागरी। हिन्दी को तो सहन करने की आदत जो पड़ गई है, चाहे वो हिन्दी सिनेमा जगत ही क्यों न हो, जो पूरी तरह से हिन्दी पर ही पल रहा है, लेकिन उसने ही सम्भवतः हिन्दी का सबसे अधिक अपमान किया है। रहा सहा अपमान हिन्दी को रोमन लिपि में लिखने की शर्त ने पूरा कर दिया।

कई साल पहले भी हिन्दी इन सिनेमाइयों का स्क्रिपटीय शिकार हुई थी, जब मुंबई मंत्रा सनडांस और मुंबई मंत्रा सिनेराइज स्क्रीन राइटिंग के साथ इस पहल की शुरुआत की थी। कितनी सहजता से कह लेते हैं ये आयोजक कि वे भारतीय स्टोरी टेलर्स प्रतिभा को आगे लाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि ये सभी वक्तव्य उनके द्वारा अंग्रेजी में दिए जाते हैं।

सिनेस्तान इंडियाज स्टोरीटेलर्स स्क्रिप्ट प्रतियोगिता में १५ अक्टूबर, २०१७ से १५ जनवरी २०१८ तक जाने कितनी रोमन में लिखी हिन्दी पटकथाएं प्रविष्टियों के रुप में हिन्दी का परिहास करते हुए निर्णायकों की टेबिलों पर काजू बादामों के ढेर के साथ चबाई जा रही होंगी। तभी शायद किसी सफाई के लिए न तो निर्णायकों के पास समय है, न ही उत्तरदायित्व की भावना। न उस हिन्दी को लेकर अपरोध बोध जिसका सरेआम वे मजाक बना रहे हैं।

दुःख इस बात का है कि क्या वाकई हम सबने मिलकर अपनी ही हिन्दी को इतना लाचार बना दिया है कि अब आने वाले दिनों में हमें उसे रोमन लिबासों में सुबकते देखना पड़ेगा? ■

तमिल भाषा का संस्कृत से सम्बन्ध

डॉ विवेक आर्य

तमिल भाषा एक बार फिर से सुर्खियों में है। कारण प्रधानमंत्री मोदी द्वारा छात्रों से वार्तालाप के समय एक वक्तव्य दिया गया कि तमिल भाषा संस्कृत से भी पुरानी है। प्रधानमंत्री ने जाने या अनजाने में जो बयान दिया है उसके कई मायने हैं। सभी जानते हैं कि तमिलनाडु आर्य-द्रविड़ की विभाजनकारी मानसिकता का केंद्र रहा है। वहां के राजनेता जनता को द्रविड़ संस्कृति के नाम पर भड़काते हैं। वे कहते हैं कि द्रविड़ संस्कृति एवं तमिल भाषा हमारी मूल पहचान है। विदेशी आर्यों ने अपनी संस्कृति हमारे ऊपर थोपी है। उनका यह भी कहना है कि तमिल भाषा एक स्वतंत्र भाषा है एवं उसका संस्कृत से कोई सम्बन्ध नहीं है। संस्कृत आर्यों की भाषा है जिसे द्रविड़ों पर थोपा गया है।

एक सामान्य शंका मेरे मस्तिष्क में सदा रहती है कि तमिल राजनेता हिंदी/संस्कृत का विदेशी भाषा कहकर विरोध करते हैं, परन्तु इसके विपरीत अंग्रेजी का समर्थन करते हैं। क्या अंग्रेजी भाषा की उत्पत्ति तमिलनाडु के किसी गाँव में हुई थी? नहीं। फिर यह केवल एक प्रकार की जिद है। तमिलनाडु में हिंदी विरोध कैसे प्रारम्भ हुआ? इस शंका के समाधान के लिए हमें तमिलनाडु के इतिहास को जानना होगा। रोबर्ट काल्डवेल्ल (Robert Caldwell १८१४-१८९१) के नाम से ईसाई मिशनरी को इस मतभेद का जनक माना जाता है। रोबर्ट काल्डवेल्ल ने भारत आकर तमिल भाषा पर व्यापक अधिकार कर किया और उनकी पुस्तक Comparative Grammar of the Dravidian or South Indian Family of Languages, Harrison: London, १८५६ में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक का उद्देश्य तमिलनाडु की गैर-ब्राह्मण जनता को ब्राह्मण विरोधी, संस्कृत विरोधी, हिंदी विरोधी, वेद विरोधी एवं उत्तर भारत विरोधी बनाना था, जिससे उन्हें भड़काकर आसानी से ईसाई मत में परिवर्तित किया जा सके और इस कार्य में रोबर्ट काल्डवेल्ल को सफलता भी मिली।

पूर्व मुख्यमंत्री करुणानिधि के अनुसार इस पुस्तक में लिखा है कि संस्कृत भाषा के २० शब्द तमिल भाषा में पहले से ही मिलते हैं। जिससे यह सिद्ध होता हैं की तमिल भाषा संस्कृत से पहले विद्यमान थी। तमिलनाडु की राजनीती ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण धुरों पर लड़ी जाती रही है, इसलिए इस पुस्तक को आधार बनाकर हिंदी विरोधी आंदोलन चलाये गए। विडंबना देखिए कि भाई-भाई में भेद डालने वाले रोबर्ट काल्डवेल्ल की मूर्ति को मद्रास के मरीना बीच पर स्थापित किया गया है। उसकी स्मृति में एक डाकटिकट भी जारी किया गया है।

जहाँ तक तमिल और संस्कृत भाषा में सम्बन्ध का प्रश्न है तो संस्कृत और तमिल में वैसा ही सम्बन्ध है जैसा एक माँ और बेटे में होता है। जैसा सम्बन्ध संस्कृत और विश्व की अन्य भाषाओं में है। संस्कृत जैसे विश्व की अन्य भाषाओं की जननी है, वैसे ही तमिल की भी जननी है। अनुसन्धान करने पर हमें मालूम चलता है कि प्राचीन तमिल ग्रंथों में विशेष रूप से तमिल काव्य में बहुत से संस्कृत के शब्द प्रयुक्त किये गए हैं। यहाँ तक कि तमिल की बोलचाल की भाषा तो संस्कृत-शब्दों से भरी पड़ी है। कम्ब रामायण में भी अपभ्रंश रूप से अनेक संस्कृत शब्द मिल जायेंगे। तमिल भाषा की लिपि में अक्षर कम होने के कारण संस्कृत के शब्द स्पष्ट रूप से नहीं लिखे जाते। इसलिए अलग लिपि बन गई।

'तमिल स्वयं शिक्षक' से तमिल, संस्कृत, हिंदी के कुछ शब्दों में समानता देखिए-

तमिल संस्कृत हिंदी
१. वार्तै वार्ता बात
२. ग्रामम् ग्रामः गांव
३. जलम् जलम् जल
४. दूरम् दूरम् दूर
५. मात्रम् मात्रम् मात्र
६. शीग्रम शीघ्रम् शीघ्र
७. समाचारम् समाचारः समाचार

इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं।

इसी प्रकार से 'तमिल लैक्सिकान' के नाम से तमिल के प्रामाणिक कोष को देखने से भी यही ज्ञात होता है कि तमिल भाषा में संस्कृत के अनेक शब्द विद्यमान है। तमिल वेद के नाम से प्रसिद्द त्रिक्कुरल, संत तिरुवल्लुवार द्वारा प्रणीत ग्रन्थ के हिंदी संस्करण की भूमिका में माननीय चक्रवर्ती राजगोपालाचारी लिखते हैं कि 'इस पुस्तक को पढ़कर उत्तर भारतवासी जानेंगे कि उत्तरी सभ्यता और संस्कृति का तमिल जाति से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध और तादात्म्य है।' इस ग्रन्थ में अनेक वाक्य वेदों के उपदेश का स्पष्ट अनुवाद प्रतीत होते है।

(शेष पृष्ठ २० पर)

कभी-कभी उपवास भी कीजिए

विजय कुमार सिंघल

आप भोजन के बारे में बहुत सी बातें पढ़ चुके हैं। हमारे लिए कभी-कभी भोजन छोड़ देना भी अच्छा होता है। इसे प्रचलित भाषा में उपवास कहा जाता है। जिस प्रकार आपको सप्ताहभर काम करने के बाद एक दिन के अवकाश की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमारी पाचन प्रणाली को भी सप्ताह में एक दिन आराम देना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक होता है।

उपवास हमारे धर्म का अंग भी है, जिसे व्रत कहा जाता है, परन्तु जिस प्रकार यह किया जाता है, वह स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है। लोग पहले तो दिन भर भूखे रहते हैं और खाली पेट चाय पीते रहते हैं। फिर दोपहर बाद या शाम को कूटू, सिंघाड़े आदि से बनी भारी-भारी चीजें और खोए की मिठाइयाँ ठूँस-ठूँसकर खा लेते हैं। यह बहुत भयंकर है। ऐसे व्रत से तो व्रत न करना ही बेहतर है। ऐसा व्रत करने वाले प्रायः बीमार ही रहते हैं। इसलिए ऐसा कभी नहीं करना चाहिए। इसके स्थान पर युक्तिपूर्वक उपवास करना चाहिए, जिसकी विधि यहाँ बतायी जा रही है।

साधारण उपवास में केवल साधारण शीतल या गुनगुने जल के सिवाय कुछ नहीं लिया जाता। मौसम के अनुसार साधारण ठंडा या गुनगुना जल प्रत्येक घंटे पर एक गिलास की मात्रा में पीते रहना चाहिए। उपवास में दिन भर में तीन-चार लीटर जल अवश्य पीना चाहिए। प्रारम्भ में उपवास से कमजोरी अनुभव होगी। उसे सहन करना चाहिए और लेट जाना चाहिए। अति आवश्यक होने पर कभी-कभी पानी में आधे नीबू का रस या/और एक चम्मच शुद्ध शहद मिलाया जा सकता है।

एक से तीन दिन तक का उपवास कोई भी व्यक्ति सरलता से कर सकता है। इसमें कोई विशेष कष्ट नहीं होता। यदि कोई कष्ट जैसे दस्त, उल्टी, बेचैनी या बुखार हो जाता है, तो उसे प्रकृति की कृपा मानना चाहिए। इनसे पता चलता है कि उपवास का पूरा प्रभाव हो रहा है और प्रकृति हमारे शरीर से विकारों को निकाल रही है।

सामान्य स्वस्थ व्यक्ति को सप्ताह में एक दिन का पूर्ण उपवास अवश्य कर लेना चाहिए। इससे सप्ताह भर में खाने-पीने में हुई असावधानियों या गलतियों का परिमार्जन हो जाता है। सप्ताह में एक दिन का उपवास करना स्वास्थ्य का बीमा है। ऐसा व्यक्ति कभी बीमार पड़ ही नहीं सकता और सर्वदा स्वस्थ रहकर अपनी पूर्ण आयु भोगता है।

यदि केवल जल पीकर उपवास करना कठिन लगे, तो उसके स्थान पर रसाहार करना चाहिए। इसमें केवल मौसमी फलों का रस या सब्जियों का सूप दिन में तीन या चार बार लिया जाता है और शेष समय इच्छानुसार पानी पिया जाता है। इससे कमजोरी कम आती है और उपवास का लाभ भी काफी मात्रा में मिल जाता है।

जो लोग इतना भी न कर सकें उन्हें सप्ताह में एक दिन सायंकाल का भोजन त्याग देना चाहिए। इससे भी पाचन क्रिया को आवश्यक आराम मिल जाता है और पाचन शक्ति में सुधार होता है। जो लोग सप्ताह में एक समय भी बिना खाये नहीं रह सकते, उन्हें स्वास्थ्य की इच्छा छोड़कर कुपरिणाम भुगत लेना चाहिए। ■

फर्ज अपना भूल जाये उस दिये को फूँक दो
आग जो घर को लगाये उस दिये को फूँक दो
भूलकर मकसद गर अपना वो धुआँ देने लगे
कौन फिर उसको बचाये उस दिये को फूँक दो
तेल है, बाती भी है, पर हौसला बिल्कुल नहीं
जो हवा से लड़ न पाये उस दिये को फूँक दो
घर हमारा बिन चिरागी हो के रह जाये भले
खूँ के वो आँसू रुलाये उस दिये को फूँक दो
वो अँधेरे का हमारे चाँद सूरज हो मगर
दिन में वो तारे दिखाये उस दिये को फूँक दो
राजधानी में जले चाहे गली में, गाँव में
रोशनी जो दे न पाये उस दिये को फूँक दो

-- डॉ डी एम मिश्र

वक्त को मिलने गया शय आसमां हो जाएगा
छल गया उस जगह जाकर क्या खुदा हो जाएगा
आप की नाराजगी है जो शहर भाती नहीं
फेर कर भागे नयन क्या आईना हो जाएगा
भूल थी अपनी जगह राहें गईं अपनी जगह
आदमी है आदमी क्या हौसला हो जाएगा
छल कपट अपना नहीं तो हम भला करते ही क्यूँ
दुख रहा है दिल दरद किसका दवा हो जाएगा
बस रहें है नव महल दरिया किनारे जानकर
इक लहर यदि आ गई तो क्या सुबा हो जाएगा
बाँधना मुश्किल बहुत है सेतु अपने आप पर
मिल गई नौका नहर क्या रास्ता हो जाएगा
गौतम चला जिस जगह से फिर वहीं पर आ गया
भीड़ का मजमा हुआ क्या कारवां हो जाएगा

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

मुस्काना है सहज तुम्हारा, या फिर एक अदा है
हौले से लहरा जाना है, या फिर एक अदा है
खूब हवा संग बातें होती, नखरे हवा हवाई
अँखियों का टकरा जाना है, या फिर एक अदा है
अधरों पर देखी अगवानी, लज्जा के डोरे भी
इसे कहें हम एक भुलावा, या फिर एक अदा है
यहां हवा में बातें उड़ती, होती तनातनी है
अफवाहों की सरगर्मी है, या फिर एक अदा है
हर कोणों से लगे लुभावन, मोहक-मनमोहक से
ऐसा प्यार छुपा है मन में, या फिर एक अदा है
गन्ध उड़ी है सन्दल-सन्दल, बहका अंतरमन है
जुल्फों का है खेल निराला, या फिर एक अदा है

-- भगवती प्रसाद व्यास 'नीरद'

इक रोशनी की कैद में रहता हूँ इन दिनों
लहरों के साथ-साथ मैं बहता हूँ इन दिनों
सुनते ही जिसको ध्यान में खो जाये आदमी
गजलें उसी मिजाज की कहता हूँ इन दिनों
बालू से जो फिसल गये रंगों से उड़ गये
खुशबू के वे तमाम पल गहता हूँ इन दिनों
कुछ सिलवटें वजूद पर पड़ना है लाजिमी
चादर मैं ताम-झाम की तहता हूँ इन दिनों
जो 'शान्त' है शरीफ है ईमानदार है
उसका हर एक जुल्म मैं सहता हूँ इन दिनों

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

क्या कहा ना जाने गुल को बाद-ए-सबा ने
कि गूँज उठे हैं सूनी वादियों में तराने
आज की दुनिया की हैं रस्में ही निराली
नजरें हैं कहीं पे तो कहीं पे हैं निशाने
किसी भी चीज को कभी कमतर ना समझना
माथे की सिलवटों ने भी बदले हैं जमाने
लाख छुपाई मैंने राहों की मुश्किलें
मेरी दास्तान कह दी मेरे आब्ला-पा ने
चिराग-ए-दिल जलाओ थोड़ी रोशनी तो हो
शब-ए-फिराक अब लगी है हमको सतानें

-- भरत मल्होत्रा

जिन्दगी में खैरियत का सिलसिला कुछ भी नहीं
हम उसूलों पर चलें हैं सिरफिरा कुछ भी नहीं
वक्त की पाबन्दियों में जल रहा हूँ रात-दिन
दरबदर हूँ मैं भटकता माजरा कुछ भी नहीं
हर घड़ी बस याद रखनी है बड़ों की बात को
ज्ञान की इन वादियों का दायरा कुछ भी नहीं
हर तरफ अंधेर है यह रौशनी को क्या पता?
है जलाना दीप मुझको मसविरा कुछ भी नहीं
हसरतों को तुम लिये दिल में उतरकर देख लो
हसरतों का है तेरे बिन आसरा कुछ भी नहीं

-- नवाब देहलवी

ईश्वर का तुम ध्यान करो, हर पल प्रभु गुणगान करो
घर में बड़े जो वृद्धजन, उनका तुम सम्मान करो
रिश्ते होते हैं अपने उनको मत अनजान करो
करना ही जो दान अगर निज पापों का दान करो
जीवन सफल बनाना जो प्रभु भक्ति का रसपान करो

-- डॉ सोनिया गुप्ता

शिकायत है अगर तो फिर शिकायत क्यूँ नहीं करते
सहोगे जुर्म यूँ कब तक बगावत क्यूँ नहीं करते
हमें बदनाम करके वो हमीं से पूछते हैं अब
कि हम उनसे पुरानी सी मुहब्बत क्यूँ नहीं करते
ड़री सहमी निगाहे बेटियों की प्रश्न करती हैं
कली की बागबां जाने हिफाजत क्यूँ नहीं करते
बढ़ा जब बोझ जिम्मेदारियों का तो समझ आया
बड़े होकर बड़े अक्सर शरारत क्यूँ नहीं करते
इबादत तो दिखावे की नहीं है चीज कोई फिर
दिखावे के बिना हम सब इबादत क्यूँ नहीं करते
मकां कोठी दुकानों की वसीयत की सभी ने हम
कभी अपनी रवायत की वसीयत क्यूँ नहीं करते
कोई हिन्दू कोई मुस्लिम ईसाई पारसी कोई
धरम का नाम हम सब आदमीयत क्यूँ नहीं करते

-- सतीश बंसल

दिल्लगी औ दिल की लगी समझाता कौन है
दर्द दिल में हो तो कहो मुस्कुराता कौन है
बनती बिगड़ती देखी है हस्तियों की किस्मत
समय के साथ चलने की शर्त निभाता कौन है
चाँद तारे तोड़ लाऊँ हर दीवाना कहता यही
धर्म जाति का प्रपंच फिर बीच लाता कौन है
जब दीवारें बन जाती हैं सुख दुख का घरौंदा
जिंदगी की अहमियत फिर आजमाता कौन है
मिलना और रुखसत हो जाना रीत है पुरानी
देखते हैं शख्स नया अब हमें लुभाता कौन है
सख्त पाषाणों पर लिख भूल जाते नाम मणि
नाम हृदय पर लिखकर फिर बिसराता कौन है

-- मनीष मिश्रा मणि

नरक की अंतिम जमीं तक गिर चुके हैं आज जो
नापने को कह रहे वो दूरियाँ आकाश की
आज हम महफूज हैं क्यों दुश्मनों के बीच में
दोस्ती आती नहीं अब रास ज्यादा पास की
बँट गयी सारी जमीं, फिर बँट गया ये आसमां
क्यों आज फिर हम बँट गए ज्यों गड्डियां हों ताश की
इस कदर भटके युवा हैं आज के इस दौर में
खोजने से मिलती नहीं अब गोलियां सल्फास की
हर जगह महफिल सजी पर दर्द भी मिल जायेगा
अब हर कोई कहने लगा है आरजू वनवास की
मौत के साये में जीती चार पल की जिंदगी
क्या 'मदन' ये सारी दुनिया है विरोधाभास की

-- मदन मोहन सक्सेना

(तीसरा और अंतिम भाग)

खानाबदोश जिन्दगी

नीतू सिंह

फिर पुरानी

जिंदगी जैसी भी हो, किसी नदी की तरह अपना रास्ता ढूँढ ही लेती है। किसी ने बताया कि जिस स्टेशन से मैं लोकल पकड़ती हूँ उसकी दूसरी ओर एक मार्किट है, सो एक रविवार वहाँ पहुँची तो देखा हर तरह की चीजें वहाँ मिल जाती हैं। कपडों से लेकर दर्जी तक, बर्तन से लेकर सब्जी तक। यहाँ तक कि कटी हुई सब्जियाँ भी मिल जाती हैं, जो घर जाते ही बस धोकर छौंकनी होती हैं। यह मेरे लिए अदभुत चीज थी, क्योंकि पुराने शहर में ऐसी कोई सुविधा नहीं थी।

एक और मजेदार सुविधा थी बना-बनाया इडली और डोसे का बैटर। ऐसा मैंने कहीं नहीं देखा था। अंशु को इडली और अंजना को डोसा बहुत पसंद है। जिन दूध की दुकानों को मैं दूर से देखकर केवल दूध की समझ रही थी, एक दिन पास जाकर देखा तो वहाँ दही से लेकर, कच्चे मावा और अलग-अलग फ्लेवर के श्रीखंड के रेट कार्ड लगे थे। भई वाह! मजा आ गया देखकर। अब हर त्यौहार पर रौनक होगी।

हाल ही में पता चला कि अंकित के मौसेरे भाई दादर में रहते हैं, जिनके एक चाइल्ड स्पेशलिस्ट दोस्त का क्लिनिक हमारे घर के पास ही है। पिछले हफ्ते बच्चों को लेकर गई थी और एक सीख लेकर लौटी।

अगर आप पढ़ने का शौक रखते हैं तो किसी डॉक्टर के पास, विशेषकर अच्छे डॉक्टर के पास, जाते समय एक किताब अवश्य लेते जाएं और हाँ किताब कोई पतली-दुबली लघुकथा संग्रह न हो। हो तो अच्छा खासा वृहद उपन्यास हो, क्योंकि वहाँ नम्बर लगाने के बाद आपका नम्बर आते-आते आसानी से किताब पूरी हो जाएगी और हो सकता है आपका नम्बर भी न आए।

आज कॉलोनी में घुसते ही बच्चों ने मेरी ओर हमला बोल दिया। मगर मेरे हाथ में आइसक्रीम का डिब्बा देख ठिठक गए, जिसमें कई आइसक्रीम थीं।

'इत्ती सारी आइसक्रीम?'

'किसके लिए मम्मा?'

'तुम दोनों के लिए और तुम्हारे दोस्तों के लिए।'

मैंने मुस्कुराते हुए डिब्बा अंजना को पकड़ा दिया और दोनों कॉलोनी के पार्क में जाकर अपने थोड़े दोस्तों को आइसक्रीम बाँटने के बाद, नए दोस्त बनाने के लिए आइसक्रीम बाँटने में लग गए।

मैं अपने हाथ सीने पर बाँधे पार्क के किनारे खड़ी होकर बच्चों का कौतुक देख रही थी कि किसी ने पीछे से कंधे पर हाथ रख दिया। मैंने मुडकर देखा तो डॉ सचान मुस्कुराती खड़ी थीं। ये मेरे ऊपरवाले फ्लैट में ही रहती हैं और स्त्री-रोग विशेषज्ञ हैं। शायद यहाँ खड़े होकर अपने बच्चों को पार्क में खेलते हुए देख रही थीं। मैंने भी मुस्कुराकर उनकी मुस्कुराहट का जवाब दिया।

'अब कैसी हो अंजली?'

'ठीक हूँ मैडम! आपकी दवाई से आराम है।'

'गुड! एक महीने बाद यूटर्स का सोनोग्राफी करा लेना। अगर कोई प्रोब्लम हुई तो पता लग जाएगा।'

'बिल्कुल...थैंक यू मैडम।'

'अरे थैंक यू तो तुम्हें।'

'वो किसलिए मैडम।'

'बच्चों की आइसक्रीम के लिए..हा हा हा!'

मैं भी खिलखिलाकर हँस पड़ी। अभी हमारी हँसी थमीं भी नहीं थी कि पार्किंग एरिआ से अंकित अपने ऑफिस बैग के साथ आते हुए दिखाई दिए। मैंने बच्चों को भी आवाज लगाई।

'चलो घर! होमवर्क भी पूरा करना है।'

'कल तो संडे है न मम्मा!'

'कल हमें बाहर जाना है।'

'बाहर? कहाँ?' 'पहले घर चलो बताती हूँ।'

दोनों बच्चे धूल झाड़ते हुए सीढ़ियों पर दौड़ गए। अंकित जोर देते हैं कि दूसरे फ्लोर के लिए बच्चे लिफ्ट न लें तो ही अच्छा है। हम भी उस तरह हो लिये जहाँ दूसरे फ्लोर पर बने अपने किराए के फ्लेट की सीढ़ियाँ जाती थीं।

'पता है अंजली। सबसे सुकूनवाली बात क्या है?'

'क्या?'

'कि बच्चों को वही स्कूल मिला जहाँ कॉलोनी के बच्चे जाते हैं। इससे उन्हें एकदम अकेलापन या अजनबीपन महसूस नहीं होगा।' 'सो तो है।'

'और उससे भी बड़ी बात, पता है?' 'क्या?'

'स्कूल बस। जो कॉलोनी के बच्चों को ले जाती और ले आती है। वरना इस महानगर में बच्चों को स्कूल भेजना या ले जाना अपने आप में महाभारत है।'

'ये तो सही कहा। अपने दफ्तर जाने में ही मेरी हालात...।' कहते-कहते ही हमारा फ्लैट आ गया और हम अंदर हो लिये। हमारे पहुँचने से पहले ही बच्चे हाथ मुँह धोकर ब्रेड में जैम लगा रहे थे।

ब्रेड ठूँसे मुँह से ही अंशु ने अपना देर से रोका हुआ प्रश्न दाग दिया- 'मम्मा हम कल कहाँ जा रहे हैं?'

मैं भी नहीं जानती थी कि हम कल कहाँ जा रहे हैं। आज जब मैं ऑफिस में थी तो अंकित ने फोन करके बताया तो था कि कल बाहर चल रहे हैं, मगर कहाँ? यह एक सरप्राइस ही रखा। इसलिए मैंने विनती भरी आँखों से देखा और आँखों ही आँखों में पूछा कि अब तो बता दो।

'वरसोवा बीच के पास एक रूसी सर्कस देखने।'

दोनों बच्चे अपनी सीट से उछल पड़े और चिल्लाए- 'वाव!' और आपस में ही सर्कस के बारे में अपना-अपना ज्ञान बघारने लगे।

मैंने अंकित की ओर भवें टेढ़ी करके देखा और इस बिन मौसम बरसात का कारण जानना चाहा।

'जाने को तो हम कॉलोनी के पीछे बने मॉल में भी जा सकते थे जहाँ बच्चों के लिए ढेरों झूले हैं। फिर आज ये दिलदारी किस बात की दिखा रहे हैं जनाब।'

अंकित ने आँखों में आँखें डाल, शरारती मुस्कान के साथ जवाब दिया- 'इस नाचीज को एम्पलॉई ऑफ द मंथ के लिए नॉमिनेट किया गया है।'

मैं ने लगभग उछलते हुए कहा- 'क्या?'

फिर अपनेआप को सँभालते हुए बच्चों की ओर देखा। दोनों अपनी सर्कस संहिता में डूबे थे। मैंने शांत होकर पूछा- 'क्या आपको मिलने के चाँस हैं?'

अंकित ने लंबी साँस छोड़ते हुए कहा- 'नहीं। इस साल तो नहीं। मेरे काम में कुछ महीने कम पड़ रहे हैं। मगर मुझे नॉमिनेशन के काबिल समझा गया, यही काफी है।' अपनी टाई ढीली करते हुए वे फिर बोले-'लेकिन अगली साल मुझे मिलना तय है। कोई नहीं रोक पाएगा।'

मैंने अपने ऑफिस वालों की बात-बात में मुझसे सलाह लेने की आदत को याद करते हुए कहा-'हम्म।'

इसी बीच अंजना ने जैम लगे चम्मच को चाटते हुए कहा- 'पता है मम्मी।' 'क्या?'

वो तन्मयता से उस चम्मच को ही चाटते हुए बोली- 'आहना का ट्रांसफर हो गया है।'

मैंने अंकित की ओर मुस्कुराते हुए देखा। वे भी आँखों ही आँखों में हँस दिए। (समाप्त)

(पृष्ठ ३ का शेष)

होली में सावधानियाँ

आंखें तक क्षतिग्रस्त हुई हैं। त्वचा को गम्भीर हानि पहुंची है। अतः ऐसा व्यवहार दूसरों के साथ करें, जो पहले अपने साथ करके देख लिया हो। कहने तात्पर्य यही है कि दूसरों के साथ भी ऐसा कुछ न करें जो आपके लिए हानिप्रद हो। होली को होली के पर्व की भांति भेदभाव को भुलाकर मेलजोल के साथ मनायें दूसरों को भी यही प्रेरणा दें।

इसके अलावा कुछ व्यक्ति दीपावली की जुआं खेलने की गन्दी हरकत की भांति होली में भी गांजा अफीम भाँग शराब आदि का नशा करते हैं तथा लोगों को हठपूर्वक कराते हैं। इससे लड़ाई-झगड़े बढ़ते हें। नशा चाहे किसी का हो मनुष्य की बुद्धि बिगाड़ देता है। जिससे वह होश में नहीं रहता और अनाप शनाप बककर या गन्दी हरकतें करके झगड़े फसाद बढ़ाता है। परिणामतः समाज के अन्य लोगों को भी कष्ट पहुंचता है तथा होली का मजा फीका पड़ जाता है।

अतः ऐसे लोगों से विशेषकर होली में दूर या पूर्ण सावधान रहे। जो नशे की वस्तुएं विभिन्न मिठाईयों में मिलाकर या जबरदस्ती हठ करके खिला देते हैं तथा अपने आप भी चाहें जैसी भी परिस्थिति में क्यों न हो। कैसा भी किसी किस्म का नशा न करें। घर से बाहर निकलने पूर्व अपनी त्वचा सिर व आंखों की सुरक्षा का उपाय कर लें। किसी भी अनहोनी से स्वयं बचें और दूसरों को भी बचायें।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता

महेश तिवारी

कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और स्वस्थ मस्तिष्क होगा, तभी समाज को स्वस्थ बनाने के लिए विचार उत्पन्न होंगे। पर बीते डेढ़-दो हफ्ते में तीन घटनाएं घटित हुई, जो यह साबित करती हैं कि हमारी रहनुमाई व्यवस्था के वास्तव में कई रंग हैं। पहली घटना बजट में लोगों को स्वस्थ बीमा देने की बात, जो एक अच्छी तस्वीर भविष्य की खडी करती है, लेकिन शायद वादों में, क्योंकि दूसरी और तीसरी खबर पहले वादे का कचूमर निकाल देती है।

दूसरी घटना उन्नाव जिले की है, जो यह बताती है कि ग्रामीण भारत तो आज भी झोलाछाप डॉक्टरों के हाथों में है। तीसरी घटना यह है कि नीति आयोग ने देश की स्वास्थ्य व्यवस्था से सम्बंधित एक सूचकांक जारी किया, जिसने देश में स्वास्थ्य के प्रति रहनुमाई व्यवस्था की परतें उधेड़कर रख दी हैं। रोटी कपड़ा के बाद की सबसे बड़ी आवश्यकता स्वास्थ्य की होती है, लेकिन नीति आयोग की रिपोर्ट ने एक बार पुनः यह जता दिया कि सरकारें अपनी अवाम के लिए कितनी चिंतित हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट के बाद ही सही केंद्र और राज्य सरकारों को अब फालतू बहसों से दूर हटकर जनता के स्वास्थ्य के प्रति चेत जाना चाहिए, क्योंकि बड़े राज्यों में केरल के अलावा किसी भी राज्य को ७० से ऊपर अंक स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्राप्त नहीं हुए हैं।

केरल को जहां ८० अंक मिले, वहीं पंजाब ६५ अंक के साथ दूसरे नम्बर पर स्वास्थ्य के क्षेत्र में है। उत्तरप्रदेश और बिहार जैसे बड़े राज्यों को ५० से भी कम अंक मिले, जो यह साबित करते हैं कि अभी ये राज्य सिर्फ जातिवादी राजनीति में ही नहीं उलझे, बल्कि इन राज्यों का स्वास्थ्य ढांचा भी बहुत कमजोर है। नीति आयोग की यह सार्थक पहल है, जिससे राज्यों में स्वास्थ्य को लेकर प्रतिस्पर्धा का माहौल निर्मित हो सकता है, जैसा माहौल स्वच्छ भारत को लेकर हुआ था। तो क्यों न ऐसी रिपोर्ट हर वर्ष जारी की जाए? इस रिपोर्ट की दुःखद कहानी यह है कि ज्यादातर राज्य ४० से ५० अंक के बीच ही सिमट गए हैं। जिसका मतलब है कि देश में स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार की काफी गुंजाइश है। सबसे दुःखद बात यह है कि कोई भी राज्य ऐसा नहीं कि उसमें सुधार की कोई गुंजाइश न हो। मतलब साफ है, सुधार की जरूरत हर राज्य को है, लेकिन वर्तमान में सीख तो केरल राज्य से स्वस्थ सुधार के क्षेत्र में अन्य राज्यों को लेना चाहिए। इसके अलावा केंद्र सरकार सिर्फ यह कहकर अपने कर्तव्यों से नहीं भाग सकती कि वह स्वास्थ्य के क्षेत्र में पिछड़े राज्यों को अनुदान देगी। उसे ऐसी कटिबद्धता दर्शानी होगी, जिससे राज्य स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार करने को मजबूर हों, क्योंकि स्वास्थ्य का मसला समवर्ती सूची का विषय है, जिसमें केंद्र और राज्य दोनों का दखल होता है।

इसके साथ अगर केंद्र सरकार को अपनी महत्वकांक्षी योजना स्वास्थ्य बीमा योजना को सफल बनाना है, तो उसके लिए भी जरूरी है कि देश का स्वास्थ्य तंत्र मजबूत हो। वर्तमान समय में देश में एक हजार व्यक्ति पर एक डॉक्टर भी उपलब्ध नहीं है। उससे बड़ी चिंताजनक स्थिति यह है कि ग्रामीण परिवेश सिर्फ डॉक्टरों की कमी से नहीं बल्कि सुविधाओं की कमी से भी जूझ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्वास्थ्य तंत्र ही उदासीनता का शिकार नहीं, गैर-सरकारी तंत्र भी दयनीय है, क्योंकि ग्रामीम क्षेत्रों में तो झोलाछापों की टोली घूम रही है। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि कई राज्य एमबीबीएस किए डॉक्टरों को ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, लेकिन फिर भी युवा एमबीबीएस धारी ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाएं देने को तैयार नहीं। यह इकीसवीं सदी के भारत की कहानी है, जब चांद और मंगल पर पहुँचने की बात की जाती है। उस दौर में ४० लोगों को एक ही सीरिंज से इंजेक्शन लगा दिया जाता है। फिर क्या कहा जाए, कहीं हवाबाजी और दिखावे की राजनीति में देश की रहनुमाई व्यवस्था मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना भूल तो नहीं गई।

यह इक्कीसवीं सदी के भारत की एक विडंबना है कि जो विश्व गुरु बनने का दम्भ भर रहा है। आज भी उस देश के बहुतेरे गांवों तक आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच नहीं है। ऐसे में यह गलत बात नहीं कि देश विकसित अवस्था की ओर कदम न बढ़ाए, लेकिन पहले विचार मूलभूत समस्याएं दूर करने पर हो, तो ज्यादा अच्छा होता। अगर आज आबादी का एक बड़ा हिस्सा झोलाछाप डॉक्टरों पर निर्भर है तो यह अच्छी बात तो नहीं। जिस देश की जनसंख्या १.३ अरब की है, उस देश में सिर्फ दस लाख डॉक्टर हैं, जिनमें मुश्किल से १० फीसद डॉक्टरों का जुड़ाव ही सरकारी स्वास्थ्य तंत्र से है, फिर यह चिंताजनक स्थिति है। अगर विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक गांवों में लोगों का इलाज कर रहे, हर पांच में से एक डॉक्टर के पास ही प्रैक्टिस के लिए जरूरी योग्यता होती है। इसके इतर देश के ५७.३ फीसदी डॉक्टरों के पास अगर कोई डॉक्टरी की योग्यता नहीं। फिर देश की स्वास्थ्य व्यवस्था कहीं अंधेरे में तो नहीं चिड़िया की आंख निशाने के लिए ढूँढ़ रही, और अगर अंधेरे में निशाना लगाया भी गया, तो परिणाम भी उन्नाव जैसे ही होंगे।

अगर यह मान लिया जाए कि देश में शिक्षा की भांति स्वास्थ्य भी दो वर्गों में बंट गया है, तो वह भी गलत न होगा। एक जो सुविधा संपन्न के लिए है और एक जो गरीब तबके के लिए। जहां न जांच के उपकरण होते हैं और न समय पर डॉक्टर। ऐसे में सवाल यहीं सिर्फ नए एम्स खोलने से गरीब और ग्रामीण तबके को बीमारियों से निजात नहीं मिलेगी। आबादी का बड़ा हिस्सा आज भी सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित है। उसमें ग्रामीण इलाकों की हालात तो और बदतर है। उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं का आलम तो यह है कि सूबे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेषज्ञ डॉक्टरों के अस्सी फीसद से ज्यादा पद खाली हैं। इसके अलावा प्रदेश में सिर्फ ४८४ विशेषज्ञ डॉक्टर कार्यरत हैं, जबकि जरूरत ३२८८ विशेषज्ञ डॉक्टरों की है। ऐसी ही तस्वीरों से रूबरू बिहार और अन्य पिछड़े राज्य भी हैं।

तो सिर्फ इस पर इतराने से काम नहीं चलेगा कि भारत विश्व का पहला ऐसा देश बन गया है, जिसने स्वास्थ्य को लेकर राज्यस्तरीय सूचकांक जारी किया है। उसका अगला कदम यह होना चाहिए, जिससे लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो सकें। इसके लिए स्वास्थ्य पर खर्च बढ़ाना होगा, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार करना होगा और ऐसी नीति बनानी होगी, जिससे बढ़ी तादाद में प्रशिक्षित डॉक्टर तैयार हो सकें, और ग्रामीण क्षेत्रों में भी कार्य करने को तैयार हों। ऐसी कोई व्यवस्था बनाई जाए, तभी स्वस्थ भारत की परिकल्पना सिद्ध हो सकती है। ■

लघुकथा

कुंठा

रात के एक बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल का संचालन कराके लौटकर घर वापस आए पति ने दरवाजा खटखटाना चाहा. तभी पत्नी की चेतावनी याद आ गई. 'आप भरी ठण्ड में कार्यक्रम का संचालन करने जा रहे हैं. मगर १० बजे तक जरूर घर आ जाना. अन्यथा दरवाजा नहीं खोलूंगी। तब ठण्ड में बाहर ठुठुरते रहना.'

'भाग्यवान नाराज क्यों होती हो.' पति ने कुछ कहना चाहा.

'२६ जनवरी के दिन भी सुबह के गए शाम ४ बजे आए थे. हर जगह आपका ही ठेका है. और दूसरा कोई संचालन नहीं कर सकता है?'

'तुम्हें तो खुश होना चाहिए...'

पति की बात पूरी नहीं हुई थी कि पत्नी बोली, 'सभी कामचोरों का ठेका आपने ही ले रखा है.'

पति भी तुनक पड़ा, 'तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारा पति...'

'खाक खुश होना चाहिए. आपको पता नहीं है. मुझे बचपन में अवसर नहीं मिला, अन्यथा मैं आज सबसे प्रसिद्ध गायिका होती.'

यह पंक्ति याद आते ही पति ने अपने हाथ वापस खींच लिए. दरवाजा खटखटाऊं या नहीं. कहीं प्रसिद्ध गायिका फिर गाना सुनाने न लग जाए.

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

कविता कुंज

बहुत सोचता है मन/क्या लिखे क्या न लिखे
असमंजस के घेरे में/मन में जन्म लेते कई सवाल!!
कहीं अंतस में बहता/भावनाओं का बांध टूट न जाए
कहीं सम्वेदनाएँ रौंदी न जाए/और अगर ऐसा हुआ तो
और न जाने क्या-क्या अनर्गल बातें
बहुत छटपटाती है उंगलियाँ
लिखने को अंतर्मन का यथार्थ
चाहती है भावों का वंदन
पर सहम जाती है अनायास ही
कुछ तो है जो भयभीत करता है
जिसकी वजह से उठती नहीं कलम
थम जाती है प्रतिक्रिया
एहसास उतरता नहीं सच की स्याही में
फिर बनती है एक मनगढ़ंत कविता

-- बबली सिन्हा

प्रीत की पाती लिखूँ/या विरह की वेदना
तुमसे मिली तो प्रेम/बिछड़ी तो विरह
फिर कौन सी भाषा लिखूँ
क्योंकि आज भी/जब भी एकांत में होती हूँ
धीरे से गुनगुना लेती हूँ तुम्हारा नाम
रात में छुपकर चांद से दो चार बातें कर लेती हूँ
तारों के झुरमुट में तुम्हें पाना चाहती हूँ
कही किसी एक कोने में
लेकिन तुम न जाने कहां कैसे
गुजार लेते हो रात दिन मेरे बगैर
इसका मतलब
झूठे थे सारे वादे सारी कसमें
बस दिखावा था दुनियां के सामने
मैं ही पागल हूँ/सोचती रहती हूँ बीती हुई बातें
और लिखना चाहती हूँ/कही अनकही बातें...

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

मैं मैं करता क्यों फिरे बकरी जैसे कहाय
हम हम करता जो फिरे एकता में बंध जाए
जीवन व्यर्थ गवाएं क्यों सेवा से तर जाए
बैठत बैठत कुछ नहीं आंत सभी सड़ जाए
अनमोल पल बिताय के परिवार संग जो जिये जाए
खुश हाली उस चौखट से
कभी लांघ न जाये
सम्मान करें जो बड़ों का
जीवन से तर जाए
अच्छा अच्छा बोल और सुन
तू क्यों बुरा कहाय

-- नेहा शर्मा

अर्थ का अनर्थ है, बिन तुम्हारे जीवन ये व्यर्थ है
शब्द सिर्फ शब्द हैं,
बिन तुम्हारे जिंदगी ये अव्यक्त है
गूँज है नाद की,
बिन तुम्हारे गूँज भी सिर्फ दर्द है
दर्द ही दर्द है,
बिन तुम्हारे जिंदगी तर्क ही तर्क है

-- वर्षा वार्ष्णेय

जाना चाहते हो तुम/तो शौक से चले जाओ
मगर सुनो...लगा देना किवाड़/यादों के दरवाजे को
कहीं विस्मृतियों के वन से/पवन संग बहकर
चली न आये याद कोई/जो कर दे परेशां...
हटा देना धवल बादलों को
जिनसे छनकर सुनहरी किरणें/सुखा देंगी प्रेम में भीगी
इन हथेलियों को जिनसे/खिलाये थे कौर कभी...
मिटा देना इन फूलों को/जिनसे आती हुई प्रेम सुगंध
प्रेरित करती है दिन रैन
मुझे बस लिखने को...
मैं कुछ और तो नहीं जानती
पर हां इतना तो जानती हूं
मेरे लिए गीत, गजल, नज़्म
मेरी कलम से निकलता हुआ
हर्फ-हर्फ बस तुम ही हो! बस तुम...

-- प्रिया वच्छानी

धूप कितनी चमकीली है/पेड़ों के पत्ते जैसे नहाए हुए हैं
हर तरफ साफ दिखता है/पहली नजर है शायद
चलने पर ये धूप/कड़ी तपिश देगी
झुलसा देगी तन को/और झुंझला देगी मन को
जब धूप जेठ में जवान होगी/देख पाना मुश्किल होगा
खुले आसमान की ओर
दिन काटने को/लगेंगे सब अपने अपने कामों में
कहीं मन से तो कहीं बेमन से
ढलता सूरज और आती शाम
को सब सलाम करने निकलेंगे
बैठेंगे कुछ यूँ जैसे सुकून बैठता है
करेंगे बातें लंबे इंतजार की
हंसी में डूबी उदासी की।

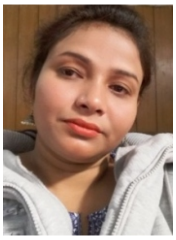

-- सरोज नेगी

तिनका-तिनका जोड़कर/घोंसला बनाया सपनों का
अंडों से जब बाहर निकले/हर चूजे का पेट भरा
प्यार से फिर चिड़िया मां ने/चोंच से दाना चुग-चुगकर
पंख खिले जब पूरे उनके/उड़ने का साहस भरा
मानव जीवन का भी, साथी/यही सत्य, यही परंपरा
बस जाते हैं जहाँ, वहीं तो/होता रैन-बसेरा उनका
छोड़ के सारे बंधन, माया/नित नवीन हो आशियां
मानव मन इक पंछी भांति
ढूंढे हर पल खुला आसमां
पंख खोल उन्मुक्त गगन में
उड़ना चाहे पंख पसार
तिनका-तिनका जोड़कर
रचता सपनों का संसार

-- विनीता चैल

मुक्तक

कोई किसी पर इल्जाम लगा देता है
कोई किसी का भी दाम लगा देता है
दर्द दिल में हो या कि दुकानदारी में
वो हर जगह, झंडू बाम लगा देता है

-- सुरेश मिश्र

प्रेम उम्र से बढ़कर समय से परे
भाषा में कैद नहीं, न ही परिभाषा में समाये
इतना संवेदनशील कि छुअन से थर्रा जाये
इतना मजबूत कि पत्थर से टकरा जाए
पारदर्शी ऐसाजैसे कि काँच
पर अ श्य ऐसा ढूंढने पर नजर न आए
सरल इतना हर सवाल सुलझ जाये
और जटिल इतना कि जीवन सारा उलझ जाये
शीतल इतना कि छाँव बन जाये और
इतना उष्ण कि मन झुलसा जाये
इतना विशाल और उन्मुक्त
कि आकाश नजर आये
उपजाऊ और सहनशील इतना
कि धरती बन बिछ जाये
बड़ी मुश्किल है इसकी थाह पाना!

-- शिप्रा खरे

१. कैसे ये मान लें कि/खामोशियों की भी जुबां है
खामोश मेरे लब हैं,/और वो मुझसे बेखबर है!
२. किया है ये वादा,/बढ़ायेंगे कुछ दूरियाँ..
पर तेरे हिस्से का वक्त
काटे कटता नहीं है
३. अतीत के कुछ साये,
कुछ चाहतों के सदके,
आज फिर से तेरी यादें.
मेरे दर पे आ खड़ी हैं !!

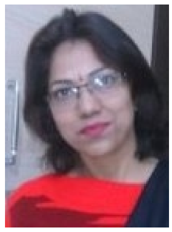

-- अंजु गुप्ता

कैक्टस! जानता हूँ तुम्हें बस फूलों की महक पसंद है
पर मैं तो ठहरा साधारण सा कैक्टस
जिसमें न महक है और न ही कोई आकर्षण
तुम्हें मैं नापसंद हूं ,मेरा नाम भी तुम्हें पसंद नहीं
क्योंकि इसमें गुलाब और रात रानी सी लचक कहाँ
अकेले रहने की आदत सी हो गई है मुझे
तुम इतराओ खुद पे मुझे कोई गिला नहीं है
पर कभी अकेले में सोचना तुम ये भी
मैं भी कुदरत की देन हूँ
और तुम भी
फिर क्यों उपेक्षा की नजर से
देखा जाता हूँ मैं
हाँ! मैं एक कैक्टस कुरुप सा
काँटेदार साधारण सा

-- कामनी गुप्ता

छन्द

मन में विश्वास लिए करते प्रयास रहें,
मुख न मलिन करें स्वाद चखें जीत का।
जीत का जुनून चढ़े और सूझे कुछ नहीं,
मानो बंद रच रहा गीतकार गीत का।
गीत का सृजन करे मन चाही धुन बजे,
जब कोई नित पाए संग मनमीत का।
संग मनमीत का जो सुखद हमेशा रहे,
जान कोई नहीं पाया पता इस रीत का।।

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

सुयोग्य वर

प्रियंका एक पढ़ी-लिखी और खुले विचारों वाली लड़की थी, मगर एक मध्यमवर्गीय परिवार में उसके विचारों को समझने वाला कोई नहीं था। माँ गृहिणी थी और पिताजी एक सरकारी स्कूल में क्लर्क। परिवार का माहौल बिल्कुल साधारण था। दुनिया की चमक-दमक से दूर। आज लोगों को दिखावा चाहिए, जो उसके परिवार में नहीं। पैसे की कीमत प्रियंका भलीभांति जानती थी। घर में कमाने वाला एक और इतना खर्चा, फिर भी पापा को कभी परेशान नहीं देखा था उसने। कभी कुछ नही कहते अपने बच्चों से या पत्नी से।

आज प्रियंका की शादी के दिन न जाने पापा क्यूँ बहुत परेशान थे। सब तो घर के कामों में व्यस्त थे। प्रियंका अपने कमरे से पापा को देख रही थी। बार बार घड़ी पर नजर डालकर परेशान से हो रहे थे। अचानक लैंडलाइन पर फोन आया। उधर से प्रियंका के ससुर का फोन था। बोल रहे थे कि ५ लाख रुपया तैयार रखना, वरना वे बारात वापिस ले जाएंगे। उधर कमरे में दूसरे फोन से ये सब सुन रही थी प्रियंका। आंखों से आंसू बह रहे थे पापा के भी और प्रियंका के भी। कभी पापा को रोते नहीं देखा था उसने। दिल में गुस्सा भरा हुआ था। बारात दरवाजे पर थी और उसके ससुर पापा की तरफ इशारे करके बुला रहे थे। सुधीर जिसकी शादी प्रियंका से हो रही थीं। शायद वो इन सबसे अनजान था।

'देखिये समधी जी हमने अपने बेटे को बहुत पढ़ा-लिखाकर इस लायक इसलिए बनाया ताकि उसकी शादी अच्छे से हो और हैसियत नहीं थी आपकी तो क्यूँ रिश्ता तय किया।' सुधीर के पापा बोले।

'ओह पापा! आप तो मुझे बेच रहे हैं?' सुधीर भी कमरे में आ गया। 'ये तो अच्छा हुआ कि प्रियंका ने आप की सारी बातें मुझे बता दीं। और अंकल इनकी तरफ से माफी मांगता हूं मैं! चलिये, फेरों के लिए देर हो रही है। अंकल आप परेशान न हों अब प्रियंका मेरी जिम्मेदारी है।' प्रियंका को अपने पापा की पसन्द पर गर्व हुआ।

-- उपासना पाण्डेय

ईमानदारी

'पापा आज आपकी भी छुट्टी है और मेरी भी। आज तो खाने पे बाहर चलना ही पड़ेगा।' गोलू जिद पर अड़ गया।

रमेश बाबू समझाने लगे- 'अच्छे बच्चे जिद नहीं करते। बाहर का खाना खाने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है और तुम्हें तो बड़े होकर सैनिक बनना है न! तो सेहत का...।' आगे कुछ बोल पाते इससे पहले ही गोलू बड़ी ही मासूमियत से बोल पड़ा- 'पापा एक बात पूछूं?'

'हाँ बेटा जरूर पूछो।' पापा ने सिर हिलाते हुए कहा।

'पापा आप ईमानदारी से मेहनत नहीं करते हो क्या?' सवालों भरी निगाहों से गोलू ने पूछा।

रमेशबाबू- 'हाँ करता हूँ पर तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो?'

गोलू- 'पापा कल मेरे मास्टर जी बता रहे थे कि अगर ईमानदारी से मेहनत करोगे, तो एक दिन बड़े आदमी बनोगे, तुम्हारे पास हर खुशी होगी। उधर बिट्टू के पापा को देख लो हर संडे को होटल, मॉल कहाँ-कहाँ नहीं ले जाते हैं। शहर के बड़े स्कूल में पढ़ाते भी हैं, जबकि आप भी क्लर्क हैं और उसके पापा भी।'

रमेशबाबू निःशब्द हो गये। मानो उनके कंठ में पानी अटक गया हो और उस सात साल के बच्चे को समझाने की तरकीब ढूंढने लगे कि 'बेटा ईमानदारी से मेहनत करता हूँ इसीलिए तुम्हें खुश नहीं रख पा रहा हूँ, शहर के बड़े स्कूल में नहीं पढ़ा पा रहा हूँ। उसके पापा तो रिश्वत...।'

-- नवीन कुमार साह

मौका

नरेश ऑफिस में उससे मिलने आए अपने रिश्तेदार से बात कर रहा था।

'कहिए क्या हाल चाल हैं? सब ठीक है।'

'ठीक ही है सब। बस मयंक की फिक्र होती है। उसी सिलसिले में तुमसे मिलने यहाँ आया था। तुम देख लो अगर अपने ऑफिस में कोई काम दे सको।'

नरेश कुछ सोचने लगा। उसे सोंच में पड़ा देखकर उसके मेहमान ने कहा।

'भइया गलती तो इंसान से ही होती है। कुछ देर के लिए वह राह भटक गया था। पर सुबह का भूला गर शाम को लौट आए तो उसे माफ कर देना चाहिए।'

नरेश ने इंटरकॉम पर दो कप चाय भिजवाने का आदेश देने के बाद कहा।

'मुझसे जो हो सकेगा जरूर करूँगा।'

कुछ ही देर में ऑफिस ब्वाय चाय लेकर आया। नरेश के मेहमान ने उसे ध्यान से देखा। ऑफिस ब्वाय के जाते ही वह बोले। 'शायद तुम नहीं जानते। यह जेल की सजा काट चुका है। इसका हिसाब कर दो।'

उनकी बात सुनकर नरेश बोला। 'जानता हूँ। पर वह भी शाम होते ही घर लौट आया है।'

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

समय का पहिया

'बहू मंजरी, मैं जरा देवरानी के घर जा रही हूँ, वो कुछ बीमार सी हैं। अगर लेट हो जाऊं, सब्जी बनाई पड़ी है अपने ससुर जी के लिये फुलके बना देना। उनको समय पर खाना खाने की आदत है।' बहू तो अपनी माँ की सलाह के अनुसार खुद को ढाल रही थी। बहू ने बात अनसुनी सी कर दी, न कोई जवाब दिया, दरवाजा जोर से मार अपने कमरे में चली गई। सुधा चली तो गई पर बहू के व्यवहार मन उदास व बिक्षुब्ध रहा।

सुधा घर की बात कभी बाहर नहीं करती थी। वह संस्कारी और कामकाजी नारी थी, सबसे तालमेल रखती थी। वह हमेशा बहू और बेटी पूरे परिवार से सामान्य व्यवहार करती और सब रिश्तेदारी का खूब सम्मान करती। बहू मंजरी की माता सिखाती, 'मंजरी तुम इकलौती बहू हो, सास पर दबाव बनाकर रखना। वो काबू में हो गई तो सारा घर खुद ही तेरे साथ होगा।'

बहू मंजरी के बेटी पैदा हुई, सास ने खूब सेवा की, बाद में भी जब जरूरत होती हमेशा साथ देती। मंजरी का माँ बनने के बाद रुख बदल गया था। जब सास ने आँखों का आपरेशन करवाया, बहू ने जी जान से सेवा की। मंजरी की माँ ने डांटा, 'सास की क्यों सेवा करती है, सर चढ़ जायेगी।' मंजरी को सास की सात्विकता पर विश्वास हो चुका था। मंजरी बोली, 'माँ, हमारे घर के मामले में दखल न दो, अब मैं सब जान चुकी हूँ। सास समय के पहिया सी बंधी घर की एकता की लड़ी है, हम इसकी परवाह न करें ये मुमकिन नहीं।'

-- रेखा मोहन

अनुष्ठान

आदत से मजबूर मेघना ने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली से लिफ्ट का स्विच ऑन किया और दर्द के कारण उसके मुंह से बड़ा-सा उफ्फ निकल गया. अपनी इस हरकत पर मन ही मन वह बहुत लज्जित भी हुई. उसे अनिल के साहस की कहानी याद आ गई थी.

मेघना को हुआ कुछ भी नहीं था. बस, सर्दी के कारण उसके दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली सूजी हुई थी, उस पर सब्जी काटते समय एक कट आ गया था.

अनिल बचपन में ही एक दुर्घटना में अपने दोनों हाथ गंवा बैठा था. माता-पिता तो दुखी थे ही, अनिल भी कम परेशान नहीं था. पर उसके बालमन ने हार मानने से इंकार कर दिया। अब वह अपना सब काम खुद करने लगा, उसने स्कूल में दाखिला लिया, कॉलेज की पढ़ाई भी पूरी की, कम्प्यूटर का कोर्स करके अब औरों को कम्प्यूटर के कोर्स करवाता है. उसने अपने साथ हुई अनहोनी को अनुष्ठान बना लिया था.

-- लीला तिवानी

जाल

राजकुमार कांदु

शहर में आये दिन युवा लड़कियों के अपहरण और उनके साथ हैवानियत की खबरें आती रहती थीं। कुछ दिनों की सुर्खियों के बाद अपराधियों की दबंगई के चलते पीड़ित लड़कियां अपना बयान वापस ले लेतीं और अपराधी फिर आजाद हो जाते दूसरा शिकार ढूंढ़ने के लिए। ऐसी ही एक पीड़ित लड़की की आपबीती सुनकर डीएसपी श्रेष्ठा का खून खौल उठा। नायाब दरोगा अमर सिंह को उसने उस लड़की की भरपूर मदद करने तथा अपराधियों को गिरफ्तार करके उन्हें सजा दिलाने की जिम्मेदारी सौंप दी।

लड़की की निशानदेही पर गिरफ्तार किए गए अपराधियों से यह हकीकत पता चली कि लड़कियों का अपहरण करने वाले और उन पर जुल्म ढाने वाले अलग-अलग होते थे। इलाके का नामी बदमाश कालिया कई अवैध धंधों के साथ ही जिस्म फरोशी का भी धंधा करवाता था। अपने ग्राहकों की मांग पर उनकी पसंद के अनुसार वह राह चलती लड़कियां अपने गुर्गों से उठवाकर अपने ग्राहकों को सौंप देता था। बदले में उसे मोटी रकम मिलती थी जिसमें से एक हिस्सा वहां के नेताजी को भी नियमित पहुंचता था। नेताजी की सरकार होने के कारण प्रशासन की हमदर्दी भी इन अपराधियों से रहती थी।

डीएसपी श्रेष्ठा तेजतर्रार युवा पुलिस अधिकारी थी। कर्तव्यपरायण, संवेदनशील श्रेष्ठा गरीबों व मजलूमों को न्याय दिलाने का हरसंभव प्रयास करती थी। नायाब दरोगा अमर सिंह ने त्वरित कार्रवाई करते हुए अपहरणकर्ताओं को पकड़ तो लिया, लेकिन उस लड़की ने अदालत में उन आरोपियों को पहचानने से इनकार कर दिया। लिहाजा अपराधियों की रिहाई निश्चित हो गयी।

उस केस की फाइल जांचने के बाद उस लड़की के बयान से श्रेष्ठा को चौंकाने वाली जानकारी मिली। उसके बयान के अनुसार अपहरणकर्ताओं ने उसका अपहरण करने के बाद उसे किसी बड़े से गोदामनुमा कमरे में धकेल दिया था, जहां बाद में कोई बहुत ही रईस और रसूखदार अधेड़ आया था जिसने उसके साथ हैवानियत को अंजाम दिया था।

उसका बयान पढ़कर श्रेष्ठा को समझते देर नहीं लगी कि अपहरणकर्ता तो सिर्फ प्यादे हैं, असली मोहरा तो कोई और है। श्रेष्ठा के दिमाग में इन प्यादों के जरिये असली मोहरे तक पहुंचने की योजना जन्म ले चुकी थी। अगले ही दिन श्रेष्ठा ने एक सप्ताह के अवकाश के लिए आवेदन कर दिया, जो शीघ्र ही मंजूर भी हो गया।

शहर के बाहरी इलाके में कुछ छोटे कारखाने व उसी के समीप ही एक झुग्गी बस्ती बनी हुई थी। वहीं कुछ आदमी और एक पच्चीस वर्षीय लड़की बस स्टॉप पर खड़े बस का इंतजार कर रहे थे। शाम के लगभग चार बजे होंगे। एक बस आयी। उस लड़की को छोड़कर सभी उस बस में सवार हो चले गए। उस लड़की को शायद कोई दूसरी बस पकड़नी हो। वह खड़ी रही वहीं पूर्ववत! बार-बार बस आनेवाली दिशा में देखती और फिर कलाई में बंधी घड़ी पर नजर डालती। ऐसा लग रहा था जैसे वह बेचैन हो और उसे किसी की प्रतीक्षा हो। सड़क सुनसान थी। इक्का-दुक्का वाहन कभी-कभी बड़ी तेजी से वातावरण की शांति भंग करते हुए गुजर जाते। तभी एक वैन आकर वहां रुकी। वैन का दरवाजा खुला और दो बदमाश से दिखनेवाले आदमी वैन से नीचे उतरे। वह लड़की अभी कुछ समझ पाती कि अचानक एक बदमाश ने झपटकर उसे गोद में उठा लिया और वैन के खुले दरवाजे से गाड़ी के अंदर पटक दिया। अगले ही पल दोनों बदमाश भी गाड़ी में घुसकर वैन का दरवाजा अंदर से बंद कर चुके थे।

गाड़ी तेजी से शहर के दूसरे छोर की तरफ भागी जा रही थी। एक बदमाश ने अपनी हथेली से उस लड़की के मुंह को ढक्कन की तरह बंद कर दिया था। दूसरे ने जेब से चाकू निकालकर उसके सामने लहराना शुरू कर दिया था। डरी-सहमी लड़की कसमसाकर रह गयी। अब उसका प्रतिरोध कम हो गया था। गुंडे आपस में हंसी-मजाक भी कर रहे थे।

कुछ देर बाद शहर के दूसरे छोर पर बने एक पुराने से बड़े से गोदामनुमा घर के सामने वैन खड़ी हुई। बदमाशों ने उस लड़की को पीठ पर चाकू की नोंक सटाये हुए उस घर के दरवाजे से अंदर धकेल दिया।

पश्चिम में सूर्य अस्त हो रहा था। उस बड़े कमरे में डरी सहमी लड़की जो धकेलने की वजह से जमीन पर गिर गयी थी और कातर निगाहों से दरवाजे में खड़े उन तीनों बदमाशों की तरफ देखे जा रही थी। उनकी लंबी परछाइयां भी उसे उनके गुनाहों से छोटी लग रही थी।

कुछ देर की खामोशी के बाद उस लड़की ने खुद को छोड़ देने की गुहार लगाना शुरू कर दिया।

क्रूरता से हंसता हुआ उनमें से एक बोला- 'ज्यादा मत फड़फड़ा मेरी बुलबुल! और हमसे तो बिल्कुल भी नहीं डरना, क्योंकि हम लोगों का काम तुमको सिर्फ यहां तक लाना था। हम तो बाराती हैं ! दूल्हे तो अब आएंगे! हा! हा!!'

कसमसाती, तड़पती वह लड़की गिड़गिड़ाने के अलावा और कर भी क्या सकती थी?

बाहर एक गाड़ी रुकने की आवाज आई। तीनों बदमाश भीगी बिल्ली बने एक कोने में दुबक गए थे और गाड़ी से उतरकर कालिया ने बड़ी शान से उस दरवाजे से कमरे में प्रवेश किया। उसके साथ उस इलाके के वही नामी नेताजी भी थे, जिनके सहारे कालिया की अपराध की दुनिया फल-फूल रही थी।

तीनों बदमाश अभी भी दरवाजे पर एक कोने में खड़े ही थे। नेताजी से मुखातिब कालिया हंसते हुए बोल पड़ा, 'लो नेताजी! आज तो तुम्हारी लाटरी लग गयी है। बड़ी खूबसूरत चिड़िया आज जाल में फंसी है। जाओ! ऐश करो।'

खीसें निपोरते नेताजी कालिया की तारीफ करते हुए बोले- 'हमें तुम्हारा यही काम तो खासा पसंद है कालिया! मुन्नीबाई के कोठे पर एक से बढ़कर एक अप्सराएं हैं, लेकिन जो मजा इन घरेलू चिड़ियों में है वह मजा उन अप्सराओं में कहां?'

दोनों अपनी बातों में मशगूल थे कि तभी खामोशी से दस-बारह सिपाहियों को साथ लिये नायाब दरोगा अमर सिंह ने दरवाजे पर खड़े तीनों बदमाशों को दबोच लिया।

उनको देखते ही असहाय पड़ी गिड़गिड़ा रही लड़की के तेवर अचानक सख्त हो गए और उसके हाथों में पुलिस की रिवाल्वर लहराने लगी। अपने रिवाल्वर की नोक पर उसने नेताजी व कालिया को कवर कर लिया। दरोगा अमर सिंह ने उस लड़की को जोरदार सलूट दिया और सिपाहियों ने नेताजी व कालिया को हथकड़ियां पहना दीं।

वह लड़की जो डीएसपी श्रेष्ठा थी पुलिस की गिरफ्त में पड़े उन तीनों बदमाशों के पास आई और हंसते हुए बोली- 'हाँ! तो क्या कह रहे थे तुम लोग? हम तो सिर्फ बाराती हैं। दूल्हे आने वाले हैं। देखो! हमने दूल्हों को सरकारी गहने पहना दिए हैं और अब बड़ी शान से इनकी बारात निकाली जाएगी। तो अब चलें।'

कुछ देर बाद बड़ी शान से शहर से एक अनोखी बारात गुजर रही थी। कालिया व नेताजी सरकारी गहने पहने हुए आगे-आगे और पीछे-पीछे उनके गुर्गे। लोग खुश होकर इस अद्भुत नजारे का मजा ले रहे थे और मन ही मन डीएसपी श्रेष्ठा की सूझबूझ व बहादुरी की प्रशंसा भी कर रहे थे।

डीएसपी श्रेष्ठा के चेहरे पर अपनी योजना कामयाब होने की खुशी साफ झलक रही थी। अब गुंडों के आजाद होने का डर नहीं था, क्योंकि अब पीड़ित लड़की कोई और नहीं वह खुद थी। दरोगा अमर सिंह से मिलकर यह योजना उसने खुद ही बनाई थी और उसकी योजना के मुताबिक ही प्यादों के साथ ही असली मोहरे भी पकड़े गए थे। ■

दिलों में प्रेम की गंगा बहाने आ रही होली
सभी शिकवे गिलों को दूर करने आ रही होली
धरा से दूर होती जा रही सर्दी कड़ाके की
सभी के उर मे अति स्नेह को उपजा रही होली
किसी को याद कर लेना, किसी को याद आ जाना
बड़ा रंगीन है मौसम, हमारे पास आ जाना
सभी बागों मे अमराई है, मौसम खुशनुमा यारो
कसम तुमको है प्रीती तुम, मेरे ख्वाबों में आ जाना

-- आशुकवि नीरज अवस्थी

कहीं भूख से बेदम बचपन, कहीं जश्न में छलके प्याले
पत्थर होते इंसानों को, इंसां कर दे ऊपर वाले
चकाचौंध वालों को दिखता, काश जमाने में फैला तम
काश हमें अपने से लगते, औरों के दुख औरों के गम
नहीं छीनते लोग जहां में, हाथ दीन के लगे निवाले
भौतिकता की बढ़ी चाह में, पागल लगता है हर कोई
सब कुछ मुट्ठी में करने को, आतुर लगता है हर कोई
धवल वस्त्र में छुपा रहे हैं, लोग जगत के धंधे काले
बातें ऊँची नैतिकता की, लेकिन सोच गिरावट वाली
बाहर जितनी चकाचौंध है, अंदर दुनिया उतनी काली
भाव-भावनाओं से मतलब, कब रखते हैं दौलत वाले
चाँद सितारों की बातों में
गायब हैं रोटी की बातें
काश याद होती सत्ता को
दीन दुखी की काली रातें
सबको रोजी रोटी मिलती
होते नहीं अगर घोटाले

-- सतीश बंसल

हमने चरखा बदल दिया है बारूदी अंगारों से
बहुत छले गए हैं अब तक गांधीवादी नारों से
लोकतंत्र की मजबूरी में देश नहीं बिकने देंगे
उमर कन्हैया जिग्नेशों को यहाँ नहीं टिकने देंगे
जो-जो इनके साथी हैं गिन-गिन इन पर वार करो
संसद कोर्ट कचहरी से बाहर इनका प्रतिकार करो
देश बचाना ही होगा जेएनयू के गद्दारों से
गंगा जमुनी के खातिर वन्दे मातरम् धिक्कार बने
टुकड़े करने वाले नारे सत्ता का हथियार बने
भय व्याप्त जिसे है भारत में वह माननीय कहलाता है
जो भारत का अपमान करे सम्मान वही क्यों पाता है
इसका उत्तर लेना होगा अभिव्यक्ति के सरदारों से
रण एक शेष है अभी यहाँ राष्ट्रभक्त और गद्दारों में
आर्यों और अनार्यों में लोभी भोगी मक्कारों में
यह महा भयंकर रण होगा
सारे भोगी मिट जायेंगे
टुकड़े करने वालों के
टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे
देश मुक्त हो जाएगा
तब माननीय मक्कारों से

-- राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

मुक्तक

रात बीती अब सवेरा हो रहा
नींद टूटी है अंधेरा खो रहा
रात के तारे उजाले में छिपे
तू अभी सपनों की चाह सो रहा

तू रहा सोया तो जाने क्या हो
तू अभी चूका तो जाने क्या हो
स्वप्न सभी साकार करने जाग जा
तू अभी सोया तो जाने क्या हो

-- प्रदीप कुमार तिवारी

माटी से चंदन-सी खुशबू हरदम आती है
देश-भक्ति के नए तराने दुनिया गाती है
सत्य, अहिंसा, न्याय, धर्म की पावन धरती है
जहाँ हिमालय से सुरसरि की धारा बहती है
राम, कृष्ण, गौतम की गाथा मन को भाती है
ज्ञान दिया जिसने दुनिया को उसको वंदन है
सिखलाई मर्यादा जिसने रघुकुल-नंदन है
रामायण, गीता की वाणी अपनी थाती है
है बलिदानी माटी अपनी, गौरवशाली है
नारी पीछे नहीं तनिक भी दुर्गा-काली है
झांसी वाली उस रानी की याद न जाती है
फांसी के फंदे को चूमा, शीश कटाया है
भारतमाता को हर बेटा ऐसा भाया है
हर बलिदानी के चरणों पर सुमन चढ़ाती है
जब-जब सरहद ने ललकारा, फर्ज निभाया है
देश-विदेश में भी भारत
का मान बढाया है
गंगा, यमुना सरस्वती-
सी अलख जगाती है
देश-भक्ति के नए
तराने पूनम गाती है

-- डॉ पूनम माटिया

खुदा ने अगर दिल मिलाए न होते
तो तुम तुम न होते हम हम न होते
न यह हिम पिघलता न नदियाँ ये बहतीं
न नदियाँ मचलतीं न सागर में मिलतीं
सागर की बाहों में गर समाए न होते
न सागर यह तपता न बादल ये बनते
न बादल पिघलते न जलकन बरसते
जलकन धरा में गर समाए न होते
न रितुएं बदलतीं न ये फूल खिलते
न तितली बहकती न भौंरे मचलते
अगर प्यार के ये झरोखे न होते

-- डॉ रमा द्विवेदी

कान खोलकर सुन लो भैया, आज तिरंगा बोल रहा
देशभक्त चंदन की खातिर, गली-गली में डोल रहा
मुझको अब फहराना छोड़ो, जब मेरा सम्मान नहीं
मेरी खातिर मरने वालों का, लेता कोई संज्ञान नहीं
मुझको फहराने से होता, क्या सच्चा मुसलमान नहीं?
वंदेमातरम राष्ट्रगान से, क्या इनका है अपमान कोई?
केसरिया और धवल रंग संग, हरा रंग भी भाया है
हरे रंग को हरियाली सा, सदा मनों में समाया है
पर मुझको लगता है ऐसा, हिन्दू का कोई मान नहीं
उसकी इसी शहादत का, मिलता कोई सम्मान नहीं
मरने वाला अगर कोई जब अजमल, आमिर होता है
पप्पू के संग मफलर धारी, उस घर में जाकर रोता है
चंदन का बलिदान अमर है, भुला नहीं उसको देना
यादों में ही इस चंदन को,
माथे पर अपने लगा लेना
जब हरे रंग वालों को मुझसे,
मिलता है सम्मान नहीं
मुझको केसरिया रहने दो,
मेरा सच्चा सम्मान वही

-- पुरुषोत्तम जाजु

आया बसन्त आया बसन्त। फूल खिल गये अनन्त।
चहुँ ओर गन्ध बरषने लगी, मन की क्यारी महकने लगी
पुष्प गन्ध हो अनन्त। आया बसन्त...
मनुष्य मन हो हर्षित, मनुष्य तन हो गर्वित,
ऋतु आगमन में हो ऋतुराज कन्त। आया बसन्त...
डाल-डाल है गदराई हुई, पुष्प फल से शर्माई हुई
पक्षियों का डाल-डाल कलरव हो,
नव चेतना प्रखर हो। आया बसन्त...
पवन बहे लिए सुगन्ध, भ्रमरावलि गाये मन्द मन्द
पुष्प मन चंचल हो, कली मन गाये छन्द। आया...
हिम शिखर धवल हुए, मोर संग कोयल ध्वनि सबल हुई
धरा रज पीत हुई, मानव मन हुए सन्त। आया...
झूम झूम बोर इठलाये, पक्षी मन नाच नाच इतराये
सोन बालक करते किलोल, मन बहलाये अन्त। आया...
नेत्र मन पुलकित हो, भाव लिए मन चर्चित हो,
सागर लिए भाव गाये गीत चन्द।
बहकी-बहकी पवन गिरि से चले
उतर चाँदनी नभ से भू पर खिले
काम देव ढूँढे रति को
मन भाये है प्रसंग।
आया बसन्त आया बसन्त!

-- संतोष पाठक

हे अलि! पिया अबहुँ नहि आये!
यह अनंग का मीत निर्दयी, उर तंत्री झनकाये
मौसम ने ली है अंगड़ाई, चहुँ दिशि में हरियाली छाई
दशों दिशाएँ प्रेमसिक्त हैं, मेरी रैन विरह की आई
यह समीर सौरभमय शीतल, तन मन को झुलसाये
रातें जाग-जाग कटती हैं, काली नागिन सी डसती हैं
सबके संग सबके प्रियतम हैं, मेरे संग यादें रहती हैं
मेरा यौवन, मेरी रातें, कौन भला महकाये?
चहुँ दिशि प्रेंति प्रिया मुस्काई, मेरे हृदय उदासी छाई
यह पलाश, सेमल की लाली, मेरें अधरों तक न आई
मैं श्रंगार रहित नवयौवना, मुझको कौन सजाये?
पीत वस्त्र सरसों लहराये
पाकड़ लाल हुई शरमाये
महकी बौराई, अमराई,
बाग बाग में शुक, पिक आये
यह पपिहे की, पिया पिया धुन,
मन में अगन लगाये! हे अलि!

-- डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी

(पृष्ठ ४ का शेष)

अखबारों की भाषा

कर आया है या वह पहले से हिन्दी में पारंगत है। ऐसे कई संवाददाताओं से, विशेषकर नए संवाददाताओं से, मेरा संपर्क है जिन्हें हिन्दी भाषा और उसकी संरचना का ज्ञान कम है। इस संबंध में जनसंचार संस्थानों और विश्वविद्यालयों को गंभीरता से विचार करना होगा। साथ ही डॉ वेद प्रताप वैदिक, राहुल देव जैसे वरिष्ठ, सुधी और अनुभवी पत्रकारों को एक अभियान चलाना होगा, ताकि अखबारों में शुद्ध तथा मानक हिन्दी का प्रयोग हो सके और देवनागरी लिपि का सही एवं मानक रूप में इस्तेमाल किया जा सके। ■

(इक्कीसवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

एक अन्य बात युधिष्ठिर बहुत पहले से कहना चाहते थे। उसे कहने का यह उन्होंने उचित अवसर समझा- 'वासुदेव, हमारी माता और आपकी बुआ वहीं हस्तिनापुर में ही हैं और चाचा विदुर के निवास पर ही रह रही हैं। आप उनसे हमारा प्रणाम निवेदन करें और हमारी कुशल-क्षेम उनसे कहें। आप हमारे लिए उनका आदेश प्राप्त करें कि इन परिस्थितियों में हमारे लिए क्या करना उचित होगा। मैं स्वयं उनका आशीर्वाद लेने हस्तिनापुर चला जाता, परन्तु युद्ध की तैयारियों को देखते हुए और ऐसी परिस्थितियों में मेरा वहां जाना उचित नहीं होगा।'

'अवश्य, ज्येष्ठ भ्राता, मैं बुआ को आपका सन्देश कहूंगा और उनका आशीर्वाद आपके लिए प्राप्त करूंगा। मैंने भी दीर्घकाल से उनके दर्शन नहीं किये। अब बहुत दिन बाद उनसे जी भरकर बातें करूंगा।'

यह कहकर कृष्ण धीरे से मुस्करा दिये। उनकी मोहक मुस्कान से सभी परिचित थे, जो हर समय ही उनके मुख मंडल पर खेलती रहती थी। लेकिन जब वे सप्रयास मुस्कराते थे, तो सभी मंत्र-मुग्ध हो जाते थे। जिस मुस्कान ने कभी पूरे ब्रज को मोहित कर रखा था, वही मुस्कान उस समय कृष्ण के श्रीमुख पर खेल रही थी। उसने पांडवों को भी सम्मोहित कर लिया।

पांडव अपनी इस स्थिति से तब बाहर आये, जब कृष्ण ने युधिष्ठिर को लक्ष्य करते हुए यह कहा- 'सम्राट, क्या आप अपनी ओर से कौरवों को कोई सन्देश या प्रस्ताव देना चाहते हैं?'

'वासुदेव, मैं जो सन्देश या प्रस्ताव देना चाहता था वह हमने अपने पुरोहित धौम्य द्वारा पहले ही भेज दिया था। वह उनको स्वीकार नहीं हुआ। इससे अतिरिक्त मेरे पास कोई सन्देश या प्रस्ताव नहीं है। वहां जाकर क्या कहना है, यह आप स्वयं भली प्रकार जानते हैं। आप हमारे दूत की तरह नहीं, बल्कि प्रतिनिधि के रूप में जा रहे हैं। आप हमारी ओर से कोई भी प्रस्ताव रखने में सक्षम हैं। आप जो भी प्रस्ताव रखेंगे वह हमें पूर्णतया स्वीकार होगा, क्योंकि हम आपको ही अपना सबसे बड़ा हितैषी मानते हैं और हमें विश्वास है कि आप जो भी करेंगे, हमारे हित में ही होगा।'

कृष्ण जानते थे कि युधिष्ठिर का कथन सत्य है। इसलिए उन्होंने केवल सहमति में सिर हिलाया।

अन्त में युधिष्ठिर ने अन्तिम प्रश्न पूछ लिया- 'आप कब प्रस्थान करने वाले हैं, गोविन्द?'

'मैं आज ही दोपहर को यहां से चल देना चाहता हूं ताकि दिन रहते हस्तिनापुर पहुँच जाऊं। आप कोई सन्देशवाहक भेजकर कौरवों को मेरे आने की पूर्व सूचना दे दें।'

'अवश्य, भगवन्! मैं अभी सन्देशवाहक भेजता हूं। आप प्रस्थान की तैयारी करें।'

सहमति में कृष्ण का सिर हिलते ही सभी पांडव उनके कक्ष से चले गये।

पांडवों के जाते ही कृष्ण ने सात्यकि को बुलवाया। सन्देश मिलते ही वह उपस्थित हो गया। कृष्ण ने उनसे कहा- 'सात्यकि, मैं संधि प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जा रहा हूं। तुम्हें मेरे साथ चलना है।'

यह सुनकर जो प्रश्न पांडवों के मस्तिष्क में उपजे थे, वे ही सात्यकि के मस्तिष्क में आ गये। बोले- 'सन्धि प्रस्ताव? लेकिन दोनों पक्षों में दूतों का आदान-प्रदान तो हो चुका है। आप क्या कर पायेंगे? क्या दुर्योधन आपके कहने से युद्ध की इच्छा छोड़ देगा और पांडवों को इन्द्रप्रस्थ देना स्वीकार कर लेगा?'

कृष्ण उन सब बातों को दोहराना नहीं चाहते थे, जो उनके और पांडवों के बीच थोड़े समय पूर्व ही होकर चुकी हैं। इसलिए उन्होंने केवल इतना कहा- 'इन सब बातों पर विचार किया जा चुका है। मुझे सफलता की आशा बहुत कम है, लेकिन मैं केवल एक और प्रयास करना चाहता हूं। पूरी बातें मैं तुम्हें रास्ते में बताऊंगा।'

कृष्ण के इस कथन से सात्यकि की जिज्ञासाओं का समाधान हो गया और वह यात्रा की तैयारी करने चला गया।

कृष्ण को यात्रा की कोई विशेष तैयारी करने की आवश्यकता नहीं थी। सन्देशवाहक पूर्व सूचना लेकर हस्तिनापुर जा ही चुका था। कृष्ण को ले जाने वाला रथ भी तैयार हो गया होगा। लेकिन अभी एक व्यक्ति शेष था, जिससे मिले बिना कृष्ण कोई सन्धि प्रस्ताव हस्तिनापुर ले जाने की सोच भी नहीं सकते थे। वह थी उनकी मुंह बोली बहिन, द्रुपद की पुत्री और पांडवों की पत्नी कृष्णा, जो द्रोपदी और पांचाली के नाम से अधिक प्रसिद्ध थी।

कौरवों ने अपनी मूर्खता से उस सती नारी को अपनी राजसभा में अपमानित किया था और निर्वस्त्र करने की चेष्टा की थी। इस युद्ध का आयोजन वास्तव में कौरवों को उनकी इसी उद्दंडता का दंड देने और द्रोपदी के घोर अपमान का बदला लेने के लिए ही किया जा रहा था। द्रोपदी ने अपने बाल खींचने वाले दुःशासन के रक्त से बालों को धोने की प्रतिज्ञा कर रखी थी और जब तक यह प्रतिज्ञा पूरी न हो, तब तक बाल खोले ही रखने का निश्चय कर रखा था। उस प्रतिज्ञा को पूरा करने का दायित्व सभी पांडवों का था। इसी दायित्व को निभाने के लिए यह युद्ध होना था। इसलिए यदि उस युद्ध को टालने का कोई प्रयास किया जाता तो उसमें द्रोपदी की सहमति आवश्यक होती। इन बातों को ध्यान में रखकर ही कृष्ण द्रोपदी से मिलना चाहते थे। उससे मिले बिना चला जाना उसके प्रति अन्याय होता। अतः वे द्रोपदी के कक्ष में जाने के लिए निकले।

प्रतिहारी से उन्होंने अपने आने की सूचना द्रोपदी को देने के लिए कहा। कृष्ण के आने की सूचना मिलते ही द्रोपदी स्वयं दरवाजे तक आ गयी और कृष्ण को सादर लिवा ले गयी। उसकी खुशी छिपाये नहीं छिप रही थी। ऐसे अवसर बहुत कम आते थे जब उनके मुंहबोले भाई केवल अपनी मुंहबोली बहिन से ही मिलने आते हों। अधिकतर तो वे केवल सभी पांडवों से मिला करते थे और उनके साथ ही कभी-कभी द्रोपदी से भी उनकी बातें हो जाती थीं। यद्यपि वह उनके बीच में अधिक नहीं बोलती थी।

'भैया, आज प्रातः ही अपनी बहिन को कैसे याद कर लिया? क्या कोई नया समाचार आया है?' द्रोपदी के स्वर की प्रसन्नता छिपाये नहीं छिप रही थी।

'हां, कृष्णा। एक समाचार है तुम्हारे लिए।' रहस्यमयी मुस्कान के साथ कृष्ण ने कहा।

'क्या समाचार है, बताइए।'

'मैं सन्धि का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जा रहा हूं।'

यह सुनकर द्रोपदी की सारी प्रसन्नता वायुमंडल में विलीन हो गयी। वह घबराकर बोली- 'सन्धि प्रस्ताव? लेकिन सारे प्रस्ताव तो कौरवों ने अस्वीकार कर दिये हैं। अब आप क्या नया प्रस्ताव ले जा रहे हैं?'

'मैं कोई नया प्रस्ताव नहीं ले जा रहा हूं। मैं केवल शान्ति के लिए प्रयास करना चाहता हूं। मैं स्वयं कौरवों को समझाना चाहता हूं कि वे युद्ध का हठ छोड़ दें और पांडवों को इन्द्रप्रस्थ लौटा दें।'

'क्या दुर्योधन आपके कहने से यह प्रस्ताव मान लेगा?'

'मुझे इसकी आशा बहुत कम लगभग शून्य है। लेकिन शांति का प्रयत्न करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।'

'अगर दुर्योधन ने आपका प्रस्ताव मान लिया, तो मेरी इस प्रतिज्ञा का क्या होगा? क्या मेरे ये केश जीवनभर खुले ही रह जायेंगे?' द्रोपदी के स्वर में चिन्ता ही नहीं, कातरता भी थी।

'कृष्णा, तुम्हारे इन केशों की चिन्ता मुझे तुमसे अधिक है। तुम्हारे केश खुले नहीं रहेंगे, इसका वचन देता हूं। लेकिन मैं एक प्रयत्न करके देखना चाहता हूं, ताकि कोई यह न कहे कि कृष्ण ने समर्थ होते हुए भी युद्ध रोकने का कोई प्रयास नहीं किया। युद्ध में जो विनाश होगा, उसका दोष अकेले मुझ पर न आये, मैं यही चाहता हूं।'

'भैया, आप कुछ भी करिए। लेकिन मेरे इन खुले हुए केशों को याद रखना।' दुःख के आवेश में द्रोपदी के मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। लगता था कि वह अभी ही रो पड़ेगी।

कृष्ण ने कहा- 'कृष्णा, मेरे ऊपर विश्वास रखो। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि दुर्योधन कभी मेरे प्रस्ताव को नहीं मानेगा। तुम्हारी प्रतिज्ञा अवश्य पूरी होगी।'

(अगले अंक में जारी)

नीरव मोदी को बनाने वाला कौन है?

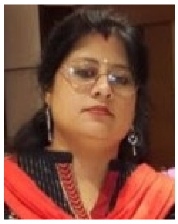

डॉ नीलम महेन्द्र

एक ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश से भ्रष्टाचार खत्म करने की बात कर रहे हैं तो दूसरी ओर देश के एक प्रमुख बैंक में ११४०० करोड़ रुपए का घोटाला सामने आया है। लोग अभी ठीक से समझ भी नहीं पाए थे कि हीरों का व्यवसाय करने वाले नीरव मोदी ने इतनी बड़ी रकम के घोटाले को अंजाम कैसे दिया कि रोटोमैक पेन कम्पनी के मालिक विक्रम कोठारी के भी ५ सरकारी बैंकों के लगभग ३५०० करोड़ का लोन लेकर फरार होने की खबरें आने लगीं हैं। हो सकता है कि आने वाले दिनों में ऐसे कुछ और मामले सामने आएँ, क्योंकि कुछ समय पहले तक बैंकों में केवल खाते होते थे जिनमें पारदर्शिता की कोई गुंजाइश नहीं थी और ई-बैंकिंग तथा कोर बैंकिंग न होने से जानकारियाँ भी बाहर नहीं आ पाती थीं।

लेकिन अब अन्तराष्ट्रीय स्तर पर बैंकों के लिए मौद्रिक नीतियों का निर्धारण करने वाले बैंक ऑफ इंटरनेशनल सैटलमेन्ट ने बैंकों में पारदर्शिता के लिए कुछ नियम बनाए हैं जिनके कारण बैंकों के सामने अपने खातों में पारदर्शिता लाने के सिवा कोई चारा नहीं बचा है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के भी इस साल जनवरी में सूचना देने के अपने फार्मेट में बदलाव करने से इस घोटाले का मार्च तक सामने आना वैसे भी लगभग निश्चित था। ऐसा नहीं है कि देश के किसी बैंक में कोई घोटाला पहली बार हुआ हो। नोटबंदी के दौरान बैंकों में जो हुआ वो किसी से छिपा नहीं है, आम आदमी बाहर लाइनों में खड़ा रहा और अन्दर से लेने वाले नोट बदल कर ले गए।

इसी प्रकार किसी आम आदमी या फिर किसी छोटे-मोटे कर्जदार के कर्ज न चुका पाने की स्थिति में बैंक उसकी सम्पत्ति तक जब्त करके अपनी रकम वसूल लेते हैं लेकिन बड़े-बड़े पूंजीपति घरानों के बैंक से कर्ज लेने और उसे नहीं चुकाने के बावजूद उन्हें नए कर्ज पर कर्ज देते जाते हैं। नीरव मोदी के मामले में, पीएनबी जो कि कोई छोटा-मोटा नहीं देश का दूसरे नम्बर का बैंक है, ने भी कुछ ऐसा ही किया। नहीं तो क्या कारण है कि २०११ से नीरव मोदी को पीएनबी से बिना किसी गैरेन्टी के गैरकानूनी तरीके से बिना बैंक के सॉफ्टवेयर में एन्ट्री करे लेटर ऑफ अन्डरटेकिंग (एलओयू) जारी होते गए और इन ७ सालों से जनवरी २०१८ तक यह बात पीएनबी के किसी भी अधिकारी या आरबीआई की जानकारी में नहीं आई?

हर साल बैंकों में होने वाले ऑडिट और उसके बाद जारी होने वाली ऑडिट रिपोर्ट इस फर्जीवाड़े को क्यों नहीं पकड़ पाई? क्यों इतने बड़े बैंक के किसी भी छोटे या बड़े अधिकारी ने इस बात पर गौर नहीं किया कि हर साल बैंक से एलओयू के जरिये इतनी बड़ी रकम जा तो रही है लेकिन आ नहीं रही है? यहाँ यह जानना रोचक होगा कि बात एक या दो एलओयू की नहीं बल्कि १५० एलओयू जारी होने की है। इससे भी अधिक रोचक तथ्य यह है कि एक एलओयू ९०-१८० दिनों में एक्सपायर हो जाता है और अगर कोई कर्ज दो साल से अधिक समय में नहीं चुकाया जाता तो बैंक के ऑडिटर्स को उसकी जानकारी दे दी जाती है तो फिर नीरव मोदी के इस केस में ऐसा क्यों नहीं हुआ? इतना ही नहीं एक बैंक का चीफ विजिलेन्स अधिकारी बैंक की रिपोर्ट बैंक के मैनेजर को नहीं बल्कि भारत के चीफ विजिलेन्स कमिशन को देता है लेकिन इस मामले में किसी भी विजिलेन्स अधिकारी को ७ सालों तक पीएनबी में कोई गड़बड़ दिखाई क्यों नहीं दी?

इसके अलावा हर बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की टीम में एक आरबीआई का अधिकारी भी शामिल होता है लेकिन उन्हें भी इतने साल इस घोटाले की भनक नहीं लगी? आश्चर्य है कि जनवरी २०१८ में यह घोटाला सामने आने से कुछ ही दिन पहले नीरव मोदी को इस खेल के खत्म हो जाने की भनक लग गई जिससे वो और उसके परिवार के लोग एक-एक करके देश से बाहर चले गए? लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि नीरव मोदी को नीरव मोदी बनाने वाला कौन है? क्या कोई किसान या फिर आम आदमी नीरव मोदी बन सकता है? जवाब तो हम सभी जानते हैं।

ऐसा नहीं है कि हमारे देश के बैंकों में कर्ज देने का सिस्टम न हो लेकिन कुछ मुठ्ठी भर ताकतों के आगे पूरा सिस्टम ही फेल हो जाता है। पीएनबी के एक डिप्टी मैनेजर गोकुलनाथ शेट्टी तथा सिंगल विंडो ऑपरेटर मनोज खरात को गिरफ्तार किए जाने के बाद यह जानकारी सामने आई है कि पीएनबी के कुछ और अफसरों की मिलीभगत से इस घोटाले को अंजाम दिया गया। स्पष्ट है कि सारे नियम-कानून धरे के धरे रह जाते हैं और करने वाले हाथ साफ करके निकल जाते हैं क्योंकि आज तक कितने घोटाले हुए, कितनी जाँचे हुईं, अदालतों में कितने मुकदमे दायर हुए, कितनों के फैसले आए? कितने पकड़े गए? कितनों को सजा हुई? आज जो नाम नीरव मोदी है कल वो विजय माल्या था। दरअसल आज देश में सिस्टम केवल बैंकों का ही नहीं, न्याय व्यवस्था समेत हर विभाग का फेल है इसलिए सिस्टम पस्त, लेकिन अपराधियों के हौसले बुलंद हैं।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए शार्टकट को चुनने वाला हर शख्स आज नीरव मोदी बनने के लिए तैयार बैठा है लेकिन जबतक सिस्टम के अन्दर बैठा व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह ईमानदारी से करेगा वो उसे नीरव मोदी नहीं बनने देगा। इसलिए नीरव मोदी जैसे लोग जो इस देश के अपराधी हैं, उस आम आदमी के गुनाहगार हैं जिनकी गाढ़ी मेहनत की कमाई से इस राकम को वसूला जाएगा। उससे अधिक दोषी तो सिस्टम के भीतर के वो लोग हैं जो नीरव मोदी जैसे लोगों को बनाते हैं। इसलिए जबतक इन नीरव मोदी के 'निर्माताओं' पर कठोर कार्यवाही नहीं की जाएगी, तबतक देश में नए चेहरों और नए नामों से और नीरव मोदी पैदा होते रहेंगे। ■

(पृष्ठ २४ का शेष)

बच्चों के मानसिक विकास का अद्भुत साधन

जरूरतों का तालमेल बैठाया जाये, आपका बच्चा अगर स्कूल बराबर जा रहा है, ट्यूशन भी पढ़ रहा है, घर पर भी पढ़ रहा है पर अभी भी परिणाम संतोषजनक नहीं हैं तो फिर यह सोचने का विषय है। यदि इस पर गंभीरता से ध्यान दिया जाये तो आप पायेंगे कि आपके बच्चे में कुछ कमी है, जैसे एकाग्रता, याददाश्त, अवलोकन और आत्म विश्वास आदि। मनुष्य का मस्तिष्क सीधे सीधे दो भागो में बँटा हुआ है, बायाँ और दायाँ। और दोनों ही भाग अपना अलग-अलग कार्य करते हैं, बायाँ भाग तर्क, भाषा, गणित और विश्लेषण (logic, language, mathematics, analysis) क्रिया करता है और दायाँ भाग तस्वीर, परिकल्पना, ताल और परिमाण (picture, imagination, rhythm and dimensions) आदि का नियंत्रण करता है।

कुछ वर्ष पूर्व चीन के ज्यूसॉन प्रान्त में यह शोध कार्य किया गया कि अबेकस द्वारा बच्चों में देखने-सुनने की शक्ति की आत्मक्रिया से इनका बौद्धिक विकास हो सकता है। अबेकस से सुनने, एकाग्रता, परिकल्पना, समझ, तस्वीर की याददाश्त को बल मिलता है और मानसिक तीव्रता से अंकगणित की गणना शीघ्रतम की जा सकती हैं। अबेकस शब्द का स्रोत ग्रीक शब्द ABAX को माना गया है, जिसका अर्थ है गणनापटल।

यह विश्वास किया जाता है यह लगभग ३०० वर्ष ईसा पूर्व मध्य-एशिया क्षेत्र में प्रयोग में था। चीन में यह लगभग सन् १२०० ईस्वी से प्रचलित है, और अब तो पूरे विश्व में बच्चों के मानसिक विकास के लिए इस कार्यक्रम को पूरी मान्यता मिल चुकी है। सही जानकारी रखने वाले सजग माता पिता इस अद्भुत तकनीक को अपने ४ वर्ष से १४ वर्ष तक के बच्चों के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए अपना रहे हैं।

अब तो हमारे देश में भी अबेकस सीखने के कई प्रशिक्षण केंद्र खुल गए हैं, जहाँ बच्चों को अबेकस की शिक्षा दी जाती है और इसे इस प्रकार संयोजित किया जाता कि इससे उनके दैनिक स्कूल कार्य में भी कोई बाधा नहीं पहुँचती। अबेकस सच में बच्चों के बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए एक सफल अद्भुत तकनीक सिद्ध हुई है। ■

आज की रात ये बोलो कि कटेगी कैसे
टूटा है दिल सांस सीने में रुकेगी कैसे
सो गईं थककर तन्हा ये बोझल आँखें
प्यास दीदार की आंखो की बुझेगी कैसे
पूछ लो दिल से कोई फैसला करना है तो
तेरी आदत हूं मैं ये आदत छुटेगी कैसे
अपने दिल से निकालोगे तो ये मुश्किल है
दामन ए गांठ हूं दामन से खुलेगी कैसे
मैं हूं आगाज तेरा और मैं अन्जाम तेरा
हां मेरे बिना तेरी दुनिया ये बसेगी कैसे
सच है 'जानिब' तेरे बिना जीना मुश्किल है
बिना तेरे अब हमारी जान बचेगी कैसे

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

अगर है प्यार तो इकरार भी हो
अजी फूलों का फिर उपहार भी हो
दबायें बात दिल की दिल में क्योंकर
मुहब्बत का कभी इजहार भी हो
तड़फ है प्यार की इस पार तो फिर
जरा सी ही सही उस पार भी हो
समय के साथ चलना है तो थोड़ी
तुम्हारे पाँव में रफ्तार भी हो
रमा इस जिंदगी का क्या भरोसा
सफल अपना यहाँ किरदार भी हो

-- रमा प्रवीर वर्मा

यूँ जिंदगी के वास्ते कुछ कम नहीं है वो
किसने कहा है दर्द का मरहम नहीं है वो
सूरज जला दे शान से ऐसा भी नहीं है
फूलों पे बिखरती हुई शबनम नहीं है वो
बेचेगा पकौड़ा जो पढ़ लिख के चमन में
हिन्दोस्तां के मान का परचम नहीं है वो
बेखौफ ही लड़ता है गरीबी के सितम से
शायद किसी अखबार में कालम नहीं है वो
मेहनत की कमाई में लगा खून पसीना
अब लूटिए मत आपकी इनकम नहीं है वो
तकदीर बना लेगा वो अपने ही करम से
इंसान की औलाद है बेदम नहीं है वो
मजबूरियों के नाम पे खामोश बहुत है
मेरे किसी भी काम से बरहम नहीं है वो
कोटे की सियासत से जरा बाज अभी आ
भारत की बुलन्दी का तो आगम नहीं है वो
दो चार के बदले में हजारों को मिटा दे
खुलकर कजा दे सामने सक्षम नहीं है वो
नापाक है दुश्मन तो सजा दीजिये भरपूर
कायर है अभी जंग का रुस्तम नहीं है वो

-- नवीन मणि त्रिपाठी

नजरें तुम्हारी गलत हैं और पहनावा मेरा गलत बताते हो
करते हो गुनाह तुम और गुनाह का दोषी मुझे ठहराते हो
जब मैं निकलती हूँ साड़ी पहन कर घर से बाहर समाज में
तुम बनकर बेशर्म कमर और पेट पर टकटकी लगाते हो
यदि मैं निकलती हूँ घर से बाहर सूट सलवार पहन कर
तब तुम अपनी नजरें मेरे कूल्हों और छाती पर टिकाते हो
जब कभी जींस पहनकर निकलती हूँ मैं अपने घर से बाहर
तब देख कर आहें भरते हो और माल मुझे तुम बतलाते हो
जब कभी पहन कर निकलती हूँ आधुनिक पहनावा मैं
तब सारी हद पार करके तुम मुझे रंडी तक कह जाते हो
तुम ही बताओ असली दोषी कौन है, गलती किसकी है?
अपने अंतर्मन से पूछना क्यों तुम मुझ पर ऊँगली उठाते हो
'सुलक्षणा' जानती है तुम्हारे पुरुष होने का अहम जिम्मेदार है
इसीलिये निकालकर कमी पहनावे में दोष अपना छिपाते हो

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

कहाँ तक हम छुपाएँ राज दिल का
जरा जानो हमारे हाल दिल का
तुम्हारी तरफ बढ़ते आ रहे हैं
सुनो सुनना, सुनाना हाल दिल का
तुम्हें होती खुशी है दूर जाओ
फसाना पर खतम होगा न दिल का
छुपेगा तू कहाँ तक दूर जाकर
लगा दें ढूँढने में दाँव दिल का
बस्ती दिल की बसा लेंगे जहां में
बड़ी यह सोच, था न कमाल दिल का
वफा करके मुकर जाना सुनो क्यों
कभी जाना, हुआ क्या हाल दिल का
जमाने में तुम्हीं तो हो निराले
सुनो, आया 'रश्मि' अब काल दिल का

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

धीरे-धीरे तुझको अपना बना ही लेंगे
देर लग सकती है पर तुझको मना ही लेंगे
बड़ी बेशकीमती होती है दिल की दौलत
कितना भी संभालो पर तुमसे चुरा ही लेंगे
आसमान पर बिखरे हुए चांद तारे को
तू कहे तेरे मन माफिक सजा ही लेंगे
इलाज मेरे मर्ज का सिर्फ तुम्हारे पास है
नीम हकीम से तो हमें सिर्फ दवा ही लेंगे
खैरियत पूछते हैं लोग मुझसे मेरी
खबर मिल जाए तेरी हम मुस्कुरा ही लेंगे
दुनिया हंसती है देख तमाशा मेरा
इश्क न हो जिसे वो लोग सता ही लेंगे
तेरी खुशबू तेरी यादों के सहारे हूं जिंदा
बस तू आ जाए एक घर तो बसा ही लेंगे

-- राजेश सिंह

दीप रिश्तों का बुझाया जो, जला भी न सकूँ
प्रेम की आग की ये ज्योत बुझा भी न सकूँ
हो गया जग को पता, तेरे मेरे नेह खबर
राज को और ये पर्दे में छिपा भी न सकूँ
गीत गाना तो मैं अब छोड़ दिया है ऐ सनम
गुनगुनाकर भी ये आवाज, सुना भी न सकूँ
वक्त ने ही की है चोट और हुआ जख्मी ए दिल
जख्म ऐसे किसी को भी मैं दिखा भी न सकूँ
बेरहम है मेरे तकदीर, प्रिया को लिया छीन
ये वो किस्मत का लिखा है जो मिटा भी न सकूँ
बाल सूरज हो गया अस्त है सूनी माँ की गोद
आँख सूखी, न गिली किन्तु रुला भी न सकूँ
खूनी चालाक था गायब किया सब औजारें
साक्ष्य कोई नहीं, पापी को फँसा भी न सकूँ
मिला है प्यार मुझे मांगे बिना यार मेरे
वो है 'काली' मेरा पाथेय, लुटा भी न सकूँ

-- कालीपद प्रसाद

बरगद की तरह अगाध प्रेम है उन पक्षियों में
बसाया है जिन्होंने खुलके अपनी बस्तियों में
स्वछन्द विचरण करने की जब भी हुई इच्छा
समीर को सहलाया इसने हार सी पत्तियों में
मोहताज नहीं है ये इंसा किसी शख्स का तब
जब खुद को उजाड़ के मिलाया हो हस्तियों में
डूबते को जब भी जरूरत जान पड़ी इसकी तो
काट शाख को पतवार बना लगाई किश्तियों में
ऊषा को थकाया हो जिसने बड़े ही अदब से
सांझ बनके सुलाया है मैंने तब उसे सर्दियों में
व्यार्त हर जीव की पीड़ा नैनों से छलकाई हो
पीड़ा मिली हो मूक जान उसे टनों मस्तियों में
ये हृदय पटल स्वागत को आतुर उसके खातिर
आँचल भीगा जिसका अनाथ की सिसकियों में

-- संदीप चतुर्वेदी 'संघर्ष'

बेटी बाबुल के दिल का टुकड़ा भैया की मुस्कान होती है
आँगन की चिड़िया माँ की परछाईं घर की शान होती है
खुशियों के पँख लगे होते हैं उसको घर के हर कोने में
रखती है अपनी निशानियां जो उसकी पहचान होती हैं
माँ की दुलारी पापा की लाडली भैया की नखरीली वो
रूठती झगड़ती इतराती हुई करुणा की खान होती है
भाई की राखी दूज का टीका मीलों दूर होकर भी जब
वो सजल नयनों से भेजकर हर्षाये तो सम्मान होती है
संध्या वंदन कर एक दिया आँगन की तुलसी पे रखती
मानो ना मानो बेटी तो सदा दिल का अरमान होती है

-- सीमा सिंघल 'सदा'

घुटन से संघर्ष की ओर

सरला अब उठ खड़ी हुई थी। यह विवाह उसके और गर्वित के माता-पिता की खुशी से हुआ था, लेकिन न जाने क्यों गर्वित उससे दूरी बनाये रखता है। न जाने उसे स्त्री में किस सौन्दर्य की तलाश थी। यह सोचकर उसके माथे पर दुःख की लकीरें उभर आईं। विवाह हुए अभी ज्यादा दिन नहीं हुए। पति का उसके प्रति यह व्यवहार, ताने, व्यंग्य, कटूक्तियों की मर्मपीड़क बौछार सुनते-सुनते उसका अस्तित्व छलनी हो गया है। यदि उसके पास वासनाओं को भड़काने वाली रूप राशि नहीं है, तो इसमें उसका क्या दोष है? गुणों के अभिवर्द्धन में तो वह बचपन से प्रयत्नशील रही है। बेचैनी से उसके कदम कमरे की दीवारों का फासला तय करने लगे।

आज निर्णय की घड़ी है। निर्णय की घड़ी क्या निर्णय हो चुका है। पति साफ कह चुके, 'मैं तुमको अपने साथ नहीं रख सकता।' उनकी दृष्टि ने शरीर के अलावा और कुछ कहाँ देखा? यदि देख पाते तो काश! बेचैनीपूर्वक टहलते-टहलते पलंग पर बैठ गयी।

अचानक उसने घड़ी की ओर देखा, शाम के ५.१५ हो चुके। अब तो वे आने वाले होंगे। नारी सदियों से एक वस्तु रही है, पुरुष के पुरुष हाथों का खिलौना।

तभी दरवाजे पर बूटों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। शायद मन में कुछ कौंधा। अपने को स्वस्थ-सामान्य दिखाने की कोशिश करने लगी। थोड़ी देर में सूटेड-बूटेड, ऊँचे, गठीले शरीर के एक नवयुवक ने प्रवेश किया। उसके मुखमण्डल पर पुरुष होने का गर्व था।

एक उचटती-सी नजर उस पर डालकर वह कुर्सी पर बैठा व प्रश्न दाग बैठा- 'हाँ तो क्या फैसला किया तुमने?' घुटन या संघर्ष में से वह पहले ही संघर्ष चुन चुकी थी। अतः उसने बन्धनों से मुक्ति पा ली।

-- पंकज 'प्रखर'

वेषभूषा

मैं और अम्बिका सैर कर रहे थे. हल्की-फुल्की बातें चल रही थीं. आजकल की वेषभूषा पर मैंने कहा- 'आजकल तो लड़कियों की वेषभूषा भी ऐसी हो गई है, कि कई बार तय ही नहीं कर पाते, कि अमुक लड़की है या लड़का.' अम्बिका हंस पड़ी.

आज अम्बिका का फोन आया- 'आंटी जी, आपने वह खबर पढ़ी? उस दिन आपकी बात पर मैं हंस पड़ी थी, लेकिन इस समाचार ने आपकी बात को सही सिद्ध कर दिया.'

'कौन-सी खबर बेटा?' मैंने पूछा.

'लड़का समझ डीयू स्टूडेंट को पीटा, 'लड़की हूं' सुनते ही भागे हमलावर'. अम्बिका का कहना था.

कैसी विचित्र विडंबना है कि लड़की को पिटाई से बचने के लिए कहना पड़े- 'मैं लड़की हूं!' तनिक रुककर अम्बिका ने कहा.

-- लीला तिवानी

पश्चाताप

भगमतिया टूटी खटिये पर बैठी खांसते-खांसते दुहरी हो गयी थी। खांसते-खांसते ही पानी की आस में घर में बहू की तरफ झांक भी लेती। बहू नीलम टूटे-फूटे घर में झाड़ू मारते हुए बड़बड़ाये जा रही थी, 'इस बुढ़िया ने तो नाक में दम कर रखा है। न मरती है, न चैन से जीने देती है। बच्चों को तैयार कराना और स्कूल में भेजना, फिर घर में झाड़ू-पोंछा क्या कम है? ऊपर से इन महारानी की जिम्मेदारी। काम पर भी जाना है।' बड़बड़ाती हुई नीलम जब तक पानी लेकर सास के पास पहुंची, तब तक उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

आनन फानन हरीश को उसके मां के गुजरने की खबर दी गयी जो कि गांव में ही आरा मशीन पर मजदूरी करता था।

पड़ोसियों व रिश्तेदारों की मौजूदगी में अंतिम संस्कार की विधियां पूरी कराई जा रही थीं। मृतात्मा की शांति के लिए मंत्रोच्चार के बीच पड़ोसी पंडित दीनानाथ ने हरीश से भगमतिया के निर्जीव शरीर को पानी पिलाने का निर्देश दिया।

पड़ोसी महिलाओं की झुंड में सुबक रही नीलम सोच रही थी- 'काश! मैंने यही पानी उसे कुछ देर पहले वक्त रहते पिला दिया होता तो शायद हरीश को उसके मृत शरीर को पानी देने की नौबत नहीं आती।' और उसका रुदन और तेज हो गया।

-- राजकुमार कांदु

हाथी के दांत

सना! हां! यही नाम था उसका। एक उभरती हुई लेखिका। उसकी लिखी कहानियां पाठकों को झकझोर देती थीं। नैतिकता, आदर्श व्यवहार अपनाने को प्रेरित करती उसकी रचनाओं में सामाजिक बुराइयों पर जम कर प्रहार किया जाता। पाठकों की जमकर तारीफ भी उसके हिस्से मिलती। आज उसने बुजुर्गों का सम्मान किये जाने का संदेश देते हुए एक बहुत ही बढ़िया कहानी पोस्ट की थी। पैदल ही घर की तरफ बढ़ती हुई सना मोबाइल पर पाठकों की तारीफ भरी प्रतिक्रियाएं पढ़कर गदगद थी। उसका पूरा ध्यान मोबाइल पर ही था कि अचानक उससे कोई जोर से टकराया और मोबाइल उसके हाथों से गिरते गिरते बचा। गुस्से से बिफरते हुए वह चीखी- 'बुड्ढे! खूसट! देखकर नहीं चल सकता क्या? अंधा है क्या?'

उसकी टक्कर से गिरा हुआ वह वृद्ध अपने हाथों को जमीन पर फैलाकर अपनी छड़ी ढूंढने की कोशिश करते हुए बोला- 'हां बेटी! अंधा ही हूँ! तुम्हें चोट तो नहीं लगी?'

-- राजकुमार कांदु

मैं पानी हूँ...

'क्या समझ रखा है मुझे? मर्द हूँ, इसलिए नीट पीता हूँ। मरद हूँ... मरद... आ...' ऐसे बड़बड़ाते हुए वह सो गया. रोज की तरह ही घरवालों के समझाने के बाद भी वह बिना पानी मिलाये बहुत शराब पी गया था.

कुछ देर तक यूं ही पड़ा रहने के बाद वह उठा. नशे के बावजूद वह स्वयं को बहुत हल्का महसूस कर रहा था, लेकिन कमरे का दृश्य देखते ही अचरज से उसकी आँखें फैल गयीं, उसके पलंग पर एक क्षीणकाय व्यक्ति लेटा हुआ तड़प रहा था. उसने उस व्यक्ति को गौर से देखा, उस व्यक्ति का चेहरा उसी के चेहरे जैसा था. वह घबरा गया और उसने पूछा, 'कौन हो तुम?'

उस व्यक्ति ने तड़पते हुए कहा, 'पानी...' और यह कहते ही उस व्यक्ति का शरीर निढाल हो गया. वह व्यक्ति पानी था, लेकिन अब मिट्टी में बदल चुका था.

उसी समय कमरे में उसकी पत्नी, माँ और बच्चों ने प्रवेश किया और उस व्यक्ति को देख कर रोने लगे. वह चिल्लाया, 'क्यों रो रहे हो?' लेकिन उसकी आवाज उन तक नहीं पहुंच रही थी.

वह और घबरा गया, तभी पीछे से किसी ने उसे धक्का दिया, वह उस मृत शरीर के ऊपर गिरकर उसके अंदर चला गया. वहां अँधेरा था, उसे अपना सिर भारी लगने लगा और वह तेज प्यास से व्याकुल हो उठा. वह चिल्लाया 'पानी!', लेकिन बाहर उसकी आवाज नहीं जा पा रही थी. उससे रहा नहीं गया और वह अपनी पूरी शक्ति के साथ चिल्लाया, 'पाऽऽनी!'

चीखते ही वह जाग गया, उसने स्वप्न देखा था, लेकिन उसका हलक सूख रहा था. उसने अपने चेहरे को थपथपाया और पास रखी पानी की बोतल को उठाकर एक ही सांस में सारा पानी पी लिया.उसके पीछे रखी शराब की बोतल नीचे गिर गयी थी, जिसमें से शराब बह रही थी बिना पानी की।

-- डॉ चंद्रेश कु छतलानी

मुक्तक

तुम्हारे ना पीछे जरूर कोई राज होगा
तुम इकरार न कर लो इसलिए इंकार होगा
में तो शहीद हो गया तुम्हारे प्यार में
अब तो तुम्हारी शहादत का इंतजार होगा

-- रवि प्रभात

राष्ट्रीय एकता और चाय

शरद सुनेरी

मैं एक असामाजिक-तत्व हूँ क्योंकि न शराब पीता हूँ और न ही चाय। चार लोगों में बैठने लायक आदमी नहीं हूँ। शरीफ लोग कहते हैं- 'चलो शराब से विरक्ति ठीक है, पर इस चाय ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, इतनी शराफत भी किस काम की? बड़े पिछड़े आदमी हो यार!' जब मुझे पिछड़ा कहकर छेड़ा जाता है तो मैं बड़ा खुश हो जाता हूँ कि चलो कहीं तो मैं पिछड़ा! शायद भविष्य में इसी आधार पर मुझे आरक्षण मिल जाए! अंग्रेज जाते-जाते दो चीज हमें विरासत में दे गए- भाषा के रूप में अंग्रेजी और पेय के रूप में चाय। दोनों से ही भारत आज तक पिंड नहीं छुड़ा पाया। चाय को लोग छोड़ना नहीं चाहते और अंग्रेजी लोगों को। दोनों ही भारत के मुँह लग चुकी हैं। किसी को भी ज्यादा मुँह लगाना अच्छी बात नहीं है। हमारे बुजुर्ग कह गए हैं, पर बुजुर्गों की बात सुनता कौन है इस देश में?

देश को एकता में बांधने के लिए कभी लोकमान्य तिलक जी ने सार्वजनिक स्तर पर गणेशोत्सव का आरंभ किया था। प्रधानमंत्री जी को सलाह है कि देश में पुनः भाईचारा और एकता बढ़ाने के लिए निःशुल्क चाय-सेवा आरंभ कर देनी चाहिए। उनका वैसे भी चाय से करीब का संबंध रहा है। शायद देश टूटने से बच जाए! सरकार को स्वतंत्र रूप से एक चाय मंत्रालय का निर्माण करना चाहिए, जो चाय पीनेवालों पर नजर रखेगा। सरकार चाहे तो चाय मुफ्त में बाँटे, पर चाय पीनेवालों पर हर बार चाय पीने का टैक्स लगाए। इससे देश को दो फायदे होंगे। एक तो सीधे अधिक राजस्व मिलेगा और निरीक्षण करने के कारण रिश्वतखोरी के नए आयाम खुल जाएँगे। इस प्रकार बेरोजगारी की समस्या को हटाने की दिशा में एक पहल की जा सकती है।

चाय पीना पराक्रम का कार्य है क्योंकि कई चाय पीनेवाले दिनभर में एक-एक कप करके लगभग दो-चार बाल्टी चाय पी जाते हैं। ऐसे पराक्रमी 'चाय-शिरोमणि' के पद को सुशोभित करने के हकदार होते हैं। ऐसी पराक्रमी आत्माओं को पद्मश्री से भारतरत्न तक दिया जा सकता है। लोगों में प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होगा तो देश का भला होला। सब क्रिकेट नहीं खेल सकते, सब गाना नहीं गा सकते, सबकी प्रतिभा एक-सी नहीं होती, पर सब चाय पी सकते हैं! 'सबका साथ-सबका विकास' का इससे अधिक सस्ता, सुलभ, सार्वजनिक और सार्वकालिक नुस्खा कोई माई का लाल नहीं दे सकता, यह मेरा दावा है।

चाय देश को, जी नहीं कर्मचारियों को, एकता के सूत्र में जोड़ती है। अधिकारियों को कर्मचारियों की एकता बिलकुल नहीं भाती। विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाया हुआ 'एकता में बल' का पाठ कार्यालय में ध्वस्त हो जाता है। यह मैंने कई बार अनुभव किया है। समझ नहीं आता पाठशाला में पढ़ाई जानेवाली एकता की शिक्षा अधिकारियों को कार्य रूप में पसंद क्यों नहीं आती? इस देश का अधिकारी वर्ग चाय पीनेवालों से डरता है। जो डर देवराज इन्द्र को तपस्या करनेवालों से हुआ करता था, वही डर अधिकारियों को चाय पीनेवालों की टोली से होता है। न जाने क्यों, जबकि वह जानता है कि यह टोली उसका कुछ नहीं उखाड़ सकती! ऐसे में एक कीड़ा उसे सबसे पहले काटता और डसता है- फूट डालो और शासन करो। यह गुरुमंत्र भी अंग्रेज दे गए थे। जो अधिकारियों के लिए ब्रह्मास्त्र का काम करता है। यह अस्त्र छूटा और सब चारों खाने चित! इसकी कोई काट नहीं बनी आजतक। बेचारे अधीनस्थ कर्मचारी झुंझलाते हैं और खिसियानी बिल्ली के समान बाल नोचते हैं क्योंकि ये उस क्षेत्र का खंभा भी नहीं नोंच सकते। उस खंभे पर भी अधिकारी का कब्जा जो होता है।

कई लोग चाय को बुराई के रूप में देखते हैं। मूर्ख हैं, मैं उन टुच्चों में से नहीं। चाय भारत की राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक है। हम सबसे अधिक चाय का निर्यात करते हैं। चाय ने हमें अंतर्राष्ट्रीय सम्मान दिया है। ऐसे में चाय के विरोध में बोलना, लिखना या पीने-वालों को रोकना राष्ट्रीय अपराध है। मैं एक देशभक्त हूँ, ऐसा घृणित पाप नहीं कर सकता। क्षमा करें! ■

रिकार्ड श्रृंखला या श्रृंखला का रिकार्ड

विनोद कुमार विक्की

एक बार फिर बिहार ने रिकार्ड कायम किया है। सामाजिक कुरीतियों को बहिष्कृत करने का नहीं बल्कि मानव श्रृंखला बनाने का। गौरतलब है कि पिछले साल भी शराबबंदी के खिलाफ मानव श्रृंखला का रिकार्ड बना था और लिम्का वर्ल्ड बुक में दर्ज भी हुआ।

शराबबंदी कानून भी बना साथ ही शराब के सामाजिक बहिष्कार हेतु मानव श्रृंखला भी बनी। नारे लगे, चुनाव प्रचार में उपलब्धि का एक टॉपिक भी बना। बावजूद इसके हर दिन कोई ना कोई शराब विक्रेता या उपभोक्ता पुलिस के हत्थे चढ़ ही जाते हैं।

चढ़े भी क्यों ना आखिर जिस बंदे को शराबयुक्त बिहार में शराब का ठेका खरीदने की औकात नहीं थी, आज नशा मुक्त बिहार में शराब तस्कर जो बन रहे हैं। चूंकि वर्तमान बिहार में शराब संजीवनी बूटी की तरह दुर्लभ है, सो इच्छुक लोगों को शराब की तलब ज्यादा होने लगी है, इसलिए कुकुरमुत्ते की तरह शराब कारोबारी भी बढ़ रहे हैं। जिसका प्रमाण है कि आए दिन कोई ना कोई 'रईस' पुलिस थाने की शोभा बढ़ाने पकड़े ही जाते हैं, जेल भी जाते हैं। हालांकि अधिकांश शातिर बच भी जाते हैं।

लेकिन आज तक ये देखने या सुनने में नहीं आया कि सामाजिक जागरूकता से किसी तस्कर या पियक्कड़ की अंतरात्मा स्वतः जगी हो और उन्होंने थाने में जाकर शराब सौंपते हुए ये प्रण किया हो कि अब शराब को 'ना छुएंगे ना चखेंगे और ना बेचेंगे'।

एक बार फिर हम बिहारवासियों ने मानव श्रृंखला बनाई। घंटों सड़कें जाम रहीं, लोगों एवं मरीजों को परेशानी हुई। कोई नहीं, कम से कम हाथ पकड़कर ये संकल्प तो लिया कि 'ना दहेज लेंगे और ना देंगे'।

ये भी क्या कम है कि एक बार फिर से न्यूज चैनल, पेपर की सुर्खियों में तो आए कि हम रूढ़िवादिता और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध इस कड़ाके की ठंड में भी सड़कों पर खड़े रहे, क्योंकि लोगों में जागरूकता इतनी प्रखर है कि ये लोग कानून से ज्यादा समाज सम्मत नियमों को तवज्जो देने लगे हैं।

किंतु इस सारे प्रकरणों में विचारणीय बात ये है कि ये मानव श्रृंखला लोगों या जनता के द्वारा नहीं बल्कि सरकार के द्वारा प्रायोजित थी। अब सरकारी आदेश हो और जनता कम से कम सरकारी कर्मचारी नहीं माने ऐसा कभी हुआ है। हाथों से हाथ पकड़ खड़े हो गए श्रृंखला व श्रृंखला का रिकार्ड बनाने।

कई जगहों पर ढोल-नगाड़े सहित नेताजी भी दहेज एवं बाल विवाह विरोधी राग गाते देखे गए। बड़े तो बड़े छोटे-छोटे बच्चें जिन्हें दहेज का अर्थ भी नहीं मालूम वे भी शामिल थे मानव श्रृंखला में, जबकि इस श्रृंखला की सार्थकता बच्चों के अभिभावक की सहभागिता से होती।

खैर कोई नहीं, इतना संदेश तो पूरे देश को मिला कि हम लोगों की आस्था कानून से ज्यादा मानवीय जागरूकता में है। हमारे नेताजी भी विधि और कानून बना कर सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की बजाय जन जागरूकता से इन विसंगतियों को दूर करने के लिए कृत संकल्पित हैं।

बहरहाल इस मानव श्रृंखला से कुछ लाभ यथा सबसे लंबी मानव श्रृंखला बनाने का विश्व रिकार्ड बिहार के खाते में आया, नेताजी एवं कार्यकर्ताओं की फोटो पेपर व न्यूज चैनल में आई, राजनीति के छल-प्रपंच से परे गरीब लड़कियों के पिता में एक सकारात्मक आस व उम्मीद तो दिखी।

किंतु इसका साइडइफेक्ट उन लड़कों के पिता या अभिभावक पर पड़ सकता है, जिनके विवाहयोग्य नौकरीशुदा कुंवारे लड़के घर पर पड़े हैं। उन्हें ऐसा लग रहा है मानो सरकार ने उसकी प्रॉपर्टी को कालाधन घोषित कर दिया है। ■

उरों के आसमान छूने में,
सुरों की सरिता में नहाने में
वक्त कितना है प्राय लग जाता,
कहाँ अहसास परम पद पाता
पता उस इल्म का कहाँ होता,
फिल्म की भाँति विश्व कब लखता
हकीकत लगता जो अनित्य रहा,
अच्युत से चित कहाँ है मिल पाता
चेतना फुरती चमन के पुष्पन,
भाव भौंरे को कभी आ जाता
स्वाद जब परागों का पा जाता,
नित्य प्रति वहीं रहे मँड़राता
मनों को तनों से हटाने में,
आत्म को अहं से फुराने में
शतायु जाती बीत बस यों ही,
जन्म कितने कभी हैं लग जाते
गुरु आते हैं और चल देते,
समझ हर किसी को कहाँ आते
प्रयोजन व्यस्त रहे वे लगते,
'मधु' के प्रभु के इशारे रहते

-- गोपाल बघेल 'मधु'

रे! पंछी अब उड़ चल, सूख गए हैं डाल पात
ढूँढ ठिकाना और कहीं, बची है केवल राख
मेघ की आस लिए हुए, बीत गई हैं कई रात
नीड़ बनाया जो हमने, वो भी हो गया खाक
चलने लगी सर्द हवाएं
नहीं हुई लेकिन बरसात
हे ईश्वर तुम ही सुन लो
अब तुम से ही है आस
क्या करूँ कहाँ जाऊँ
बच्चे भी हैं मेरे साथ

-- रमाकान्त पटेल

दोहे

नीर लिए आशा सदा, नीर लिए विश्वास।
जल से सांसें चल रही, देवों का आभास।।
अमृत जैसा है 'शरद', कहते जिसको नीर।
एक बूंद भी कम मिले, तो बढ़ जाती पीर।।
नीर बिना जीवन नहीं, अकुला जाता जीव।
नीर फसल औ' अन्न है, नीर 'शरद' आजीव।।
नीर खुशी है, चौन है, नीर अधर मुस्कान।
नीर सजाता सभ्यता, नीर बढ़ाता शान।।
जग की रौनक नीर से, नीर बुझाता प्यास।
कुंये, नदी, तालाब में, है जीवन की आस।।
सूरज होता तीव्र जब, मर जाते जलस्रोत।
घबराता इंसान तब, अनहोनी तब होत।।
नीर नहीं बरबाद हो, हो संरक्षित नित्य।
नीर सृष्टि पर्याय है, नीर लगे आदित्य।
नीर बादलों से मिले, कर दे धरती तृप्त।
बिना नीर के प्रकृति यह, हो जाती है तप्त।।
नीर पूज्य है, वंदगी, देता है आनंद।
नीर देव की जय करो, जो है ब्रम्हानंद।।

-- प्रो. शरद नारायण खरे

सब उसकी माया है/सुख-दुःख तो आते जाते हैं
जीवन की रफ्तार यही है/मन को अपने निश्चल रक्खो
सब खुशियों का अम्बार यहीं है
यहां कहीं धूप और कहीं हैं छाया
दुखिया हर इंसान है जग में
सबको नहीं मिलता मनभाया
जो भी है सब उस की`पा है
यह जीवन भी है उसी की रहमत
अपने बस में जो बन बाता
करते उतनी इंसान की खिदमत
फिर भी क्यों अक्सर जीवन में
गम के बादल घिर आते हैं
कौन है ऐसे लोग जहाँ में
जो हरदम जीवन में सुख पाते हैं

-- जय प्रकाश भाटिया

छोटी सी उम्र में दुल्हन बनी
हल्दी भी लगी मेंहन्दी रची
न कोई रिश्ते नाते समझी
न कोई रीति रिवाज जानी
रोज घर के आगे गीत संगीत
ढोल बजते ये न समझती
पढ़ना लिखना छोड़ कर ये बाबुल का घर छोड़ चली
सब रोते तो ये भी रोती, कोई हंसता तो ये हँस जाती
निश्छल नासमझ ये भोली, प्यारी प्यारी दुल्हन जाती
मन में इसके प्रश्न अनेक, पर ये कुछ न पूछ पाती
अजनबी घर मे पहुंचती, घूंघट में सबसे शर्माती

-- राजेश पुरोहित

सरहद कोई लकीर नहीं, है हर दुश्मनी का आगाज
जहाँ खिंच जाती है यह, बन जाती है वहाँ दीवार
दो मुल्कों की दोस्ती को, बना देती है बेजान
खून के मीठे रिश्तों को भी
चखा देती है नीम का स्वाद
भाईचारे के संदेश को भी
चटा देती है यह धूल
इसीलिए सरहद कोई लकीर नहीं
यह है हर दुश्मनी का आगाज

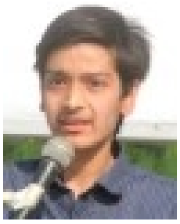

-- श्रीयांश गुप्ता

पल-पल की तू क्यों बात करता है रे मन
पलभर में ये पल अभी बदल जायेगा
पल भर की खबर न होगी फिर तुझे
पलभर में समा ये अभी बदल जायेगा
पल पल को रोक लो एक पल के लिए
पल का फिर पता नहीं किधर जायेगा
पल है तो पलभर को जी लेंगे हम
पल न हो तो ये मेहमां किधर जायेगा
पलभर का ये पल है दो पल के लिए
पलभर में ये जहाँ भी बिखर जायेगा
पल दो पल को याद रखेंगे हम तुझे
पल दो पल में न जानें किधर जायेगा

-- डॉ माधवी कुलश्रेष्ठ

इन्द्रधनुष के रंगों जैसा, मुझको रंग दो
होली के रंगों को, सतरंगी कर दो
राग-द्वेष, बैर-भाव, जड़ से मिटाकर
बासंती अवसर को, खुशियों से भर दो
हिन्दू-मुस्लिम की बात नहीं करता यारो
मानवता जन-जन के जीवन में भर दो
भूख-गरीबी, आतंकवाद की, आज जलाकर होली
शिक्षा के रंगों से, जीवन रोशन कर दो
धर्म-जाति और क्षेत्रवाद की, खेल रहे जो होली
उन देश के गद्दारों को, होली में स्वाहा कर दो

-- डॉ अ कीर्तिवर्धन

दुःख उसने कभी किसे कहा था
पीड़ा हर-पल झेल रहा था
जीवन भर स्वाधीन रहा
शासन भी है खेल रहा
अगणित बार धरा मुसकाई
हाड़-तोड़ जी जान लगाई
सुख कि खेती हरी-भरी थी, बरदों की जोड़ी खड़ी थी
हर-पल उसका साथ निभाते, खेत जोतते फिर घर आते
उसके दुःख में वो भी न खाते, बहुत मुश्किलें संकट आते
खाने के लाले पड़ जाते, सहते सहते दिन गुजारते
दुःख उसने क्या कभी कहा है, इतना क्या हमने सहा है?

-- हरीश कुमार 'धाकड़'

दिनकर का वंशज हूँ मैं श्रृंगार नहीं गा पाउँगा
चूड़ी कुमकुम बिंदिया वाले गीत नहीं लिख पाउँगा
मैं तो केवल गीत लिखूँगा भारत माँ के वन्दन के
मैं तो केवल गीत पढ़ूंगा भारत माँ के अभिनन्दन के
मैं छोटा सा कलमकार हूँ भारत का यशगान लिखूंगा
मैं मरते दम तक भी इस मिट्टी का सम्मान करूँगा
भारत फिर से विश्वगुरु हो यह उत्कट आकांक्षा है
जर्रे-जर्रे से भारत की जय हो यह उर की अभिलाषा है
लहराये भगवा अम्बर तक
विश्व विजय अभियान रहे
जब तक भाष्कर चन्दा चमके
तबतक यह हिन्दुस्थान रहे
जब तक एक भी हिन्दू रहे
तब तक यह हिन्दू राष्ट्र रहे

-- बाल भास्कर मिश्रा

जीवन है तो शरीर है
जीवन नहीं तो शरीर नहीं
जीवन का अंत हुआ तो
चिता और कब्र सज जाती हैं
जिंदा इंसानों को सीख देती हैं
मत बन हैवान/शैतान
मत बढ़ा भूख दौलत की सब क्षणभंगुर है
बस इतने में कर गुजारा कि
भूखा न सोना पड़े, नंगा न रहना पड़े
भूख बढ़ायेगा तो अन्यायी, अत्याचारी हो जायेगा
इंसान से शैतान बन जायेगा यादकर चिता और कब्र!

-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

(तीसरा और अंतिम भाग)

अहम् के गुलाम

कालीपद प्रसाद

तभी वह दोनों हाथों से मेरे चेहरे को पकड़कर मेरे ऊपर झुक गया था। मैं झटपट उठ बैठी थी और हलकी सी झिड़की भी दी, 'कोई देख लेगा तो क्या सोचेगा?' और मैं भागते-भागते कमरे में आगई थी। मेरे पीछे-पीछे प्रकाश भी भागकर कमरे में आ गया था। वो चाँदनी रात मेरी जिंदगी में एक अविस्मरणीय रात थी। बातों-बातों में और शरारतों में रात बीत गई थी। कभी दार्शनिक ढंग से प्रकाश कहता, 'रश्मि! तुमने कभी सोचा है कि इस दुनिया में कौन, कितने दिन किसी का साथ देता है?'

'नहीं तो, यह कैसा प्रश्न है?'

प्रकाश ने आगे कहा,' देखो एक समय ऐसा आता है जब चारों तरफ रिश्तेदार ही रिश्तेदार होते है फिर भी अकेलापन महसूस होता है। तब लगता है काश! कोई ऐसा होता जो अनकही बातों को समझ जाता।'

'मैं तो हूँ तुम अकेले कैसे हो? तुम तो कहते हो पति-पत्नी मिलकर एक इकाई बनती है।'

'इसी इकाई में से अर्थात पति-पत्नी में से कोई एक अगर चला जाय, तो दूसरे के लिए छोड़ जाता है सिर्फ अँधेरा।'

आज रश्मि को भी ऐसा महसूस हो रहा था कि उसके आगे सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा है... अकाट्य अँधेरा।' शायद प्रकाश को भी ऐसा लग रहा होगा' उसने सोचा। वह किस उद्देश्य से आई थी? क्यों आई थी? किसके भरोसे आई थी? किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। उसे लगा चारों तरफ से प्रकाश लुप्त हो चुका है, बचा है केवल अँधेरा, इस अँधेरे में वह अकेली है। सच में, प्रकाश के बिना जीवन में अँधेरे के सिवाय और कुछ नहीं बचा। भाई, भाभी के लिए तो वह बिलकुल परायी हो गई है। कई दिनों से सोच रही थी की प्रकाश को एक पत्र लिखे, परन्तु लिखे तो क्या लिखे? आते वक्त उसके प्रश्नों का ढंग से जवाब भी नहीं दिया था। यही सोच विचार में पड़ी थी कि माँ ने एक लिफाफा लाकर उसे दिया। अक्षर देखकर उसकी धड़कन बढ़ गई। अपने कमरे में जाकर अन्दर से दरवाजा बंद कर क्या। लिफाफा को जल्दी जल्दी फाड़कर उसके अन्दर से पत्र निकालकर पढने लगी।

'प्रिय रश्मि,

आशा है तुम अच्छी होगी। इस लम्बी अवधि में तुमने अपने आपको संभाल लिया होगा और शांति से भविष्य के बारे में विचार किया होगा। मुझे नहीं मालूम की तुमने क्या निर्णय लिया है। मेरे साथ रहते हुए कई अवसर पर तुम्हें बहुत कष्ट हुआ होगा, परन्तु सच मानो मेरा इरादा कभी भी तुम्हें कष्ट पहुँचाने का नहीं था। इसके वावजूद भी यदि जाने अनजाने में मैं तुम्हे दुःख दिया है तो मुझे क्षमा कर देना। तुम्हारे जाने के बाद जिंदगी रुक सी गई है। खैर, तुम जहाँ रहो खुश रहो, यही कामना है मेरी। मेरा तबादला इंदौर हो गया है। दश जनवरी को रात्रि पौने नौ बजे बिलासपुर-इंदौर एक्सप्रेस से मैं जा रहा हूँ। वहाँ जाकर मैं अपना पता तुम्हें भेज दूँगा। अपनी निर्णय की सुचना उस पते से भेज देना। अगर तुम कहो तो मैं तुम्हें लेने आ जाऊँगा। अपना ख्याल रखना। तुम्हारे इन्तजार में।

तुम्हारा -- प्रकाश'

पत्र पढ़कर पिंजड़े में बंद पंछी की भांति रश्मि छटफटाने लगी। अब क्या करे? आज आठ तारीख है। दस को वह जा रहा है। अभी तक तो वह द्विविधा में थी परन्तु प्रकाश के पत्र ने तो उसे रास्ता दिखा दिया। उसने भी जल्दी निर्णय ले लिया। एक टुकड़ा कागज में कुछ लिखा और लिफाफा में बंद करके रख दिया। प्रकाश सुबह से ही पैकिंग में व्यास्त था। वैसे तो उसके आफिस के दो सहायक पैकिंग का सभी काम कर रहे थे, परन्तु उसे बार बार रश्मि की याद आ रही थी। अगर रश्मि होती तो खुशी कुछ और होती। पैकिंग समाप्त कर उसने सभी सामान दो सहयोगियों के साथ स्टेशन रवाना कर दिया और खुद फ्रेश होने बाथरूम में घुस गया।

फ्रेश होने के बाद सोफे पर बैठकर उसे लगा कि कुछ छूट गया है। खाली घर जैसे उसके दिल में भी सूनापन घर कर गया। उसे ऐसे लगने लगा कि वह कुछ खोकर जा रहा है। वह आँख मूंदकर आराम करना चाहता था परन्तु आँख मूंदते ही एक चित्र उभर आया 'रश्मि... रश्मि... रश्मि...!' उसने अनुभव किया कि जब जब वह विशाल जन समूह के अन्दर से गुजरा, वहाँ रश्मि की कमी महसूस हुई, एक जोड़ी प्रेमाशिक्त आँखों की कमी महसूस हुई। आज भी प्रकाश को वही अनुभूति हो रही थी। मनुष्य कभी कभी झूठे अभिमान में यह भूल जाता है कि जीवन की गाडी तभी आगे बढती है जब दोनों पहिये साथ साथ चलते हैं। यदि एक रुक जाती है तो दूसरा उसके चारों तरफ घूमने लगता है, गाड़ी कभी आगे नहीं बढती। रश्मि और प्रकाश के साथ भी यह बात शत प्रतिशत लागू थी। उनकी जीवन रूपी गाड़ी रुक गई थी। दोनों दिल से चाहते थे कि दोनों फिर से मिलें, पर अभिमान उन्हें मिलने नहीं दे रहा था। आठ बीस पर गाडी आ गई। प्रकाश के आफिस के कुछ मित्र उन्हें छोड़ने आये थे। उनकी देखरेख में सहायकों ने सामान गाडी में चढ़ा दिया। प्रकाश भी सब सामान एक-एक कर खुद देख लिया। गाड़ी छोड़ने का टाइम हो गया था। गाड़ी ने सीटी बजा दी थी। प्रकाश दोस्तों के गले मिलकर विदा होकर दरवाजे पर खड़ा हो गया।

गाड़ी चलना शुरू ही हुई थी कि उसकी नजर दौड़कर आती हुई रश्मि पर पड़ी। एक हाथ में एक छोटी सी अटैची और दूसरे हाथ से साड़ी सँभालती हुई आ रही थी। अचानक दोनों की आँखें मिली। जो कुछ कहना था शायद एक ही नजर में दोनों कह डाले। रश्मि दौड़कर गाड़ी के पास आई तो प्रकाश ने हाथ बढ़कर उसे गाड़ी के अन्दर खींच लिया।

उसे पकड़कर प्रथम श्रेणी के केबिन में जाकर दरवाजा अन्दर से बंद कर दिया। प्रकाश ने रश्मि का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, 'रश्मि मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम मुझे गलत नहीं समझोगी!'

'फिर तुम लेने क्यों नहीं आये?' रश्मि ने अभिमान में पूछा।

'शायद यही मेरी गलती थी' कहते हुए उसने रश्मि को अपनी ओर खींच लिया तो रश्मि अनायास ही उसके सीने में अपना मुहँ छुपाकर फफककर रो पड़ी। अभिमान के बादल आंसू बनकर बह गए। दिल का आकाश निर्मल हो चुका था। बहुत दिनों के बाद वे एक दूसरे के दिल की सच्ची धड़कन महसूस कर रहे थे। गाड़ी तब तक गति पकड़ चुकी थी. फिर अपनी गति की यौवन में हिलती-डुलती मस्ती में आगे बढती गई अपनी मंजिल की ओर।

(समाप्त)

(पृष्ठ २५ का शेष)

देश में दोहरी कानून व्यवस्था क्यों?

नेता अंगूठा छाप हो तो भी भारत का फायनेंस मिनिस्टर बन सकता है। लेकिन तुम्हें बैंक में मामूली नौकरी पाने के लिए ग्रेजुएट होना जरूरी है। नेता यदि अनपढ़-गंवार और लूला-लंगड़ा है, तो भी वह आर्मी, नेवी और ऐयर फोर्स का चीफ यानि डिफेन्स मिनिस्टर बन सकता है। लेकिन तुम्हें सेना में एक मामूली सिपाही की नौकरी पाने के लिए डिग्री के साथ १० किलोमीटर दौड़कर भी दिखाना अनिवार्य है।

और तो और जो खुद दसवीं तक पढ़ा हो वो नेता देश का शिक्षामंत्री बन सकता है। सरकारी कर्मचारी ३० से ३५ वर्ष की संतोषजनक सेवा करने के उपरांत भी पेंशन का हकदार नहीं हैं। जबकि यहां मात्र एक दिन के लिए विधायक/सांसद बन जाने के बाद उन्हें आजीवन पेंशन की व्यवस्था हमारे इसी भारतीय कानून व्यवस्था की देन हैं। यह कहाँ का न्याय है। नेता और जनता, दोनों के लिए एक ही कानून होना चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा कि सिर्फ कानून व्यवस्था एकदम खराब है, अब इसका कुछ नहीं हो सकता है, जनता के हित में कानून बनाया जाता है। क्या तुम्हें लगता है कि यह उपरोक्त कानून व्यवस्था ठीक है?'

दादा की बातें सुनकर मैं भी आश्चर्य में पड़ गया। मैंने कहा, 'दादा, फिर हमें इस व्यवस्था को बदल देना चाहिए।' दादा ने कहा, 'बेटा हम सब जिनको अपनी आवाज बनाकर संसद, राज्यसभा भेजते हैं, यह उनकी नैतिक जिम्मेदारी है कि वे जनता की सेवा और हित के लिए सदन में अपनी आवाज बुलंद करके इन समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करें। यह हम नहीं बदल सकते।' ■

बढ़ता वजन - समस्या और समाधान

विजय कुमार सिंघल

अधिक वजन आजकल की आम समस्या है। इसका मुख्य कारण है हमारी जीवन शैली में आये नकारात्मक परिवर्तन। हम अधिक से अधिक सुख-सुविधाओं के चक्कर में पहले अपने स्वास्थ्य का सर्वनाश कर डालते हैं, फिर स्वास्थ्य बनाने के लिए डॉक्टरों और अस्पतालों के चक्कर काटते हैं। अधिक वजन या मोटापा या लटका हुआ पेट इन समस्याओं में सबसे ऊपर है। इसके कारण भले ही मनुष्य का शरीर भरा-भरा लगता हो, लेकिन वास्तव में यह बीमारी ही है। यह न केवल स्वयं बीमारी है, बल्कि अनेक बीमारियों का कारण भी है। मोटापे के कारण उच्च रक्तचाप (हाई बीपी), मधुमेह (डायबिटीज), संधिवात (गठिया), दमा (अस्थमा) जैसी बीमारियाँ भी धीरे-धीरे अपने आप विकसित हो जाती हैं, जिनके कारण व्यक्ति की आयु क्षीण होती रहती है।

गलत जीवन शैली मुख्यतः दो रूपों में अपना कुप्रभाव डालती है- शारीरिक श्रम की कमी और अनुचित खान-पान। पहले शारीरिक श्रम को लें। हम पैदल नहीं चलते, वाहनों का अधिक उपयोग करते हैं। सीढ़ियाँ तब तक नहीं चढ़ते उतरते, जब तक बिल्डिंग की लिफ्ट खराब न हो जाये। रात को देर तक जगे रहते हैं और सुबह देर तक सोते रहते हैं। व्यायाम नहीं करते, जो समय व्यायाम को देना चाहिए, वह बिस्तर में पड़े रहकर या चाय पीते हुए गुजार देते हैं।

खान-पान के बारे में भी ऐसी ही गलतियाँ होती हैं। घर के बने हल्के और सुपाच्य सात्विक भोजन के बजाय बाजार का भारी तामसी भोजन करना अधिक अच्छा समझते हैं। फलों के रस, दूध और मठा (छाछ) जैसे सात्विक पेयों को छोड़कर चाय, कॉफी और कोल्ड ड्रिंक जैसे हानिकारक पेय पीते हैं। भोजन भी गलत समय पर करते हैं, जिससे उसको पचने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता।

अधिक वजन जितना खराब रोग है, उतना ही सरल है इसका जाना अर्थात् वजन को कम करना। इसके लिए किसी दवा की नहीं, बल्कि आपकी इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। ऊपर जीवन शैली की जो गलतियाँ बतायी गयी हैं, यदि उनको दूर कर लिया जाये, तो मोटापे और वजन से छुटकारा पाना बहुत ही साधारण बात रह जाती है। यदि आप जीवन शैली की गलतियों को दूर नहीं करते, तो दुनिया की कोई ताकत आपका मोटापा दूर नहीं कर सकती, चाहे आप कितनी भी दवाइयाँ खा लें या जिम के चक्कर लगा लें।

इसलिए अधिक वजन से छुटकारा पाने के लिए अपनी जीवन शैली की कमियों का पता लगाइये और उनको दूर कीजिए। सम्भव है कि आप कहें कि देर रात तक जगे बिना हमारा काम नहीं चलेगा। ऐसी स्थिति में आपको अपने भोजन का समय इस प्रकार निर्धारित करना चाहिए कि सोने के पहले कम से कम दो-ढाई घंटे का समय आपको मिल जाये। अधिक मिले तो अधिक अच्छा। आप चाहे कितने भी व्यस्त हों, नित्य प्रातः या सायंकाल कम से कम ४५ मिनट और अधिकतम एक घंटे का समय व्यायाम के लिए अवश्य निकालिए। इस समय अपनी रुचि का कोई भी ऐसा व्यायाम करें, जिससे आपको पर्याप्त पसीना आ जाये और थोड़ी थकान हो जाये। व्यायामों के बारे में मेरी 'स्वास्थ्य रहस्य' पुस्तिका और लेखों से सहायता लें या मुझसे पूछ लें। इसके अलावा अवसर मिलते ही आपको पैदल चलना और सीढ़ियाँ चढ़ना-उतरना चाहिए। वाहन का प्रयोग अति आवश्यक होने और समय बचाने के लिए ही करें।

अब आइये खान-पान पर। यदि आप सोचते हैं कि मनचाहा खाते-पीते रहें और व्यायाम भी करते रहें तो वजन ठीक हो जाएगा, तो आप गलत हैं। व्यायाम जितना महत्वपूर्ण है, उचित खान-पान उससे कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए यदि आपका खान-पान गलत है, तो उसे तत्काल सुधारने की आवश्यकता है। सबसे पहले तो ऐसी चीजों का पूरी तरह त्याग कर दीजिए, जो पचने में भारी और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, जैसे- चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक, माँस, मछली, चीनी, अंडा, शराब, सिगरेट, तम्बाकू, पान मसाला, डिब्बाबन्द खाद्य, बिस्कुट आदि। ये वस्तुएँ जीवन के लिए बिल्कुल भी आवश्यक नहीं हैं। इनके अलावा मिठाई, चाकलेट, नमक, गुड़, मिर्च-मसाले, तेल, खटाई, पकवान, अचार, तली-भुनी चीजें आदि बहुत कम मात्रा में आवश्यक होने पर ही लीजिए। आपके भोजन में सलाद, अंकुरित अन्न, हरी सब्जी, फल, दूध, दही, छाछ आदि का समावेश होना चाहिए।

भोजन की मात्रा और समय भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक पुरानी कहावत है कि नाश्ता खुद करो, लंच दोस्त के साथ शेयर करो और डिनर दुश्मन को खिला दो। इसके अनुसार हमारा प्रातःकालीन जलपान अधिक होना चाहिए, दोपहर का भोजन कम और रात्रि का भोजन बहुत कम रहना चाहिए। अधिक वजन वाले लोगों के लिए यह कहावत एक मार्गदर्शक की तरह है। रात्रि भोजन यदि हो सके तो केवल फल और सलाद का ही करना चाहिए। आवश्यक हो तो कुछ सूखे मेवे भी लिये जा सकते हैं।

प्रातःकालीन जलपान व्यायाम और स्नान के बाद ही करना चाहिए। दोपहर का भोजन उसके लगभग ५ या ६ घंटे बाद और रात्रि का भोजन सोने से ३ घंटे पहले कर लेना स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। इस प्रकार यदि आप ६ बजे उठते हैं और रात्रि १०-१०.३० बजे सोते हैं, तो जलपान ८-८.३० बजे, लंच १.३०-२ बजे तथा रात्रि भोजन ७.३०-८ बजे कर लेना सबसे अच्छा है। अपने सोने और उठने के समय के अनुसार आप इसे निर्धारित कर सकते हैं।

वजन घटाने के लिए आपको पर्याप्त जल भी पीना चाहिए। मौसम के अनुसार नित्य ३ लीटर से ४ लीटर तक जल अवश्य पियें। यह अन्य पेयों के अतिरिक्त होना चाहिए।

यदि इन उपायों का पालन किया जाये तो किसी भी व्यक्ति का वजन सरलता से एक महीने में दो किलो तक कम हो सकता है। इससे अधिक तेजी से वजन घटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जैसे-जैसे आपका वजन कम होगा, वैसे-वैसे आपकी स्वास्थ्य सम्बंधी अन्य समस्याएँ भी गायब होती जायेंगी और आप स्वयं को बहुत स्वस्थ अनुभव करेंगे।

यदि आप कुछ शीघ्रता से वजन कम करना चाहते हैं तो आपके लिए साप्ताहिक उपवास या रसाहार करना अधिक अच्छा रहेगा। इसका तात्पर्य है कि सप्ताह में किसी एक दिन आप या तो केवल जल पीकर रहें या उसके साथ तीन-चार बार रस भी पियें। इससे न केवल आपकी खान-पान की गड़बड़ियों का परिमार्जन हो जाएगा, बल्कि वजन के साथ-साथ सभी शारीरिक बीमारियों से भी मुक्ति मिलेगी। प्रारम्भ में आपको उपवास या रसाहार से कुछ बेचैनी होगी, लेकिन यदि आप उसे सहन कर जायें, तो फिर सरल हो जाएगा। सप्ताह में एक बार उपवास या रसाहार करने से ऐसे व्यक्तियों का वजन भी कम हुआ है, जिनका किसी अन्य उपाय से नहीं घट पाया था। उपवास के बारे में मेरे एक अन्य लेख की सहायता लें। ■

(पृष्ठ ५ का शेष) **तमिल और संस्कृत...**

तमिल के प्रसिद्ध कवि भारतियार की काव्य में भी संस्कृत शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। तमिलनाडु के प्रसिद्ध संगम काल के साहित्य में संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों प्रभाव स्पष्ट रूप से मिलता है।

संस्कृत भाषा और विश्व की अन्य भाषाओं में सम्बन्ध सिद्ध करने के लिए पूर्व में कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जैसे पंडित धर्मदेव विद्यामार्तंड द्वारा रचित वेदों का यथार्थ स्वरुप, Sanskrit- The Mother of all World Languages, पंडित भगवद्दत्त द्वारा लिखित भाषा का इतिहास आदि। संस्कृत को विश्व की समस्त भाषाओं की जननी सिद्ध करने के लिए अनुसन्धान कार्य को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। 'फूट डालो और राज करो' की विभाजनकारी मानसिकता का प्रतिउत्तर सम्पूर्ण देश को हिंदी भाषा के सूत्र से जोड़ना ही है। यही स्वामी दयानंद की मनोकामना थी। आर्यसमाज को भाषा वैज्ञानिकों की सहायता से रोबर्ट काल्डवेल्ल की पुस्तक की तर्कपूर्ण समीक्षा छपवाकर उसे तमिलनाडु में प्रचारित करवाना चाहिए। ऐसा मेरा व्यक्तिगत मानना है। ■

दर्द के आसपास रहने दे,
थोडा दिल को उदास रहने दे
कोई कातिल नहीं तुम्हारे सिवा
बेसबब ये तलाश रहने दे
अपने हिस्से में तीरगी ही सही
उनके हिस्से उजास रहने दे
छोड़ दो कल पे कल जो होना है
जिन्दगी बस कयास रहने दे
हो समंदर भी तेरे अंदर पर
एक कतरे की प्यास रहने दे
तेरे जमीर से 'जय' वाकिफ है
तन के उजले लिबास रहने दे

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

राज अभी कई गहरे बाकी हैं
टूटने को ख्वाब सुनहरे बाकी हैं
पकड़े गए हैं लुटेरे कुछ ही
अभी तो कितने चेहरे बाकी हैं
इक नल ही पकड़ा है पाप का
अभी सागर नदिया नहरें बाकी हैं
इक जरा-सी हलचल में लड़खड़ा गए
अभी तो सुनामी लहरें बाकी हैं
यूँ ही लिखा है 'मोजू' ने बैठे ठाले
अभी तो गजलें औ बहरें बाकी हैं

-- मनोज डागा 'मोजू'

मटकू गदहा आलसी, सोता था दिन-रात
समझाते सब ही उसे, नहीं समझता बात
मिलता कोई काम तो, छुप जाता झट भाग
खाता सबके खेत से, चुरा-चुरा कर साग
बीवी लाती थी कमा, पड़ा उड़ाता मौज
बैठाये रखता सदा, लफंदरों की फौज
इक दिन का किस्सा सुनो, बीवी थी बाजार
मटकू था घर में पड़ा, आदत से लाचार
जुटा रखी थी आज भी, उसने अपनी टीम
खिला रहा था मुफ्त में, दूध-मलाई, क्रीम
उसके सारे दोस्त थे, छँटे हुए बदमाश
खेल रहे थे बैठ के, चालाकी से ताश
मौका बढ़िया ताड़ के, चली उन्होंने चाल
मटकू को लड्डू दिया, नशा जरा सा डाल
जैसे ही मटकू गिरा, सुध-बुध खो बेहोश
शैतानों पर चढ़ गया, शैतानी का जोश
सारे ताले तोड़ के, पूरे घर को लूट
बोरी में कसके सभी, लिये फटाफट फूट
बीवी आई लौट के, देखा घर का हाल
रो-रो के उसका हुआ, हाल बड़ा बेहाल
मटकू को ला होश में, बतला के सब बात
मारी उसको खींच के, पिछवाड़े पर लात
मटकू भी रोने लगा, पकड़-पकड़ के कान
नहीं दिखाऊंगा कभी, ऐसी झूठी शान
सीख लिया मैंने सबक, पड़ा चुकाना दाम
होता उल्टे काम का, गलत सदा परिणाम

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

शहर में रेत के सागर तलाश करती हूं
हां मैं प्यासी हूं पानी तलाश करती हूं
खो गया जाने कहां मैकदा औ साकी
डूबती दरिया में साहिल तलाश करती हूं
पिया जो बूंद प्यास जवां हो गई साहिब
सामने जाम है प्याला तलाश करती हूं
दिख गई जो किरन आस की यारो
अंधेरे शहर में उजाला तलाश करती हूं
न पूछो शुष्क होठों का आलम जानां
ओस की बूंदों में अमृत तलाश करती हूं
न होता आंखों से दीदार तो अच्छा था
चेहरों में उसका चेहरा तलाश करती हूं
हाथ थामा तो था उम्र भर को साहिब
सेहरों में हमसफर अपना तलाश करती हूं
लगे जो ठोकर मुझे गिर न जाऊं कहीं मैं
उठा ले जो मुझे वो रहबर तलाश करती हूं
वीरान है महफिल मेरी वीरान हैं गलियां
भरे बज्म में शोरोगुल तलाश करती हूं
कौन अपना यहां कौन हो रहा बेगाना
गैरों के शहर में अपना तलाश करती हूं

-- प्रीती श्रीवास्तव

मन के उपजे कुछ भावों पर, कुछ भी लिखना काव्य नहीं है
दर्द करे ना जिसमें बातें, जीवन वह संभाव्य नहीं है
आहट के पीछे से आते, भावों का कुछ भान नहीं है
मन में उपजी कितनी पीड़ा, पीड़ा का अनुमान नहीं है
महाकाश के महामरण का, दुनिया को पहचान नहीं है
अखिल विश्व ने जान लिया है, कवि बनना आसान नहीं है
शब्द पिरोना उसमें जीना, सबका यह सौभाग्य नहीं है
लहूँ दिखा है आँखों में पर, जीवन का अहसास नहीं है
सपने आँखों में पलते पर, सपनों का इतिहास नहीं है
हृदय तरंगें जब उठती हैं, भूख नहीं तब प्यास नहीं है
काव्य वेदना क्या होती है, दुनिया को आभास नहीं है
सदा अकेला जीवन जीना, जीवन का दुर्भाग्य नहीं है
श्रम बिन्दू को सदा नोचना, खुशियों का आधार नहीं है
पीड़ा का अभिषेक करूँ मैं, इतना भी अधिकार नहीं है
गीत गजल में कुछ भी लिख दूँ, कविता का यह सार नहीं है
प्रतिनायक का मौन साधना, तब हमको स्वीकार नहीं है
पृष्ठ भूमि पर कविता रोये, अध्यायों का भाग्य नहीं है
मन की पावस बूदें छलकें, भावों का आयाम नहीं है
दीपक बनकर जलता रहता, जीवन में आराम नहीं है
अवसादों में कविता लिख दूँ, खुशियों का पैगाम नहीं है
अभी समर्पण के भावों की, मध्य निशा है शाम नहीं है
भाव पक्ष या कला पक्ष में, कुछ भी लिख दूँ काव्य नहीं है

-- अतुल कुमार यादव

दोस्ती है तो बना इकरार होना चाहिए
भूल लेकर ना उठा तकरार होना चाहिए
सोच भड़की तो मिटा दूरी असल ले कायदा
आस खुशियों जान के संसार होना चाहिए
प्यार को बस प्यार सा इजहार होना चाहिए
मान झूठा शक नही बेकार होना चाहिए
हो रहे झगड़े यही मसले खड़े से राह में
सोच से अंत कायदा बाजार होना चाहिए
जिंदगी में प्यार एकता का लिया सा वायदा
सब तरफ धरती दिखे परिवार होना चाहिए

-- रेखा मोहन

चाहा न कुछ खुदा से, तुझे चाहने के बाद
मांगा न कुछ खुदा से, तुझे मांगने के बाद
किसी और चीज की, जरूरत नहीं रही
पाकर के तुझको यार, तुझे मांगने के बाद
तस्द्दुक है तुझ पर जां मेरी हमसफर मेरे
जन्नत मिले या दोजख, तुझे मांगने के बाद
आ जाए गर कजा भी, मुझे कोई गम नहीं
है तश्नगी बुझी मिरी, तुझे मांगने के बाद
मये-होश-गुदाज तुमने पिला दी जो 'अरुण'
अब्रे-बहार न चाहिए, तुझे मांगने के बाद

-- डॉ अरुण निषाद

निगाहें मिलाना, मिलाकर झुकाना
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है
अकेले बिना बात के मुस्कुराना
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है
बेचैन हैं दिन, हैं बेताब रातें
करने को बाकी हैं कितनी ही बातें
मगर उसके आते ही सब भूल जाना
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है
मासूम फूलों की खुशबू में तू है
कोई भी हो लगता है पहलू में तू है
हर चेहरे में चेहरा तेरा उभर आना
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है
मैं चाँद हूँ, तुम मेरी चाँदनी हो
मेरी सूनी रातों की तुम रोशनी हो
तुम्हें पाने के रोज सपने सजाना
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है
मेरी सारी गजलें मुकम्मल हैं तुमसे
शेर-ओ-सुखन की ये महफिल है तुमसे
तुम पर ही लिखना, तुम्हीं को सुनाना
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है

-- भरत मल्होत्रा

कोई मुझे झोलाछाप न समझे...

डॉ प्रदीप उपाध्याय

हर किसी को जीवन में स्वांग करना होता है. हमने भी जब शुरू-शुरू में लिखना प्रारम्भ किया तो कंधे पर झोला टांगकर ही बाहर निकलते ताकि लोग हमें साहित्यकार होने की मान्यता दे दें. किसी समय यह साहित्यकार होने की निशानी हुआ करता था. एक समय था जब बड़े से बड़ा साहित्यकार भी खादी के कपडे पहने और अपने कंधे पर खादी का ही झोला रखकर अपनी अलग पहचान दिखाता था. इनके साथ बिखरे बाल और बेतरतीब दाढ़ी उनके व्यक्तित्व को अलग ही पहचान देती थी. उनकी देखा-देखी हमने भी यही पैंतरा आजमाया. वैसे राजनीति के क्षेत्र में भी कुछ नेताओं ने इसे अपनाया. हाँ, देशी समाजवादी-साम्यवादियों की पहचान इन झोलों से हो जाती थी.

खैर, अभी बात कलमकारों की हो रही है. जिस तरह से माथे पर बिंदी और गले में मंगलसूत्र किसी महिला के विवाहित होने की निशानी हुआ करते थे, ठीक उसी तरह कलमकारों की पहचान उसके पास कलम होने से ज्यादा उसके कंधे पर लटके झोले से होती थी. खासकर वामपंथ की ओर रुझान रखने वाले कलमकारों की, लेकिन आज जब मोबाइल, लेपटॉप और टेबलेट के युग में दौड़ लगा रहे हैं और वामपंथ और दक्षिणपंथ ने आपसी घालमेल कर लिया है तब इन झोलों का क्या काम रह गया है और जिन लोगों ने समय के साथ कदम न बढ़ाते हुए अभी भी झोलों का दामन थाम रखा है, वे झोलाछाप ही तो कहलायेंगे.

जिस तरह से आजकल कुछ लोग स्त्री के सुहाग की निशानी बिंदी, बिछिया और मंगलसूत्र को पिछड़ेपन और गँवारपन का नाम देते हुए इनके बिना अपने आप को आधुनिक होने का परिचय कराते हैं, ठीक उसी तरह झोला भी अब कल की बात हो चला है. आजकल के साहित्यकार भी कंधे पर झोला नहीं टांगते बल्कि वे भी सूट-बूट धारी हो चुके हैं और कंधे पर लेपटॉप बेग रख अपने आधुनिक होने का परिचय कराते हैं. अब तो बुक क्या, ई-बुक का जमाना है तो अब पुरातनपंथी कैसी?

यहाँ नेताओं की तो बात ही छोड़ दें, उनके वस्त्र-विन्यास को देखकर तो अभिनेता भी ईर्ष्या भाव से भर जाएं. अब उनकी पहचान लाखों के सूट से होने लगी है. तब फिर आजकल यह झोलाधारियों की बात क्यों? झोलाछाप तो कल भी थे और आज भी हैं. चिकित्सा के क्षेत्र में डिग्रीधारी डाक्टरों और प्रशासकों की चिंता झोलाछाप डाक्टरों से है. पहले के जमाने में कभी डिग्री की बात नहीं कही जाती थी. व्यक्ति बगैर डिग्री के भी कई विद्याओं में निपुण हुआ करता था. हर घर में दादी के नुस्खे से ही लोग बीमार नहीं होते थे और बीमार आदमी ठीक भी हो जाया करता था. हकीम का बेटा हकीम और वैद्य का बेटा वैद्य, अनुभव काम आता था जनाब. वंशवाद की बोम नहीं लगती थी!

चलिए मान लें कि झोलाछाप से खतरा है, लेकिन फिर भी यदि डिग्री लेकर लोगों की जान का सौदा होने लगे, तब तो कहा यही जाएगा कि भाई निपटना ही है तो क्या डिग्रीधारी और क्या झोलाछाप. निपटेंगे भी तो सस्ते में ही. वैसे भी गाँव-शहरों के हाट-बाजार में ये ही झोलाछाप और संदूकधारी पैदल या साईकिल पर यहाँ वहां इलाज करते हुए मिल ही जाते थे और आज भी मिल जाते हैं. हाँ, आज के दौर में इन्होंने भी अपनी दुकानें सजा ली हैं, तो लोग जलने लगे हैं.

जिस तरह से चिकित्सा के क्षेत्र में मठाधीश होने की परम्परा ने जन्म ले लिया है, ठीक उसी तरह से प्रत्येक क्षेत्र में मठाधीश पनप चुके हैं, तब साहित्य का क्षेत्र कैसे अछूता रह सकता है? यहाँ भी मठाधीशों के ध्वज लहरा रहे हैं, ऐसे में कोई झोलाछाप कवि, कहानीकार, व्यंग्यकार अपनी दूकान कैसे चला सकता है! झोलाछाप डाक्टर की तरह उसकी भी पैठ गहरी जमी हुई हो सकती है. तब तो मठाधीशों का सशंकित होना स्वाभाविक है.

ऐसे में झोलाछापों को खदेड़ने का संकल्प चहुँओर से सुनाई दे रहा है. मैं बड़ी ही संकटपूर्ण स्थिति में आ गया हूँ क्योंकि मैं कैसे अपने आप को साबित करूं कि मैं झोलाछाप व्यंग्यकार नहीं हूँ. साहित्यकर्मी साहित्य का डिग्रीधारी नहीं होता, तब क्या अपने आप को साबित करने के लिए मुझे अपना मठ स्थापित कर लेना चाहिए. लेकिन ऐसा कर पाऊँ, इसके पूर्व ही कहीं ऐसा न हो कि मुझे व्यंग्य के क्षेत्र से झोलाछाप माना जाकर खदेड़ दिया जाए! ■

राजनीति और रजनीकांत

देवेन्द्र राज सुथार

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री डिजरायली ने कहा था- “राजनीति के समान कोई दूसरा जुआ नहीं है।” इस तर्ज पर कहें तो सारे राजनेता एक नंबर के जुआरी हैं! डिजरायली तो बड़े अच्छे व्यक्ति थे जिन्होंने राजनीति को सिर्फ जुआ ही कहा! बाकि हमारे यहां तो राजनीति की तुलना यदि कुत्ते से भी कर ली जाए, तो कुत्ता भी इसके विरोध में भौंक-भौंक कर पूरे गली को सिर पर उठा लेता है। क्योंकि कुत्ता अपनी वफादारी के लिए प्रसिद्ध है और राजनेता बे-वफादारी के लिए मशहूर हैं।

भारत में ज्यों-ज्यों आजादी के साल बढ़ते गए त्यों-त्यों राजनीति में राज और नीति के बीच की दूरी बढ़ती गई। अब तो राज के लिए सब अनीति का खेल है। यह अनीति और लूट का खेल आखिर कब तक सुपर-डुपर हीरो देखता रहता। इसलिए सुपर हीरो रजनीकांत ने राजनीति में आने का ऐलान कर दिया। इस एग्रीमेंट के साथ कि यदि तीन साल में उनके द्वारा किये गये वायदे पूरे नहीं हुए तो वे इस्तीफा दे देंगे। ऐसा एग्रीमेंट यदि हर नेता कर दे तो राजनीति से देश का कुछ भला हो सकता है। लेकिन कौन राजनेता होगा जो खुद का भला छोड़कर देश का भला करना चाहेगा? आपने क्या हमारे नेताओं को बच्चा समझ रक्खा है?

एक कारपेंटर से कुली और एक कुली से बस कंडक्टर और एक बस कंडक्टर से सुपर स्टार बनने वाले रजनीकांत अब सुपर स्टार से एक राजनेता बन जाएंगे। इतने दिनों फिल्मों में हीरोगिरी करते थे, अब रियल लाईफ में भी हीरोगिरी करते नजर आएंगे। साउथ की जनता पर रजनी के अभिनय का ऐसा जादू चला है कि वे उन्हें भगवान की तरह पूजती है। इससे ही उनकी विजय का अनुमान लगया जा सकता है। जब राजनीति में अंगूठा छाप भी जीतते आए हैं, तो रजनीकांत जैसा सुपर स्टार कैसे नहीं जीतेगा? वैसे भी भारत की राजनीति की रेल तो वायदों की पटरी पर ही दौड़ती है। वायदों की बुनियाद पर टिकी भारतीय राजनीति की रेल हर पांच साल बाद पटरी से उतर जाती है। और ये इतनी हिम्मत वाली है कि फिर नये वायदों के साथ पटरी पर चढ़ भी जाती है।

रजनी बाबू! अच्छी बात है कि आप राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं। हमारी नसीहत है कि सिस्टम को बदलने का कहकर खुद मत बदल जाना। राजनीति ने बहुतों को गिरगिट बनाकर छोड़ दिया है, जिससे बेचारे गिरगिटों के अस्तित्व को खतरा होने लग गया है। घोटालों को पराई स्त्री समझकर उससे दूर ही रहना। ऐसा न हो कि उन्हें अपनी फिल्म की हीरोइन समझकर शुरू हो जाओ पटाने के लिए। सिस्टम में लगे भ्रष्टाचार को अपनी फिल्म का विलेन समझकर मार गिराना। ध्यान रखना इस बात का, कि विकास नामक हीरोइन को यह विलेन कभी टच करने की हिम्मत न कर पाएं। अब तो इस विकास नामक हीरोइन की रक्षा और सुरक्षा दोनों की जिम्मेदारी आपके हाथ में है।

आशा करते हैं कि सुपरहिट फिल्मों वाला यह सुपर हीरो राजनीति की फिल्म में फ्लॉप नहीं जाएगा। यह तो कुछ करके ही दिखाएगा। फिर यह हीरो कहता भी तो है- ‘झुंड मे तो सूअर आते हैं और शेर अकेला ही आता है।’ अब जब शेर ने एंट्री करने की ठान ही ली है तो राजनीति के सूअरों की खैर नहीं। ■

अरब देशों में भी बजा मोदी का डंका

मृत्युंजय दीक्षित

पीएम नरेंद्र मोदी ने अभी फिलिस्तीन, संयुक्त अरब अमीरात और ओमान जैसे अरब देशों की यात्रा की और वहां पर उनका जिस प्रकार से भव्य व शानदार स्वागत किया गया उससे हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा हुआ, लेकिन भारत में मोदी विरोधियों को यह भी रास नहीं आया कि एक भगवा पीएम को घोर मुस्लिम बाहुल्य देशों में इतना प्यार और सम्मान मिल रहा है। इतिहास गवाह है कि ७० सालों में किसी कांग्रेसी पीएम का इतना जोरदार स्वागत व समर्थन नहीं हुआ। शायद यही बात कांग्रेस को अखर रही होगी। आज पूरे विश्व में पीएम मोदी व उनके नेतृत्व में भारत का जलवा उबाल ले रहा है। दुबई के ओपेरा हाउस से लेकर ओमान के शहर मस्कट तक जिस प्रकार की दीवानगी पीएम मोदी के प्रति देखने को मिली, उससे एक सुखद अनुभूति हो रही थी। ओपेरा हाउस और मस्कट में 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के नारों को सुनकर मन प्रफुल्लित हो उठा। कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी इन देशों के जनमानस के बीच इस प्रकार के नारे कभी सुनायी देंगे।

पीएम मोदी की विदेश यात्रा न सिर्फ खाड़ी देशों की मीडिया में छायी रही, अपितु इस यात्रा को पूरे विश्व का मीडिया लगातार कवर कर रहा था। कुछ विशेषज्ञ इस यात्रा को बहुत हल्के में ले रहे होंगे, लेकिन भारतीय कूटनीतिक व सामरिक दृष्टिकोण से यह यात्रा भविष्य में भारत के लिहाज से काफी प्रभावी व लाभदायक साबित होने जा रही है। पीएम मोदी ने अपनी यात्रा से जहां अरब के देशों के साथ अपने मैत्री संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ व गहरा किया है, वहीं इसके सहारे सामरिक व आर्थिक दृष्टिकोण से चीन व पाकिस्तान को घेरने का भी एक प्लान तैयार कर लिया है, जिसकी झलक इन देशों के साथ हुए समझौतों में भी दिखलायी पड़ रही है। पीएम मोदी अपनी यात्रा के प्रथम चरण में सबसे पहले जार्डन की राजधानी अम्मान से होते हुए फिलिस्तीन के रामल्ला पहुंचे जहां सबसे रोचक तथ्य यह रहा कि पीएम मोदी की सुरक्षा के लिए एक इजराइली हेलीकाप्टर उन्हें एस्कार्ट करते देखा गया।

कूटनीतिक विश्लेषकों के अनुमानों को धता बताते हुए बिना इजराइल को नाराज किये जिस प्रकार से फिलिस्तीन से दोस्ती को आगे बढ़ाया है वह काफी सुखद व आश्चर्यजनक अनुभव है। यहां पर पीएम मोदी को 'ग्रांड कॉलर ऑफ द स्टेट पलेस्टाइन' से सम्मानित किया गया। यह फिलिस्तीन में दिया जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान है और विदेशी शासनाध्यक्षों को ही दिया जाता है। भारत से अभी तक यह सबसे पहले पीएम मोदी को ही दिया गया है। यहां के राष्ट्रपति महमूद अब्बास के साथ बैठक में अब्बास ने शांति प्रक्रिया में भारत से भूमिका निभाने का अनुरोध किया तथा छह समझौतों पर भी हस्ताक्षर किये गये।

इस यात्रा के बाद पीएम मोदी संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा पर पहुंचे। यहां अबूधाबी के प्रिंस मोहम्मद बिन जायेद अल नाहयान के साथ लंबी वार्ता हुई। दोनों देशों के बीच पांच समझौते हुए। इस अवसर पर दुनिया की सबसे ऊंची इमारत बुर्ज खलीफा को तिरंगे के रंग में रोशन किया गया। इस यात्रा में भारत और यूएई के बीच तेल पर एक बहुत ही ऐतिहासिक समझौता हुआ है जिसमें अपतटीय लोअर जकूम कनक्शेन में १० प्रतिशत हिस्सेदारी के अधिग्रहण के लिए भारतीय कंसोर्टियम (ओवीएल, बीपीआरएल और आईओसीएल) और अबूधाबी नेशनल आयल कंपनी के बीच समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं। यह २०१८ से २०५७ के बीच ४० वर्षों के लिए होगा। हिस्सेदारी ब्याज में ६० फीसदी एडीओओसी के पास रहेगा जबकि बाकी ३० फीसदी हिस्सेदारी अंतर्राष्ट्रीय तेल कंपनियों को जायेगा। तेल क्षेत्र के इतिहास में यह अब तक का सबसे बड़ा समझौता है। इसके माध्यम से भारत की तेल के क्षेत्र के बहुत सी समस्याओं का लंबे समय के लिए अंत हो सकने की संभावनायें व्यक्त की जा रही हैं। इसके अलावा रेलवे, वित्तीय क्षेत्र, श्रमशक्ति व माडल पार्कों को लेकर भी व्यापक समझौते हुए हैं। ये समझौते भविष्य में मील का पत्थर साबित होने जा रहे हैं।

यहां पर सबसे अधिक चर्चा का विषय रहा ओपेरा हाउस में भारतवंशियों के एक कार्यक्रम में अबूधाबी के पहले हिंदू मंदिर की आधारशिला रखने का भव्य आयोजन। उन्होंने मंदिर मॉडल का लोकार्पण किया। इस मंदिर का निर्माण अक्षरधाम मंदिर व न्यूजर्सी में निर्माणाधीन मंदिर की तर्ज पर होगा। यह २०२० तक बनकर तैयार हो जायेगा। मंदिर के लिए अबूधाबी के क्राउन प्रिंस मुहम्मद बिन जायेद अल नहयान ने अबूधाबी दुबई हाइवे के पास मुफ्त में जमीन देकर एक नजीर पेश की है। बोचानवासी श्री अक्षर पुरूषोत्तम स्वामीनारायण संस्था इस मंदिर का निर्माण करवायेगी। यह मंदिर ५५ हजार वर्गमीटर भूमि पर बनेगा। भारतीय मंदिरों के खास शिल्पी इसका निर्माण करेंगे, जबकि पत्थरों को तराशने का काम यूएई में ही होगा। इस अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि यह मंदिर मानवता और समरसता के उत्प्रेरक की भूमिका निभायेगा और भारतीयता की पहचान बनेगा। यह मंदिर न केवल शिल्प की दृष्टि से अद्वितीय होगा, अपितु विश्वभर के लोगों को वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश भी देगा।

इसके बाद पीएम मोदी ने ओपेरा हाउस में उपस्थित हजारों की संख्या में भारतीय व यूएई के नागरिकों को संबोधित किया। अपने संबोधन में पीएम मोदी ने संकल्पों व सपनों को पूरा करने का फिर से संकल्प लिया। यहां पर पीएम मोदी ने कहा कि अब भारत लगातार बदल रहा है। चार साल में भारत का आत्मविश्वास बढ़ा है। अब भारत विकास की नई ऊँचाइयाँ छू रहा है। पहले लोग पूछते थे कि होगा या नहीं होगा? आज पूछते हैं कि मोदी जी बताओ कब होगा। पहले निराशा के दिन भी हमने देखे हैं। आज विश्वास है कि होगा तो अभी होगा। पीएम मोदी ने दुबई में वर्ल्ड गवर्नमेंट समिट को संबोधित करते हुए मिसाइल और बम में बढ़ते हुए वैश्विक निवेश पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मानव विकास की यात्रा में तकनीक की छाप है। दो सौ साल पहले दुनिया की आबादी का ८४ प्रतिशत हिस्सा गरीबी में रहता था। प्रधानमंत्री मोदी ने आतंकियों की भर्ती के लिए साइबर स्पेस का इस्तेमाल होने पर भी चिंता व्यक्त की। यहां पर उन्होंने आधार की सफलता का भी उल्लेख किया। आधार के द्वारा सीधे नगद भुगतान से सरकार ने ५६ हजार करोड़ रुपये बचाये हैं। यहां पर पीएम ने निवेशकों को भारत आने के लिए आमंत्रित किया।

अपनी यूएई की बेहद सफल और कारगर यात्रा के बाद पीएम मोदी दो दिवसीय यात्रा पर ओमान पहुंच गये। पीएम का ओमान दौरा भी काफी शानदार व भव्य रहा। यहां पर पीएम मोदी ने दो सौ साल पुराने मोतीश्वर शिव मंदिर के दर्शन किये और सुल्तान कबूस ग्रैंड मस्जिद भी देखने गये। यह आधुनिक इस्लाम की स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। यह मस्जिद ओमान के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में शुमार है। इनमें हर धर्म के लोगों की आस्था बताई जाती हैं। पीएम मोदी और सुल्तान कबूस के साथ प्रतिनिधि मंडल स्तर की वार्ता हुई। दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश, ऊर्जा, रक्षा और सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा तथा क्षेत्रीय मुद्दों पर बातचीत हुई तथा आठ समझौतों पर हस्ताक्षर हुए जिससे आगे की मैत्री का रास्ता भी और अधिक प्रगाढ़ होकर उभरने जा रहा है। पीएम मोदी ने यहां पर भी खुले स्टेडियम में हजारों की संख्या में उपस्थित भारतीय नागरिकों व उद्यमियों को संबोधित किया और अपनी सरकार के कामकाज का विश्लेषण तो किया ही, साथ ही अपनी सरकार की योजनाओं के बारे में भी विस्तार से ओमान के भारतीय जनमानस को बताया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए उन्होंने वहां के लोगों को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित भी किया। संबोधन के बाद अपनी कार्यशैली के अनुरूप उन्होंने एक खुली जीप में पूरे स्टेडियम का चक्कर लगाकर हर दर्शक के साथ दिल का रिश्ता जोड़ने का अद्भुत प्रयास भी किया।

निश्चय ही अरब देशों की यात्रा कई मायनों में ऐतिहासिक व कारगर साबित होने जा रही है तथा इस यात्रा से भारत को कई लाभ भी होने जा रहे हैं। पहली बार अरब देशों की धरती से 'भारत माता की जय' के नारे व 'वंदे-वंदे' सुनायी दिया। इससे पता चलता है कि वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रति पूरी दुनिया में विश्वास जगा है। यही प्रधानमंत्री मोदी की सफलता है। ■

एप्पल

एप्पलमें गुण एक हजार, एप्पल खाओ हर दिन चार
नित्य नियम से जो खाता है, हृष्ट-पुष्ट वह हो जाता है
एप्पल का भैया क्या कहना, सुन्दरता का ये है गहना
चेहरा दमके हर दम लाल, एप्पल करता बड़ा कमाल
वात-पित्त-कफ दोष विनाशक, सभी फलों का एप्पल शासक
कब्ज दस्त सरदर्द मिटाए, खांसी सर्दी पास न आए
बीपी का अक्सीर इलाज, बात पते की कहता आज
आधि-व्याधि सब दूर भगाता, डाक्टर पास फटक ना पाता
सब रोगों की एक दवा है, खाया एप्पल रोग हवा है
ड क्टर भी अक्सर कहते हैं
वे भी ज्यूस पिया करते हैं
छिलका सहित चबाकर खाओ
मन भाए तो ज्यूस बनाओ
एप्पल ज्यूस बगल का तोशा
मंजिल का है पूर्ण भरोसा

-- आनन्द विश्वास

होली

नटखट चुनमुन बोला आओ, गीत खुशी के गाएं
मस्त-मगन हम बच्चे सारे, होली पर्व मनाएं
रंग-बिरंगे रंगों सा ही, आपस में मिल जाएं
माता-पिता बड़ों का अपने, कभी ना दिल दुखाएं
गुझिया, मालपुआ, दही बड़े, खाएं और खिलाएं।
मस्त-मगन हम बच्चे सारे, होली पर्व मनाएं

पिचकारी

रंग-बिरंगी इक पिचकारी, मम्मी मुझे दिला दो
लाल-गुलाबी, नीली-पीली, रंगों की पुड़िया ला दो
सहेलियां मेरी लाई है, नई सजीली पिचकारी
थोड़ी पतली, थोड़ी छोटी,
लगती है प्यारी-प्यारी
पिचकारी बिना अधूरा है,
रंगों का यह त्यौहार
एक दूजे पर खूब करेंगे,
आज रंगों की बौछार

-- मेराज रजा

हरी मिर्च

तीखी-तीखी और चरपरी, हरी मिर्च थाली में पसरी
तोते इसे प्यार से खाते, मिर्च देखकर खुश हो जाते
सब्जी का यह स्वाद बढ़ाती, किन्तु पेट में जलन मचाती
जो ज्यादा मिर्ची खाते हैं, रोज सुबह वो पछताते हैं
दूध-दही बल देने वाले, रोग लगाते, मिर्च-मसाले
शाक-दाल को घर में लाना, थोड़ी मिर्ची डाल पकाना
तीखी-मिर्च कभी न खाओ, सदा सुखी जीवन अपनाओ

बेर

लगा हुआ है इनका ढेर ठेले पर बिकते हैं बेर
रहते हैं काँटों के संग इनके हैं मनमोहक रंग
जो हरियल हैं, वे कच्चे हैं, जो पीले हैं, वे पक्के हैं
ये सबके मन को ललचाते
हम बच्चों को बहुत लुभाते
शंकर जी को भोग लगाते
व्रत में हम बेरों को खाते
ऋतु बसन्त की मन भाई है
अपनी बेरी गदराई है

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

प्यारे चुन्न मुन्न जल्दी आओ, आकर जल्दी सो जाओ
निंदिया रानी तुम्हें बुलाए, सपनों में तुम खो जाओ
जल्दी सोना जल्दी जगना, बात बहुत ही अच्छी है
जल्दी सोने वाला चुन्न मुन्न, पाता चिजी अच्छी है
सपनों की दुनिया से टाफी बिस्कुट चमचम ले आओ
प्यारे चुन्न मुन्न जल्दी आओ, आकर जल्दी सो जाओ
जल्दी सोने वाला बच्चा, राजकुंवर है कहलाता
दिदी का वो प्यारा भैया, राजा भैया कहलाता
पापा के प्यारे बन जाओ, ममी कहती आ जाओ
प्यारे चुन्न मुन्न जल्दी आओ, आकर जल्दी सो जाओ
कुकड़ू कूं जब मुर्गा बोले, जल्दी से तुम जग जाओ
चूं-चूं-चूं जब चिड़िया बोले,
फुर्ती से तुम उठ जाओ
अम्मी दुधु लेकर आई,
जल्दी से तुम पी जाओ
प्यारे चुन्न मुन्न जल्दी आओ,
आकर जल्दी सो जाओ

-- लीला तिवानी

शिशु गीत

एक में एक मिलाओ, आगे की संख्या पाओ
देखो बुजुर्ग एक, चलता लाठी टेक
ये हलवाहे दो, बीज रहे हैं बो
हरे तोते तीन, खाते दाना बीन
मिलकर मछुए चार, रहे मछलियां मार
मोर मुराले पांच, दिखा रहे हैं नाच
बकरी-बकरे छै, करते मैं मैं मैं
झाड़ खड़े हैं सात, जिनमें एक न पात
बैठे लड़के आठ, पढ़ते अपना पाठ
झुककर नौकर नौ, कूट रहे हैं जौ
ये चौपाए दस, गये कीच में फंस

-- लीला तिवानी

बच्चों के मानसिक विकास का अद्‌भुत साधन

भारत प्रकाश भाटिया

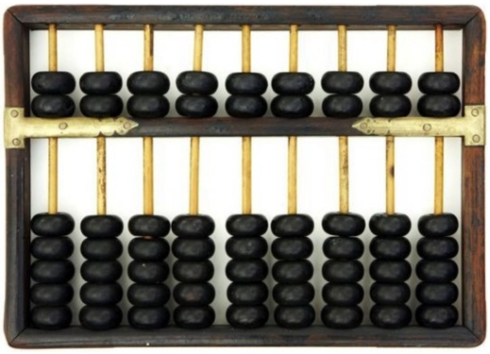

आज कल हर माता पिता के लिए यह चिंता का विषय है कि उनका बच्चा पढ़ाई लिखाई में अव्वल हो, और यह कोई नई बात भी नहीं है, सदियों से ऐसा होता आया है। लेकिन जहाँ पहले मां-बाप बच्चे की १० या १२ की पढ़ाई के समय ही ऐसा सोचते थे, पर अब ऐसा समय है कि बच्चे को उसकी प्राथमिक शिक्षा से ही कुछ ऐसा सिखाया जाये कि उसकी बुद्धि का अद्‌भुत विकास हो। गिनतारा (अबेकस) इस क्षेत्र में रामबाण सिद्ध हुआ है, आज प्रतियोगिता का जमाना है और हर माँ बाप चाहता है कि नर्सरी से ही उसका बच्चा किसी अच्छे स्कूल में शिक्षा प्राप्त करे और कभी भी इस मुकाबले में पीछे न रहे।

अब चाहे घर में दो या दिन बच्चे ही होते हैं पर फिर भी अपनी सामाजिक व्यस्तता के कारण वे अपने बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते। इसीलिए शिक्षक और विद्यार्थी का अधिक से अधिक संपर्क आवश्यक हो गया है, स्कूल की PTA यानी माता-पिता और शिक्षक मुलाकात में अक्सर यही शिकायत सुनने को मिलती है कि बच्चा पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान नहीं देता, होमवर्क नहीं करता और इसका अच्छे नंबर लेकर पास होना मुश्किल है। स्कूल वाले जैसे यह कहकर अपना पल्ला झाड़ने की कोशिश करते हैं। ऐसी शिकायत पर माँ बाप अधिक से अधिक यही करते हैं कि बच्चे की कहीं प्राइवेट ट्यूशन भी लगवा देते हैं। इससे ट्यूशन केंद्र तो फल फूल रहे हैं, होमवर्क भी हो जाता है या कहें कि करा दिया जाता है पर बच्चे का मानसिक विकास भी हो रहा है या उसका ज्ञान बढ़ रहा है, ऐसा ऐसा कदापि नहीं है।

माँ बाप समझते हैं कि ऐसा करके वह अपना कर्तव्य निभा रहे हैं और बच्चे का पूरा ध्यान रख रहे हैं पर ऐसा वह केवल अपना दोष छिपाने के लिए ही कर रहे हैं। अब स्कूल से शिकायत भी नहीं मिलती और माँ बाप समझते है कि उन्होंने अपना सही फर्ज निभा दिया। पर वास्तविकता कुछ और ही है। हमें इस समस्या के मूल कारण को देखना होगा। ट्यूशन इसका सही हल नहीं है, वह तो केवल स्कूल का अधूरा काम ही पूरा कर रहे हैं जो स्कूल को करना चाहिए था। बच्चे के कम नंबर आने पर हम टीवी या अधिक खेलकूद को कारण मानकर बच्चो को इनसे दूर रहने या कम करने को कहते हैं। अब बच्चा उस काम को करने के लिए समय निकालने के बहाने करता है, जिस काम को करने के लिए उसे मना किया जाता है।

शिक्षा के साथ साथ मनोरंजन और खेल-कूद भी जरूरी है और इसके लिए जरूरी है कि इन सभी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

न्यूज वर्ल्ड के सोमालिया-यूथोपिया

तारकेश कुमार ओझा

सच पूछा जाए तो देश-दुनिया को खबरों की खिड़की से झांककर देखने की शुरूआत ८० के दशक में दूरदर्शन के जमाने से हुई थी। महज २० मिनट के समाचार बुलेटिन में दुनिया समेट दी जाती थी। अंतरराष्ट्रीय खबरों में ईरान-इराक का जिक्र केवल युद्ध और बमबारी के संदर्भ में होता था। जबकि सोमालिया और यूथोपिया जैसे देशों का उल्लेख गृहयुद्ध, बदहाली और भुखमरी के लिए। समय के साथ २४ घंटों के चैनल आ गए, लेकिन अपने ही देश-समाज के सोमालिया-यूथोपिया यथावत कायम है। कम से कम नजरे इनायत या सूचनाओं के मामले में, क्योंकि इस प्रचार तंत्र पर कुछ लोगों का ही कब्जा है। इनकी दुनिया बाबाओं से लेकर ब लीवुड और क्रिकेट स्टार के बीच सिमटी है।

इनसे बचे तो बाबा राम रहीम, बाबा दीक्षित, हजारों किलोमीटर दूर बसा बगदादी और कोरिया का कथित तानाशाह किम जोन जैसे कथित सनकी विकल्प के तौर पर उभरते हैं। ऐसा शायद ही कोई दिन बीतता हो जब समाचार माध्यमों में इन पर लंबी-चौड़ी खबरें न परोसी जाती हों। आश्चर्य होता है कि सैकड़ों-हजारों किलोमीटर दूर बसे देशों या शख्सियतों की खबरें चैनलों के नीति-नियंताओं को दर्शकों के लिए इतनी जरूरी लगती हैं, तो अपने ही देश की उन सूचनाओं की ओर उनका ध्यान क्यों नहीं जाता जो अत्यंत ही महत्वपूर्ण है?

अभी कुछ दिन पहले मेरे गृह राज्य पश्चिम बंगाल में चालक के मोबाइल पर बातें करने की जानलेवा लापरवाही के चलते सरकारी बस पुल के रेलिंग तोड़कर नदी में जा गिरी, जिसके चलते कड़ाके की ठंड में लगभग ५० यात्रियों की जल समाधि हो गई। राहत व बचाव अभियान चलाने में भी काफी कठिनाई उत्पन्न हुई, जिससे नाराज भीड़ को संभालना पुलिस के लिए मुश्किल हो गया। इस दौरान पुलिस बनाम पब्लिक के बीच हिंसक संघर्ष और लाठी चार्ज तक की घटनाएं हुई। मैं इस समाचार को कथित राष्ट्रीय चैनलों पर देखने के लिए बेचैन था। लगा अपडेट न सही लेकिन झलकियां तो नजर आए। लेकिन उस समय हर चैनल पर कुछ बुजुर्ग क्रिकेटर बैठ कर कहीं दूर चल रहे मैच पर अपना एक्सपर्ट कमेंट पेश कर रहे थे। लंबे समय की उहापोह और प्रतीक्षा के बाद आखिरकार मुझे इससे जुड़ी खबरों के लिए भाषाई चैनलों पर ही निर्भर होना पड़ा। देर रात कुछ राष्ट्रीय चैनलों पर इस समाचार की हल्की झलक देखने को मिली।

इस घटना के बाद मेरे प्रदेश में एक और बड़ा वाकया हुआ। जो हर मायने में सनसनीखेज था। किसी मेगा सीरियल के बेहद रोमांचक एपीसोड्स की तरह। दरअसल यह कहानी शुरू हुई एक दबंग महिला पुलिस अधिकारी से। जो देखते ही देखते राज्य सत्ता के सबसे करीब पहुंच गई। वो आश्चर्यजनक तरीके से लगातार छह साल तक एक ही जिले की पुलिस प्रमुख पद पर कार्यरत रही। यही नहीं नियमों के तहत अपने चहेते पुलिस अधिकारियों को भी उन्होंने सालों तक एक ही पद पर आसीन किए रखा। मुख्यमंत्री से निकटता के चलते वे अपने क्षेत्र की दूसरी मुख्यमंत्री कही जाने लगी। उनकी बढ़ती ताकत का आलम यह कि शासक दल के कद्दावर नेता भी उनसे खौफ खाने लगे। हालांकि एक महिला आइपीएस अधिकारी के उत्थान की दिलचस्प कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती। किसी दिलचस्प धारावाहिक की तरह उनसे जुड़े किस्सों-कहानियों में लगातार रोमांचक मोड़ आता रहा।

आखिरकार अर्श से फर्श पर आने की तर्ज पर अचानक कुछ ऐसा हुआ कि बेहद ताकतवर बन चुकी वह महिला हाल में अचानक सत्ता की आंख की किरकरी बन गई। कम महत्व के पद पर तबादले से नाराज उक्त महिला पुलिस अधिकारी ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद उठे विवादों के बवंडर ने परिस्थिति बिल्कुल विपरीत कर दी। सीआईडी की जांच में महिला के करीबी रहे दो पुलिस अधिकारी गिरफ्तार हुए। महिला अधिकारी समेत गिरफ्तार पुलिस अधिकारियों पर नोटबंदी के बाद भारी मात्रा में रद्द नोटों के एवज में प्रचुर मात्रा में सोना खरीदने का आरोप लगा। सीआइडी ने भारी मात्रा में सोने की बरामदगी के दावे भी किए।

अब धड़ाधड़ दर्ज हो रही शिकायतों की मानें तो सोना खरीदते समय विक्रेताओं से वादा किया गया था कि आगे उन्हें सोने की दोगुनी कीमत दी जाएगी। लेकिन बाद में खरीदार पुलिस अधिकारी मुकर गए। यही नहीं पुलिस अधिकारियों पर जबरन अवैध वसूली समेत तमाम आरोप भी लगाए जाने लगे। कुछ पुलिस अधिकारी गिरफ्तार हो चुके तो कुछ पर गिरफ्तारी की तलवार लगातार लटकी हुई है। वहीं विवादों में फंसी और फिलहाल कथित तौर पर फरार चल रही उस अधिकारी ने अपने बयान में सफाई पेश की है राज्य सरकार रंजिश के तहत उसके खिलाफ अभियान चला रही है। महिला अधिकारी ने यहां तक कहा कि अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अंतर राष्ट्रीय पशु तस्करी पर पूरी तरह से रोक लगा दी थी। इसी का बदला उनसे अब लिया जा रहा है।

वह महिला तो शासक दल के नेताओं के कथित कारनामों के खुलासे तक की बात कह रही है। लेकिन राष्ट्रीय चैनल इस दिलचस्प समाचार के प्रति पूरी तरह से उदासीन बने रहे। कहीं इससे जुड़ी समाचारों की हल्की सी झलक भी देखने को नहीं मिली। जबकि यही घटना यदि राजधानी या उसके आस-पास हुई होती तो चैनलों पर महीनों तक इस घटना का पोस्टमार्टम चलता रहता। बाल की खाल निकाले जाते। लेकिन क्या करें अपने देश के न्यूज वर्ल्ड में भी कुछ सोमालिया और यूथोपिया हैं। ■

देश में दोहरी कानून व्यवस्था क्यों?

संजय सिंह राजपूत

जब हमारे भारतीय कानून व्यवस्था को शिक्षित समाज नहीं समझ पा रहा है, तो अनपढ़ व्यक्तियों का क्या होगा। भारत जैसे विकासशील, धर्मनिरपेक्ष देश में आखिर दो तरह के कानून व्यवस्था की क्या जरूरत है? कल मेरा एक मित्र हनुमान प्रसाद जी के बारे में बड़ी-बड़ी बातें करने लगा। कहने लगा, आम तौर पर वे देश और देश की संस्कृति पर बहुत गर्व करते हैं। लेकिन देश की कानून व्यवस्था को लेकर वे दुखी हो जाते हैं। जब भी देश में कोई घटना हो, वे फैसला सुना देते हैं। और आश्चर्य तब होता है, जब उनका फैसला एक दम सही होता हुआ साबित होता है। उस समय एक ही बात मन में घूमड़ने लगता है कि हमसे अच्छे तो हनुमान प्रसाद जी हैं। जिनका कहना सौ टका सही हो रहा है।

मुझे यह बात हजम नहीं हुई और इसी बात को लेकर मेरे मित्र शमशेर से बहस होने लगी। मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की। मैंने कहा भारत देश एक लोकतांत्रिक देश है। यहां सभी धर्मों के लोग एक साथ अमन चैन से रहते हैं। यहां कानून का राज हैं। सभी लोग चाहे किसी धर्म, राजनीतिक दल या कोई सरकारी अफसर ही क्यों न हो, सभी को कानून मानना पड़ता है। इसी बीच हनुमान प्रसाद जी का आगमन हो गया। मेरे लिए तो जैसे सोने पर सुहागा वाली बात हो गई।

मैंने उनको देख भारतीय कानून व्यवस्था के बारे में और जोर-शोर से प्रशंसा करना शुरू किया। तभी हनुमान प्रसाद जी का चेहरा तमतमा उठा। 'क्यों दादा आप भारतीय कानून व्यवस्था से दुखी हैं?' वे कहने लगे, 'तुम्हारा पढ़ना-लिखना बेकार है। क्या तुम जानते हो अपने भारत में दोहरी कानून व्यवस्था चलती है। हां कहने के लिए सबके लिए एक ही कानून हैं। क्या तुम जानते हो भारत की कानून व्यवस्था क्या है? मैं तुम्हें बताता हूं। नेता चाहे तो दो सीट से एक साथ चुनाव लड़ सकता है, लेकिन तुम दो जगहों पर वोट नहीं डाल सकते। नेता जेल में रहते हुए चुनाव लड सकता है, लेकिन तुम जेल मे बंद हो तो वोट नहीं डाल सकते।

नेता चाहे जितनी बार भी हत्या या बलात्कार के मामले में जेल गया हो, फिर भी वो प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति जो चाहे बन सकता है। लेकिन तुम कभी जेल चले गये, तो अब तुमको जिंदगी भर कोई सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

आस्तिक व नास्तिक कौन?

मनमोहन कुमार आर्य

दो शब्दों आस्तिक व नास्तिक का बहुधा प्रयोग होता है। मोटे रूप से आस्तिक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखने वालों को कहते हैं और नास्तिक उन लोगों को कहते हैं जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। प्रश्न है कि लोग ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास क्यों रखते हैं और जो नहीं रखते वे क्यों नहीं रखते? सृष्टि के आरम्भ काल से महाभारत काल व उसके बाद भी लोग वेदों के आधार पर ईश्वर की सत्ता को मानते रहे हैं। वेदों में ईश्वर के सत्य स्वरूप का वर्णन है। महाभारत काल तक यही स्वरूप आर्यावर्त या भारत सहित विश्व के सभी देशों में विद्यमान था और सभी ईश्वर को मानते थे। महाभारतकाल के बाद भारत सहित सारे विश्व में वेदों का प्रचार प्रसार बाधित हुआ जिसके कारण भारत के लोग ईश्वर को तो मानते रहे परन्तु वेदों का प्रचार न होने, ऋषि व वैदिक विद्वानों की परम्परा के बाधित हो जाने के कारण भारत में ईश्वर विषयक अनेक भ्रान्तियां उत्पन्न हो गईं।

वेदों में ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापक बताया गया है। महाभारतकाल के बाद ऋषियों व विद्वानों की कमी के कारण ईश्वर निराकार व साकार दोनों माना जाने लगा। साकार वस्तु सर्वव्यापक नहीं हो सकती। वह एकदेशी ही होती है। एकदेशी वस्तु सर्वत्र एकरस न होकर परमाणुओं व अणुओं से बनी होती है जो खण्डनीय होती है। मनुष्यों के शरीर भी प्रकृति के परमाणुओं से बने होने के कारण नाशवान, खण्डनीय व विकृति को प्राप्त होने वाले हैं। साकार ईश्वर की जो कल्पना महाभारत काल के बाद की गई उसमें साकार ईश्वर को मनुष्य की आकृति के अनुरूप चित्रित व स्वीकार किया गया। ईश्वर को साकार रूप में ऐतिहासिक महापुरुषों राम, कृष्ण एवं शिव आदि के रूप में स्वीकार किया गया। इससे यह अनुमान होता है कि जिन लोगों ने ईश्वर के साकार रूप की कल्पना व अनुमान किया वे वेदों के यथार्थ ज्ञान से अनभिज्ञ थे।

ऋषि दयानन्द ने कहा है कि मूर्तिपूजा जैनियों से चली है और उन्होंने इसे अपनी अज्ञानता व मूर्खता से चलाया है। जैनियों से पूर्व विश्व में कहीं भी मूर्तिपूजा प्रचलित नहीं थी। इसका अर्थ हुआ कि इससे पूर्व राम, कृष्ण व शिव आदि को ईश्वर स्वीकार करके उनका पूजन व भक्ति आदि नहीं की जाती थी। महात्मा बुद्ध व महावीर स्वामी के काल में देश में यज्ञों में पशु हिंसा का प्रचार था। यह अनुमान होता है कि यह आर्य धर्म के कुछ वाममार्गी लोगों ने प्रचलित किया होगा जो मांसाहार करते होंगे। वेदों में स्पष्ट विधान है कि यज्ञ पूर्णतया अहिंसक कर्म है। यज्ञों को अध्वर कहा गया है जिसका अर्थ पूर्ण अहिंसक कार्य ही होता है। यज्ञों में यदि किसी भी प्रकार की हिंसा होती है तो वह यज्ञ न होकर हिंसात्मक कृत्य ही कहा जायेगा जो निन्दनीय एवं पाप कर्म होता है। ऐसे अन्धविश्वास एवं पाप कर्म तभी प्रचलित हो सकते हैं जब ज्ञान का अभाव हो गया हो।

यही ऋषि दयानन्द और आर्य विद्वानों की मान्यता है कि महाभारत काल के बाद वेद ज्ञान का प्रचार प्रसार बन्द हो गया था जिस कारण यज्ञों में हिंसा आरम्भ हुई और यज्ञों में पशुओं की यही हिंसा अहिंसा पर आधारित बौद्ध व जैन मत का आधार बनी। यह भी तर्क से सिद्ध किया जा सकता है कि बौद्धों एवं जैनियों में जो मूर्तिपूजा प्रचलित हुई वह महात्मा बुद्ध एवं महावीर स्वामी जी के देहान्त के बाद हुई। उनके जीवन काल व उससे पूर्व भारत में मूर्तिपूजा नहीं थी। मूर्तिपूजा ईश्वर के निराकार एवं सर्वव्यापक स्वरूप के विपरीत है, अतः असत्य है। मूर्तिपूजा ईश्वर पूजा का पर्याय नहीं है। इसका एक कारण यह है कि ईश्वर चेतन है और चेतन पदार्थ ज्ञानवान व कर्म करने वाला होता है। इसके विपरीत मूर्ति चेतन न होकर जड़ होती है और उसमें ज्ञान व कर्म करने की सामर्थ्य नहीं होती। ऐसे अनेक कारणों से ऋषि दयानन्द को मूर्तिपूजा का खण्डन करना पड़ा।

इस मूर्तिपूजा व फलित ज्योतिष आदि कारणों से ही हम पहले मुसलमानों के और उसके बाद ईसाईयों के गुलाम बने। इन अन्धविश्वासों के कारण ही कालान्तर में कुछ अज्ञानियों ने समाज में जन्मना जातिवाद का प्रचलन किया। पहले वेदों के आधार पर समाज में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र होते थे। ये वर्ण गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित थे। यदि किसी ब्राह्मण सन्तान में वेदों का ज्ञान व तदनुरूप कर्म नहीं होते थे तो उसके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार ही उसका वर्ण निर्धारित किया जाता था। कालान्तर में अन्धविश्वास, अज्ञान व अन्य कारणों से जन्मना जातिवाद का आरम्भ हुआ। इस प्रकार महाभारत काल तक वेदों पर आधारित ईश्वर का सत्य स्वरूप अज्ञान व अन्धविश्वासों के कारण साकार माना जाने लगा और धारणा, ध्यान व समाधि द्वारा ईश्वर की उपासना न करके मूर्तिपूजा को भोग लगाने, शिवलिंग पर जल चढ़ाने तथा मूर्तियों पर फल, फूल, पत्र और धन चढ़ाना आरम्भ हो गया। इन चढ़ाये गये पदार्थों पर पुजारी अधिकार कर लेते थे और यह उनकी आजीविका बन गया। ईश्वर के निराकार, सर्वव्यापक, ज्ञान स्वरूप व प्रकाशस्वरूप के विपरीत होने के कारण व वेदानुरूप ईश्वर को न मानने वाले मूर्तिपूजकों को आस्तिक नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः ये नास्तिक या अर्धनास्तिक ही कहे जा सकते हैं।

मनुस्मृति में कहा गया है कि वेद निन्दक को नास्तिक कहते हैं। इसका एक अर्थ यह भी होता है कि जो वेदानुसार व वेदानुकूल ईश्वर के स्वरूप को नहीं मानता वह नास्तिक होता है। आजकल विश्व में केवल आर्यसमाज ही एक ऐसा संगठन व आन्दोलन है जिसके अनुयायी वेद व इसकी मान्यताओं को शतप्रतिशत मानते हैं। वे अपने आपको वैदिकधर्मी मानते व कहते हैं। वे न तो मूर्तिपूजा करते हैं और न मन्दिर, मठ, गुरुद्वारा, चर्च या मस्जिद की तरह भवन आदि बनाते हैं। आर्यसमाज के अनुयायी अपने उपासना गृह, यज्ञशाला व सत्संग भवनों में वेद की मान्यताओं के अनुरूप ईश्वर की ध्यान व उपासना ही करते हैं। आर्यसमाज अपने जो मन्दिर व भवन बनाता है वह यज्ञ व सत्संग करने के लिए बनाये जाते हैं। आर्यसमाजों में दैनिक यज्ञ करने का विधान है और सत्संग हाल में प्रत्येक रविवार व अन्य कुछ अवसरों पर वेदकथा, सत्संग आदि होते हैं जिसका उद्देश्य अपने सदस्यों में वेदों की मान्यताओं के अनुसार जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देना है। आर्यसमाज के ईश्वरोपासना व अन्य सिद्धान्त वेद की मान्यताओं पर आधारित है जो तर्क की कसौटी पर भी पूर्णतः खरे हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में सभी मतों के विद्वानों, आचार्यों को शास्त्रार्थ व वार्तालाप करने की चुनौती दी थी। प्रायः सभी प्रमुख मतों के आचार्यों से उनके शास्त्रार्थ व वार्तालाप हुए भी और उसमें ऋषि दयानन्द के वेदों पर आधारित विचार व मान्यतायें ही युक्तियुक्त व सत्य पाई गईं। अतः पूर्ण आस्तिक मत यदि कोई है तो वह आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वैदिक धर्म ही है। अन्य मतों में कुछ बातें वैदिक मत के अनुकूल हो सकती हैं परन्तु उनमें ईश्वर संबंधी अनेक बातें वेद के विपरीत भी होने से उन्हें व उनके अनुयायियों को पूर्ण आस्तिक नहीं कहा जा सकता। वे जिस सीमा तक वेद की मान्यताओं को मानते हैं उस सीमा तक आस्तिक हैं अन्यथा वे नास्तिक ही हैं। यह भी तथ्य है कि बौद्ध व जैन मत ईश्वर को न मानने के कारण नास्तिक मत हैं। ऐसा ही ऋषि दयानन्द जी का मत है। ईसाई आदि इतर मतों में ईश्वर को पांचवें वा सातवें आसमान पर बताया गया है। इसका अर्थ ईश्वर का एकदेशी होना है। किसी स्थान विशेष पर रहने वाला ईश्वर सर्वव्यापक नहीं हो सकता। अतः वेद की मान्यताओं के विपरीत मान्यतायें होने से वे सब नास्तिक ही कहे जायेंगे।

संसार के सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वे ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेदों का अध्ययन करें और ईश्वर विषयक मान्यताओं पर गहराई व गम्भीरता से विचार कर आर्य विद्वानों से वार्तालाप व शास्त्रार्थ करें। स्वामी शंकराचार्य ने भी जैन मत के आचार्यों से शास्त्रार्थ किया था और ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया था। आज भी ईश्वर विषयक सत्य ज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए सभी मतों के आचार्यों को परस्पर प्रीतिपूर्वक शास्त्र चर्चा, वार्तालाप व शास्त्रार्थ करना चाहिये। तर्क व विवेचना से जो सत्य हो उसे सभी मतों व आचार्यों को स्वीकार करना चाहिये। ईश्वर एक है और वेद वर्णित उसके गुण, कर्म व स्वभाव भी सत्य हैं। उनको मानकर ही लोग आस्तिक कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं अन्यथा वेद निन्दा व वेद को न मानने के कारण वे नास्तिकता की श्रेणी में ही आते हैं। 'नास्तिको वेदनिन्दकः' का यही अभिप्राय है। ■

(सातवीं किस्त)

छोटी अम्मा की बेटी

सुधीर मौर्य

मेरी बात के जवाब में पिताजी ने जैसे ही धीमी आवाज में 'हाँ' कहा, मैं उनके हाथ से अपना हाथ छुड़ाकर खड़ा होते हुए बोला- 'जबकि आप ये जानते हैं कि अनर्थ है फिर भी ऐसा करने को आप कैसे कह सकते हैं?' मैं वापस पिताजी के पास चारपाई पर बैठ गया और इस बार उनका दायाँ हाथ मेरे दोनों हाथ के बीच में था। उनके हाथ को सहलाते हुए मैंने कहा- 'पिताजी, मैं और गुड़िया दोनों ही आपकी संतान हैं, यह आप जानते हैं। फिर भी आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? मैं जानता हूँ कि आप गुड़िया को लेकर बहुत परेशान हैं, पर परेशानी का हल यह नहीं है। हम दोनों मिलकर सोचेंगे और जल्दी ही गुड़िया को यहाँ ले आएंगे।'

'तपस्वी!' पिताजी अपना हाथ मेरे हाथ से अलग करके मेरे बाल सहला के बोले- 'मैं यही चाहता हूँ कि गुड़िया को तुम यहाँ ले आओ, उससे शादी करके।'

'एक ही पिताजी की संतानें आपस में विवाह करें इससे बढ़कर और क्या पाप होगा, ये तो आप जानते ही होंगे पिताजी।' कहकर मैं उठकर कमरे की खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। पिताजी भी मेरे पास आकर खड़े हो गए मैने बिना उनकी और देखे कहा- 'पिताजी! मेरे लिए ये असंभव है। आपका बेटा शर्मिंदा है कि उसके पिता ने उससे ऐसी कोई बात कही।'

'तपस्वी मैं जानता हूँ कि ये पाप है, पर तुम क्या ये विश्वास करोगे कि तुमसे ये पाप करने के लिए मैं कह सकता हूँ?'

'पर आप कह रहे हैं पिताजी!' उनकी बात सुनकर मैंने उनके चेहरे एक उड़ती नजर डालकर कहा।

'जानते हो तपस्वी! जब पूरा गाँव तुम्हारी माँ को चिता में जिंदा जला देने चाहता था तो उन्होंने क्यों अपने को जिंदा रखने के लिए अपनी सारी ताकत झोंक दी थी जबकि उनके सामने उनके प्रेमी का शव पड़ा था? उस प्रेमी का शव जिसके साथ उन्होंने जीने मरने की कसमें खाई थीं। और जब उनका वह प्रेमी मौत के आगोश में चला गया, तो वह मरने की जगह खुद को जिंदा रखने की पुरजोर जद्दोजहद कर रही थी।'

पिताजी की बात मेरी समझ के बाहर थी। मेरी सवालिया निगाहें उनके चेहरे पर टिककर रह गई थीं। पिताजी ने आगे बढ़कर मेरे कंधे अपने मजबूत हाथों से थामे और मेरी आँखों में अपनी लाल बड़ी रोबीली आँखें डालकर बोले- 'क्योंकि उस वक्त उस वीरांगना की कोख में तुम साँसें ले रहे थे। तुम्हें जिंदा रखने के लिए वह घोर दुःख में भी जिंदा रहना चाहती थी।'

'मतलब...।' आगे के शब्द मेरे हलक में फंस गए।

'हालाँकि मैं अपने भाइयों की तरह जमींदारी प्रवृति का नहीं था फिर भी वह अपने प्रेमी के कातिल के भाई यानि मेरे साथ रहने को तैयार हो गई इसलिए क्योंकि वह तुम्हारी परवरिश करना चाहती थी।'

'तो क्या...?' मेरे शब्द हलक में फंस गए थे।

'हाँ तुम उसी शाक्य युवक सीवली की संतान हो जिससे तुम्हारी माँ प्रेम करती थी। पवित्र प्रेम, इतना पवित्र कि मुझसे विवाह करके मेरे पास रहकर भी हमने एक-दूसरे को कभी छुआ नहीं। तुम्हारा जन्मदाता पिता तुम्हारी माँ का प्रेमी था, मैं तो सिर्फ तुम्हारा पालनहार पिता हूँ।'

पिताजी की बात सुनकर न जाने कितने लम्हे मैं शंकित होकर उन्हें देखता रहा और फिर आगे बढ़कर उनके शरीर से लिपटते हुए बोला- 'मेरी माँ को ससम्मान जीवन देने वाले व्यक्ति से मेरी प्रार्थना है कि वह मुझसे उन्हें पिताजी कहने का हक न छीने, अन्यथा मेरा जीवन दुश्वार हो जायेगा।'

'और तुम्हारा ये पिता तुम्हारी देवी सी माँ को अपने ही घर वालों से बचा पाने में नाकाम रहा, उन्हें धीमा जहर देकर मार दिया गया।'

मेरी मां को जहर देकर मारा गया था यह जानकर मेरे मन में पूरे जमींदार घराने के लिए नफरत पैदा हो गई। पर मेरे सामने एक देवता समान विराट व्यक्तित्व खड़ा था। उस महान व्यक्तित्व ने मेरे मन में नफरत की जगह प्रेम के बीज बो दिए थे। मैं न जाने कितनी देर खामोश खड़ा रहा और फिर उनके पैर छूकर ज्यों ही जाने को हुआ, उन्होंने पूछा- 'कहाँ जा रहे हो?'

'गुड़िया को सम्मान देने, पूरे सम्मान के साथ छोटी अम्मा के साथ उसे इस हवेली में लाने के लिए।'

'पर बिना किसी हक के न तो गुड़िया यहाँ आएगी और न उसकी छोटी अम्मा। और तुम तो जानते हो तपस्वी, गुड़िया को इस हवेली की बेटी का हक अगर मैं दे भी दूँ, तो हवेली और समाज उसे ठुकरा देगा।'

'पिताजी आप भी किस समाज की बात लेकर बैठे हैं। खैर कोई बात नहीं, गुड़िया को अपनी पत्नी की हैसियत से यहाँ लेकर आऊंगा।'

मेरी बात सुनकर पिताजी के होठों पे सुकून का हास्य उभर आया और मैं वहां खूटी पे टंगी पिताजी की जीप की चाभी लेकर निकल गया।

पिताजी की जीप आज मेरी सबसे बड़ी जरूरत थी। मैं हवा की मानिंद उड़कर सँजोत के पास पहुँच जाना चाहता था। गाँव आने के लिए शहर में बस अड्डे पे जब मैं बस पकड़ने आया था, तो वहां मेरे एक दोस्त ने जिसके साथ मैं छोटी अम्मा वाले कोठे पे गया था, उसने बताया था कि आज कोठे पे बड़ी सजावट का काम चल रहा है, शायद किसी नई लड़की का पहला मुजरा होगा। उस वक्त बेजारी के आलम में मैं कुछ भी सोचने की हालत में नहीं था। पर अब मेरे मन में ये आशंका दस्तक दे रही थी कि कहीं वह मुजरा सँजोत का तो नहीं। दिल में यह ख्याल आते ही मेरे पाँव का दबाव एक्सिलरेटर पर बढ़ गया था।

सच में पूरा कोठा दूध सी रौशनी में जगमगा रहा था। तमाम लोग लक-दक कपड़ों में कोठे की सीढ़ियां चढ़ रहे थे। जीप एक किनारे रोककर 'कहीं मुझे देर तो नहीं हो गई' सोचते हुए मैं जीप से कूदकर कोठे की और लपका। पलक झपकते तमाम सीढियाँ चढ़कर मैं सीधे तीसरी मंजिल पर पहुँच गया। यहाँ की सजावट बाकी कोठे की सजावट से कहीं अधिक थी। 'सँजोत कहाँ है?' मैने एक साजिंदे से हांफते हुए पूछा। 'उस तरफ!' उसने एक कमरे की ओर इशारा किया और फिर मुझे रोकते हुए बोला- 'लेकिन तुम वहां नहीं जा सकते।'

आज तो मुझे संसार की कोई शक्ति नहीं रोक सकती थी। मेरी एक तिरछी नजर ने ही उसे सहमने पे विवश कर दिया। अगले ही पल मैं उस कमरे में था जहाँ एक आईने के सामने सजी-धजी सँजोत खड़ी थी। वहीं थोड़ी दूर पर एक सोफे में सर झुकाये छोटी अम्मा बैठी हुई थी।

आईने में अपने पीछे मेरे होने के एहसास ने एक बार उसके शरीर को कंपा दिया। पर वह तुरंत ही सम्भलकर बोली- 'मम्मी! इनसे कहो मुजरा यहाँ कमरे में नहीं बाहर हाल में है।'

सँजोत की बात सुनके छोटी अम्मा ने सर उठाया तो कमरे में एक अजनबी युवक को देखकर चौंक पड़ी।

'और छोटी अम्मा! इन्हें भी बता दो कि कमरे में कोई अपना ही आ सकता है।'

मेरे मुँह से 'छोटी अम्मा' सम्बोधन सुनके सँजोत और छोटी अम्मा दोनों ने आश्चर्य से मुझे देखा था।

'मम्मी इनसे कहो कि मुजरा करने वाली लड़की के लिए न कोई अपना होता है और न कोई पराया।' फिर वह दो कदम चलकर मेरे पास आकर बोली, 'और अम्मी इनसे ये भी पूछिए कि एक तवायफ की बेटी से नफरत करने वाला आज उसी बेटी की मम्मी को किस हक से छोटी अम्मा कह रहा है?'

'छोटी अम्मा? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा क्या तुम दोनों एक दूसरे को जानते हो?' छोटी अम्मा ने पहले मुझे घूरा और फिर सँजोत की ओर देखते हुए पूछा- 'गुड़िया क्या तुम इस लड़के को जानती हो?'

छोटी अम्मा के सवाल पे सँजोत तुरंत कोई जवाब न दे सकी, तो मैंने आगे बढ़कर छोटी अम्मा से कहा 'हाँ छोटी अम्मा! मैं सँजोत को जानता हूँ, हम दोनों एक दूसरे को जानते हैं और सच कहो तो मैं तो आपको भी जानता हूँ छोटी अम्मा!'

'मुझे भी जानते हो?' फिर छोटी अम्मा ने सँजोत का हाथ पकड़कर पूछा- 'मुझे बता गुड़िया, ये लड़का कौन है? अगर तुम इसे जानती हो तो किस तौर जानती हो?' छोटी अम्मा के सवाल पर इस बार सँजोत टूट गई। वहीं जमीन पर घुटनों के बल बैठकर उसकी रुलाई उसके हलक से फूट पड़ी।

(अगले अंक में जारी)

डॉ सुलक्षणा बेस्ट टीचर और काव्य श्री सम्मान से सम्मानित

नूंह। नरेंद्र मोदी विचार मंच की प्रदेश अध्यक्ष, शिक्षाविद एवं कवयित्री डॉ सुलक्षणा को राह ग्रुप द्वारा बीआरसीएम विद्याग्राम, बहल में आयोजित समारोह में बेस्ट टीचर अवार्ड से सम्मानित किया गया। उनके द्वारा मेवात में शिक्षा के क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यों एवं शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम के लिए उन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ।

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी द्वारा आर्य समाज, घँटाघर चौक सभागार, भिवानी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ सुलक्षणा को हरियाणवी काव्य साधना के लिए गिना प्रकाशन, भिवानी की ओर से श्रीमती गिना देवी काव्य श्री सम्मान से नवाजा गया। ■

राजेश पुरोहित सम्मानित

इंदौर। यहाँ मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में झालावाड़ जिले के कवि,साहित्यकार राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित' को 'हिंदी भाषा सारथी सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान हिंदी भाषा के प्रचार में योगदान हेतु प्रदान किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि डॉ वेद प्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार नई दिल्ली, सत्य नारायण सत्तन, राष्ट्रीय कवि आचार्य नवीन संकल्प, पतंजलि योग प्रचारक प्रवीण कुमार, अध्यक्ष स्टेट प्रेस क्लब मध्य प्रदेश प्रभु जोशी, ख्यातिनाम कहानीकार, चित्रकार, डॉ प्रीति सुराणा, अर्पण जैन, अजय जैन के कर कमलों से प्रदान किया गया। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

भिवानी। आर्यसमाज मंदिर, भिवानी में बाल कल्याण समिति हरियाणा सरकार एवं गुगनराम एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा संयुक्त रूप से 'महिला उत्कर्ष एवं बाल विकास- दशा एवं दिशा' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. राधेमोहन राय, अलवर व श्रीमती राजबाला श्योराण एडवोकेट ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डधारी अणुव्रत सेवी प्रो. ललिता वी. जोगड़ (दुबई)। मुख्यवक्ता डॉ अंजु बाला (दिल्ली) रहीं।

संगोष्ठी में देश-विदेश से आए १०० से अधिक शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया और इसी कार्यक्रम में सभी साहित्यकारों, पत्रकारों, शोधार्थीयों को अलग-अलग सम्मान उपाधियां व स्मृति सम्मान प्रदान किये गये। इसी कार्यक्रम की कड़ी में मुकेश कुमार ऋषि वर्मा (युवा साहित्यकार एवं क्षेत्रीय फिल्मकलाकार) को श्रीमती रज्जी देवी नन्दाराम सिहाग साहित्य गौरव सम्मान प्रदान किया गया। इनके अलावा डॉ अशोक मंगलेश, डॉ दिग्विजय शर्मा (आगरा), यशपाल निर्मल व केवल कुमार केवल (जम्मू), डॉ. कविता रायजादा, डॉ अंजु बाला दिल्ली को साहित्य शिरोमणि, सुमन भाटी व डॉ नीलम को राजभाषा गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। साथ ही इसी कार्यक्रम के अंत में पाँच पुस्तकों व पत्रिकाओं का विमोचन भी सम्पन्न हुआ। डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट (कार्यक्रम संयोजक) ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम पूर्णतः सफल रहा। ■

लाल बिहारी लाल सम्मानित

नई दिल्ली। भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति पर काम करने वाली संस्था सर्वभाषा ट्रस्ट द्वारा सर्व भाषा साहित्य उत्सव में लाल कला मंच के सचिव पर्यावरण प्रेमी एवं दिल्ली रत्न लाल बिहारी लाल को साहित्य के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने के लिए 'सर्वभाषा सम्मान' से संस्था के सचिव केशव मोहन पांडे एवं अध्यक्ष डा. अशोक लव ने सम्मानित किया। इस उत्सव में संस्था की एक ई-पत्रिका तथा ६ अन्य पुस्तकें लोकार्पित की गईं। भाषा पर एक विचार गोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों एवं भाषाओं के अनेक कवियों ने भाग लिया। ■

दो काव्य संग्रहों का लोकार्पण

नई दिल्ली। हिन्दी भवन में अनुराधा प्रकाशन के आयोजन में डा. रामप्रकाश शर्मा, श्रीमती सीमा गुप्ता, श्री नरपाल यादव, श्रीमती कविता मल्होत्रा, श्रेया आनन्द, कंचन गुप्ता, मनमोहन शर्मा 'शरण', जसवन्त सिंह तंवर द्वारा अनेक साहित्यकारों व समाजसेवियों की उपस्थिति में दो काव्य संग्रहों 'अधूरे अहसास' एवं 'काव्य कामिनी' का भव्य लोकार्पण हुआ।

अनुराधा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मनदर्पण' को जम्मू में आयोजित भव्य समारोह में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री निर्मल सिंह ने लोकार्पित किया था। किन्तु इस दिन अनुराधा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अनेक पुस्तकों- 'पीहू पुकार','जीवन पथ', 'हिन्दी के आधुनिक पौराणिक प्रबन्ध काव्यों में पात्रों का चरित्र चित्रण' के साथ 'उत्कर्ष मेल न्यूज पार्टल' का भी लोकार्पण हुआ।

मंच संचालक जसवन्त सिंह तंवर ने उपस्थित कवियों व समाजसेवियों का मनमोहन शर्मा के हाथों अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मान कराया। डा सरला सिंह, शुभदा वाजपेयी, प्रदीप अग्रवाल 'प्रदीप्त', रवीन्द्र जुगरान, लाल बिहारी लाल, श्री आनन्द, श्रीमती रीता सिन्हा, एस एन गुप्ता, अर्पिता रंजन आदि प्रमुख थे। ■

जय विजय मासिक

कार्यालय- ए-१०७, इलाहाबाद बैंक अधिकारी आवास, हजरतगंज चौराहा, लखनऊ-२२६००१ (उप्र)

मोबाइल-9919997596; ई-मेल-jayvijaymail@gmail.com; वेबसाइट-www.jayvijay.co

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।